Д21
Б46
Проверено 1961 г.
Юр
Цров. 48
№ 695
ИМПЕР. ПЕТРОГР. УНИВЕР.
КАБ. ГОСУД. НАУКЪ.
858

В. Н. Бенешевичъ.

ПРИЛОЖЕНІЯ

1-ый Ленинградский
Юридический институт
БИБЛИОТЕКА

КЪ ИЗСЛѢДОВАНІЮ:

Каноническій сборникъ XIV титуловъ со второй четверти VII в. до 883 г.

ЛЕНИНГР. ИНСТИТУТ
БИБЛИОТЕКА
СОВЕТ...

55958

С.-ПЕТЕРБУРГЪ.
Типографія В. Киршбаума, Дворц. площ., д. М-ва Финансовъ.
1905.

ПРОВЕРЕНО
2000 г.

МАЙ 2008

По опредѣленію Юридическаго факультета Императорскаго С.-Петербургскаго Университета печатать разрѣшается.
6-го октября 1905 г.

Деканъ *Л. Петражицкій.*

ОГЛАВЛЕНІЕ.

		стран.
I.	Схоліи къ правиламъ	3—80
II.	Ὅρος κανονικός	81—84
III.	Αἱ ῥωμαῖαι λέξεις αἱ κείμεναι εἰς τὸ νομοκάνονον	85—86
IV.	Имена отцовъ II всел. собора	87—89
V.	Ἐκ τῆς διαλέξεως τοῦ ἁγίου ἀποστόλου Ἰακώβου	90
VI.	Τάξις ὀνομάτων τῶν ὁσίων μητροπολιτῶν	91—92
VII.	Синоптическая таблица дополненій въ ссылкахъ XIV титуловъ на правила	93—101

С.-Петербургский государственный университет
Отдел по направлению юриспруденция
НБ им. М.Горького

Ἀθανασίῳ Παπαδοπούλῳ-Κεραμεῖ

φιλίας ἕνεκεν

ἀφιεροῖ ὁ πονήσας.

I.

Схоліи къ правиламъ.

Большинство издаваемыхъ здѣсь схолій уже извѣстны въ печати, благодаря трудамъ Беверегія (въ annotationes къ правиламъ: Συνοδικόν т. II), Вольфа (Anecdota sacra et profana), P. de Lagarde (Reliquiae... graece), Питра, Гергенрӧтера (Photius, III), Красножена (Толкователи канон. кодекса восточной церкви.... Москва. 1894) и друг.; но чтобы стать предметомъ научнаго изслѣдованія, этой rudis indigestaque moles недостаетъ многаго: текстъ схолій брался изъ рукописей безъ всякой системы, съ выборомъ подъ вліяніемъ разныхъ соображеній. и притомъ цѣнность его съ точки зрѣнія филологической критики очень не высока, разъ приходится убѣждаться, что издатели всегда проявляли достаточно невниманія и неумѣнья въ чтеніи рукописей и даже часто не понимали совсѣмъ текста, или же что они пользовались такими рукописями, которыя сами не гарантировали исправность текста. Такое положеніе дѣла грозило очень чувствительнымъ образомъ усложнить задачи и методы моего изслѣдованія, а между тѣмъ собранный мною матеріалъ не давалъ еще возможности приступить къ рѣшенію новыхъ вопросовъ во всеоружіи средствъ; поэтому я предпочелъ въ изслѣдованіи совершенно не касаться схолій къ правиламъ, но дать ихъ цѣликомъ въ приложеніяхъ въ такомъ видѣ, чтобы мое изданіе могло послужить прочной основой для научной обработки ихъ.

Слѣдующія рукописи взяты мною для изданія текста схолій:

Ath. = Atheniens. 1370 X вѣка,

L = Laurent. X 1 XIII вѣка,

L_1 = Laurent. X 10 XI вѣка,

P = Petropol. 66 X вѣка,

$Patm_1$ = Patm. 172 IX вѣка,

$Patm_2$ = Patm. 173 X вѣка,

V = Vallicell. F 10 X вѣка (первой половины),

V_1 = Vatic. 1980 + Vatic. 1981 X вѣка,

Ven. = Venet. 169 XII — XIII вѣка.

Изъ каждой взяты *всѣ рѣшительно* схоліи, за исключеніемъ лишь тѣхъ, которыя уже приведены въ самомъ изслѣдованіи при обзорѣ измѣненій въ текстѣ правилъ отдѣльныхъ редакцій; кромѣ того, опущены знаки Σημείωσαι (обыкновенно сопровождаетъ схоліи и подразумѣвается при нихъ), а также ἀναγκαῖον и ὡραῖον (смотр. изслѣдов., стр. 145[2]); но иногда для большей ясности схолій Σημείωσαι удержано.

Въ объясненіе внѣшняго вида изданія замѣчу, что

1) римская цыфра обозначаетъ правило по обычн. счету, а если къ одному правилу нѣсколько схолій, то римская цыфра ставится только при первой;

2) жирная арабская цыфра — номеръ схоліи по порядку, причемъ разныя редакціи одной и той же схоліи и схоліи, обнаруживающія общность происхожденія, ставятся подъ однимъ номеромъ только съ малыми латинскими буквами сверху;

3) римской буквой передъ текстомъ схоліи обозначается основная р-сь, послѣ текста — остальныя;

4) если возможно указать точнѣе отдѣльное мѣсто, къ которому схолія относится, то оно ставится курсивомъ въ скобкахъ послѣ сигнатуры основной р-си передъ самымъ текстомъ, а если къ одному и тому же мѣсту правила есть нѣсколько схолій, то это мѣсто ставится курсивомъ въ скобкахъ сейчасъ же послѣ римской цыфры, всегда передъ жирной арабской, и къ нему относятся всѣ слѣдующія далѣе схоліи, пока не встрѣтится или другое правило или указаніе на другое мѣсто того же правила;

5) если мнѣ самому не удалось списать весь текстъ схоліи, то или указывается посторонній источникъ его, или онъ берется изъ другой р-си, или, наконецъ, просто дѣлается ссылка на существующее уже изданіе; если же не удалось отмѣтить варіанты, то при соотвѣтствующей римской буквѣ за текстомъ ставится справа звѣздочка;

6) мои собственныя вставки поставлены въ скобкахъ ⟨ ⟩.

Заботясь объ исправности текста, я ни одной р-си не прочелъ менѣе двухъ разъ, а особенно трудную V пришлось даже восемь разъ свѣрять. Нѣкоторую помощь оказали и существующія уже

изданія текста отдѣльныхъ схолій; вводить же эти изданія и въ критическій аппаратъ не представлялось ни безопаснымъ въ виду указанныхъ въ началѣ особенностей ихъ, ни необходимымъ въ виду скромной цѣли моего собственнаго изданія.

Глубокоуважаемый А. И. Пападопуло-Керамевсъ очень внимательно просмотрѣлъ корректуру всѣхъ листовъ и провѣрилъ сомнительныя мѣста по P и V; но, конечно, единственнымъ отвѣтственнымъ лицомъ за всѣ вообще неисправности работы остаюсь я самъ.

Къ Ἐκ τῶν διατάξεων.

III. **1.** V Ὅμοιον τῷ προκειμένῳ, διόπερ οὐδὲ ἐκεῖνο ὡς οὐδὲ τοῦτο ἐγκριτέον.

XII. **2.** V (къ *ἀρχόντων καὶ βασιλέων κρείττους εἰσὶν οἱ ἱερεῖς).* Οἱ τῷ ὄντι ἱερεῖς, ἀλλ' οὐχ ἡμεῖς οἱ μέχρι ψιλῆς προσηγορίας.

XXIII. **3.** V (къ *χειροθετεῖν)* Ὑπουργεῖν τῇ χειροτονίᾳ τῶν πρεσβυτέρων καὶ διακόνων, ἢ τὸ τοὺς πιστοὺς σφραγίζειν βαπτίζειν τε καὶ ἁγιάζειν.

Къ Апостольскимъ правиламъ.

I. **4.** L Ζήτει τῶν ἐν Νικαίᾳ κανόνα δ', τῶν ἐν Ἀντιοχείᾳ κανόνα ιθ', τῶν ἐν Λαοδικείᾳ ιβ', τῶν ἐν Καρθαγένῃ μθ'.

III. **5.** V (къ *χιδρῶν)* Χῖδρα [1] πάντα τὰ νεαρὰ ὄσπρια καὶ τῶν σιτανίων καρπῶν διαφέροντα· ὑπὸ τοὺς σιτανίους δὲ τελοῦσι καρποὺς κριθαί τε καὶ ζειαί. διάφορος δὲ καὶ ἡ ζειά· ζειὰ γὰρ καὶ τὸ γυμνόκριθον [2] ὀνομαζόμενον καὶ ἡ σίκαλις οὐ πολλοῖς ἐκφωνουμένη. ὑπὸ τοὺς σιτανίους καὶ ἡ ὄλυρα, ἣν καὶ βρόμον φασί, καὶ ἡ ὄρυζα καὶ ὁ ἔλυμος. L.

V. **6.** V Μὴ ἐκβάλλειν μὲν ἐπετράπη, χρῆσθαι δὲ ἐπισκόποις μὲν οὐδ' ὅλως μεθεῖται, πρεσβυτέροις δὲ καὶ διακόνοις συγκεχώρηται μέν, οὐ μήν γε κατὰ ἀφειμένον καὶ ἀδεές. L.

XII. **7ª.** V Συστατικὰ γράμματα, ἅ φασιν ἀπολυτίκια, συνιστῶντα αὐτῷ ἀπρόσκοπον τὴν ἱερωσύνην· τί δὲ συστατικὰ εἰρηνικῶν διαφέρει, εἰρήσεται [3] ὅτε καιρός. L.

7ᵇ. Ven. Συστατικὰ γράμματα εἰσί, ἃ καὶ ἀπολυτικὰ λέγεται, τὰ συνιστῶντα αὐτὴν τὴν ἱερωσύνην ἀπρόσκοπον.

[1] χιδρὰ VL. [2] γυμνωθὲν κριθόν. L. [3] εἴρηται L.

XVII. **8.** Ven. Ζήτει τῆς ἐν Νεοκαισαρείᾳ συνόδου κανόνα ζ', τῆς ἐν Λαοδικείᾳ κανόνα α', τῆς ς' κανόνα γ', τοῦ μεγάλου Βασιλείου κανόνα δ' καὶ ιη' καὶ νγ'.

XX. **9.** V Διττὸν τὸ τῆς ἐγγύης πρᾶγμα· λέγεται γὰρ ἐγγύη καὶ [1] τὸ ἀπό τινός τινα οἰκειώσασθαι [2] καὶ ἀναλαβεῖν [3] τοῦ μὴ ἀποδρᾶναι [4] χάριν, εἰς ὃ [5] πάλιν ἀποδοθῇ τῷ παραθεμένῳ ὑπὸ τοῦ ἀναλαβομένου· [6] ὃ γίνεται ἐπὰν ὕποπτον ᾖ τὸ ἐκδιδόμενον πρόσωπον καθ' οὗ ἡ ἐγγύη. λέγεται καὶ ἄλλως πάλιν ἐγγύη τὸ πρὸς συνθήκην τινὰ καὶ ὁμολογίαν κατακλείειν [7], ὡς εἰ τόδε [8] ἀπαντήσοι τόδε τι πάσχειν, ὥσπερ εἴ τις διατείνοιτο, εἰ ὕσει εἰς αὔριον τοῦδέ τινος [9] ἀξιοῦσθαι. τὴν μὲν οὖν πρώτην ἐγγύην οὐ μόνον οὐκ ἀπόβλητον ἀλλὰ καὶ ἐπαινετὴν ἴσμεν καὶ τοῖς σπουδαιοτάτοις [10] τῶν πατέρων ἐν λόγῳ· τί γὰρ [11] σπουδαιότερον τοῦ τὴν ψυχὴν ὑπὲρ τῶν ὁμογενῶν καὶ φυλετῶν θεῖναι; τὴν δὲ ἑτέραν [12] τῶν σφαλερῶν ἄγαν καὶ ἀποβλήτων καὶ πρὸς οὐδὲν ἕτερον ἢ πρὸς ἀποκλήρωσιν καὶ τύχην καὶ (τὸ τούτων αἴσχιστον) μαντείαν ἀποκλίνουσαν, ὃ καὶ βλαβερώτατον πάντῃ [13] καθέστηκεν. τί γὰρ εἰ πονηρῷ δαίμονι συνεργούμενον τὸ ἐγγυηθὲν οὕτως ἐπισυμβαίη βλάβης ἕνεκεν τῶν ἐγγυωμένων; τοῦτο [14] ἀπαγορεύει ἡ παροῦσα ἱερὰ διάταξις ὡς σφαλερὸν καὶ μᾶλλον ἐθνικῇ κληδόνι ἀνῆκον, οὐχὶ χριστιανικῇ [15] εὐσεβείᾳ. δείκνυσι τὸ τοῦ ἔργου θεομισὲς ὁ κριτὴς Ἰεφθάε καὶ τὸ κατ' αὐτὸν ἐπὶ τῇ φιλτάτῃ πάθος, ὅπερ εἰ καὶ μή τινος πρὸς ἐγγύην βιαζομένου [16], ἀλλ' οὖν τὸ [17] πρὸς τὴν αὐτοῦ γνώμην κατεγγυηθὲν ἐπὶ τοῦτο προύβη κακοῦ, ὡς καὶ τοῖς ἄλλοις φυλάξασθαι τοῖς μετέπειτα πολὺν λόγον παρασχεῖν. L Ven.

10. Ven. Ἐν τῇ δ' πράξει [18] τῶν ἐν Χαλκηδόνι [19] πραχθέντων καὶ ἡ ἁγία σύνοδος καὶ οἱ συνεδρεύοντες αὐτοῖς [20] ἐνδοξότατοι ἄρχοντες διελάλησαν τοὺς Αἰγυπτίους ἐπισκόπους ἐγγύας προσεδρίας παρασχεῖν, ἢ τούτων ἀποροῦντας [21] ἐξωμοσίᾳ [22] καταπιστευθῆναι. ὅσα μέντοι [23]

[1] καὶ пропп, Ven. [2] οἰκειώσας L. [3] ἀναλαβὼν L. [4] ἀποδρᾶν L; ἀποδράσαι Ven. [5] ἵνα Ven. (вм. εἰς ὅ). [6] ἀναλαμβανομένου L. [7] in m. τοῦ προφήτου Ναούμ Ven. [8] τόδε τι Ven. [9] τόδε τίνος L. [10] παλαιοτάτοις Ven. [11] γὰρ καὶ Ven. [12] δευτέραν Ven. [13] πάντων L. [14] τοῦτο οὖν Ven. [15] χριστιανῶν L Ven. [16] ἐκβιαζομένου Ven. [17] τὸ проп. Ven. [18] Ὁ ἐν τῇ διαπράξει L. [19] Καλχηδόνι Ath. [20] αὐτὴν Ath.; αὐτῇ L. [21] передъ ἀποροῦντας L выскобл. что-то. [22] ἐξωμοσίας P L. [23] τοῖς вставл. L.

πολιτικοῖς νόμοις [1] περὶ τούτου εἴρηται, εὑρήσεις [2] ἐν λδ′ κεφ. τοῦ θ′ τίτλου [3] τοῦ παρόντος βιβλίου. [4] P Ath. V_1 L.

XXII. **11.** V Ἀκρωτηριάσαι νῦν τὸ τὴν αἰδῶ ἀποτεμεῖν. L.

XXV. **12.** V Ὅτι ἀφορισμὸς [5] καὶ τὸ ἐν ἐπιτιμίοις γενέσθαι τοῖς ἐκβάλλουσι τῶν θείων περιβόλων καὶ πρὸς τὴν τῶν μετανοούντων καθιστῶσι χώραν. L Ven.

13. Ven. Ἰδοὺ ἐνταῦθα κωλύει κατ᾽ αὐτὸν [6] ἀφορίζεσθαί τινα καὶ καθαιρεῖσθαι. τὸ αὐτὸ λέγει καὶ ὁ ἅγιος Βασίλειος ἐν τῷ γ′ καὶ κ′ [7] καὶ λβ′ αὐτοῦ κανόνι. [8] Ath. V_1 L.

XXVII. **14.** Ven. Ζήτει τὸ κς′ κεφ. τοῦ θ′ τίτλου.

15. V Εἰς ἑαυτὸν [9] δηλονότι ἁμαρτάνοντας καὶ τὴν εἰς ἑαυτὸν ἐκδίκησιν φόβῳ τοῦ [10] μὴ καὶ ἑτέρους τὰ ὅμοια εἰς αὐτὸν πλημμελεῖν προδιορθούμενον· ὃ καὶ ὑπεναντίον τῷ νόμῳ τῷ κελεύοντι [11] παρέχειν καὶ τὴν λοιπὴν σιαγόνα τούτῳ, ὃς ἐξ αὐθαδείας ἡμῖν κατὰ κόρρης ἤνεγκεν ἀκατασχέτῳ θυμῷ [12] τὴν πληγήν· οὗτος [13] ἔνοχος τῷ νῦν [14] ἱερῷ νόμῳ, [15] ἀλλ᾽ οὐκ ἐκεῖνος, ὃς τὸν εἰς ἱερὰ παρανομοῦντα σώφρονι μάστιγι καλῶς γε ποιῶν σωφρονίζει, ἔχων τε τὸν κύριον αὐτὸν [16] σύμφωνον τῷ ἔργῳ, ὁπηνίκα τῷ ἐκ σχοινίου φραγελλίῳ [17] τοὺς ἱεροκαπήλους ἀπήλασεν τοῦ νομικοῦ ἱεροῦ, καὶ τὸν ἐπιστρέφεσθαι τοῖς φοβουμένοις τὸν κύριον καὶ φυλάσσουσιν [18] αὐτοῦ τὰ μαρτύρια προσευχόμενον [19]· καὶ δὴ καὶ αὐτοὺς τοὺς ἐκκλησιαστικοὺς νομοφύλακας, οὓς ἐκδίκους καλοῦσιν [20], ἄνωθεν ἐκ πατέρων ἐκδικεῖν τὰ τοιαῦτα τεταγμένους. L Ven.

XXIX. **16.** Ven. Ἰδοὺ ἐνταῦθα δύο ἐπιτίμια ἐπήγαγε τῆς καθαιρέσεως καὶ τῆς ἀκοινωνησίας. [21] P Ath.

17. V Ὅση κατὰ τῶν τοιούτων αὐστηρία· καίτοι γε ἀλλαχοῦ “οὐκ ἐκδικήσεις δὶς ἐπὶ τὸ αὐτό” ἐπέσκηψαν [22].

[1] νόμοις проп. L. [2] ἡ ῥῆσις L P. [3] τοῦ θ′ τίτλου проп. L. [4] τοῦ θ′... βιβλίου проп. V_1. [5] ἐστι вставл. Ven. [6] καὶ κατ᾽ αὐτῶν Ath.; κατὰ ταὐτὸν L. [7] λς′ V_1 (вм. γ′ καὶ κ′). [8] καὶ λβ′ αὐτοῦ κανών L (вм. ἐν τῷ γ′... κανόνι). [9] Ven. αὐτὸν. [10] Ven. ἁμαρτάνοντας, οὓς καὶ τύπτει διὰ τοῦ ἐντεῦθεν φόβου τὸ. [11] Ven. προδιορθούμενος ὑπεναντία ποιῶν τῷ κελεύοντι νόμῳ. [12] Ven. вставл. ληφθεὶς. [13] Ven. ὁ τοιοῦτος οὖν. [14] L ναῷ (вм. νῦν); Ven. проп. νῦν. [15] Ven. в. тавл. τούτῳ. [16] Ven. ἔχων αὐτόν τε τὸν κύριον. [17] Ven. φλαγελλίῳ. [18] Ven. γινώσκουσιν. [19] псаломъ CXVIII 79. [20] Ven. λέγουσιν. [21] ἀκοινωνίας Ath. [22] сравн. Апост. 25.

XXX. **18.** Ath. Ἰδοὺ [1] ἐνταῦθα δύο [2] ἐπιτίμια [3] ἐπήγαγεν, τὸν [4] ἀφορισμὸν καὶ καθαίρεσιν. [5] P V_1 L.

XXXI. **19.** V Ὡς ὅ γε κατεγνωκὼς ἀθῷος καὶ ἄξιος ἐπαίνου. L.

XXXIII. **20**ᵃ. Ven. Συστατικὴ ἐπιστολή ἐστιν ἡ κινηθεισῶν τινων κατηγοριῶν καὶ εἰς συκοφαντίαν ἀπελεγχθεισῶν τὸ ἀνεπίληπτον τοῦ ἐπιφερομένου προσμαρτυροῦσα. εἰρηνικὴ δέ ἐστιν ἡ ἄνευ σκανδάλου τινὸς τοῦ ἐπικομιζομένου ἐγχειριζομένη ὑπὸ τοῦ προέχοντος πρός τινας ἀποφέρεσθαι.

(**20**ᵇ. V къ Антіох. 7).

21. V Ὅτι οὐδὲ τοῖς αἱρετικοῖς τὰ ξενοδόχα [6] ἡ ἀποστολικὴ ἀποκλείει φιλανθρωπία σπλάγχνα.

XXXIV. **22.** P Ὅτι ἕκαστος ἐπίσκοπος τὰ ἐπιβάλλοντα ἑαυτῷ [7] ποιεῖ [8] ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ αὐτοῦ. Ath. V_1 L.

23. P (къ *ὁ πατὴρ*) ὁ θεὸς διὰ κυρίου ἐν ἁγίῳ πνεύματι. Ath.

XXXV. **24.** V_1 Καὶ τῶν ἐν Ἀντιοχείᾳ ιγ′ καὶ κβ′.

XXXVI. **25.** V Οἷοι οἱ κληρικοὶ διδακτικοὶ ὀφείλουσιν εἶναι. L.

XXXVII (къ *ὑπερβερεταίου δωδεκάτῃ*). **26.** V_1 Τοῦτο ἡρμήνευσεν ὁ κ′ κανὼν τῶν ἐν Ἀντιοχείᾳ οὑτωσί· "εἰδοῖς ὀκτωβρίαις, ἥτις ἐστὶ δεκάτη ὑπερβερεταίου". καὶ ὁ μα′ τὰ ὅμοια καὶ τῶν ἐν Ἀντιοχείᾳ ὁ κδ′ καὶ ὁ κε′. (изъ Pitra I 39).

27. V Τουτέστιν κατὰ Ῥωμαίους ὀκτωβρίῳ ἐννάτῃ.

XXXVIII. **28.** V Ἀργὸς οὗτος σήμερον ὁ ἱερὸς νόμος. L.

XLI. **29.** V Ἀναγκαῖαι χρεῖαι [9] διατροφαὶ καὶ ἐνδύματα, ὡς καὶ ὁ μακάριός φησι Παῦλος· "ἔχοντες διατροφὰς καὶ σκεπάσματα τούτοις ἀρκεσθησόμεθα" [10]. L Ven.

XLVII. **30.** Ven. "Ἄνωθεν" [11] ἀντὶ τοῦ ἐξ ἀρχῆς καὶ κατὰ τὸ ὁλόκληρον [12]· τοῦτο δὲ λέγει, ἐπειδή [13] τινες τῶν ἀπὸ [14] αἱρέσεων ἐπιστρεφόντων βαπτίζονται μὲν οὐχὶ τελείως, μυρίζονται δέ, ὡς [15] καὶ τοῦ θείου μυρισμοῦ μέρους ὄντος τοῦ [16] βαπτίσματος. μὴ βουλόμενος

[1] καὶ вставл. P. [2] καὶ V_1. [3] конца со слова ἐπήγαγεν въ L нѣтъ. [4] ἐπάγει καὶ P (вм. ἐπήγαγεν τὸν). [5] καὶ καθαίρεσιν проп. P; καὶ τὴν καθαίρεσιν καὶ τῆς κοινωνίας V_1 (вм. ἐπήγαγεν... καθαίρεσιν). [6] cod. ξεδόχα. [7] αὐτῷ Ath [8] ἕκαστον ἐπίσκοπον... ποιεῖν V_1. [9] Ἀναγκαίας χρείας Ven. [10] Ven. добавл. ἐν τῷ τέλει τῆς πρὸς Τιμόθεον α′ (= I Тимоѳ. VI 8). [11] Ἄνωθεν проп. VL. [12] καὶ κατὰ τὸ ὁλόκληρον проп. VL. [13] ἐπεὶ VL. [14] ἀπὸ проп. L. [15] οὖν вставл. VL. [16] τοῦ проп. VL.

οὖν ὁ κανὼν [1] ὑπὸ ἔγκλημα κεῖσθαι τὸν ἢ ὀρθῶς μὲν βαπτισθέντα, διά τινα δὲ περιπέτειαν τῷ θείῳ αὖθις ἁγιαζόμενον [2] μυρισμῷ, ἢ καὶ τὸ ἀτελὲς τῶν βεβαπτικότων βάπτισμα διὰ τούτου τελειούμενον, προστίθησι τὸ "ἄνωθεν". LV.

XLVIII. **31**. V Οὐ τὸν ἐκβαλόντα τὴν ἑαυτοῦ κωλύει τὴν ἀπολελυμένην ἀναλαβεῖν, ὥσπερ καὶ τὸν ἄλλην, ἀλλὰ πάντα τὸν ἀπολελυμένην εἰσοικιζόμενον κωλύει· ὁ γὰρ ἀπολελυμένην γαμήσας, ὁ κύριός φησι, μοιχᾶται.

L. **32**[a]. V "Μιᾶς μυήσεως" ἀντὶ τοῦ τρεῖς καταδύσεις ἐν ἑνὶ βαπτίσματι, ἐπιφημίζοντα ἑκάστῃ καταδύσει ἓν τῶν τῆς ἁγίας τριάδος προσώπων, πατρὸς υἱοῦ καὶ πνεύματος ἁγίου.

32[b]. Ven. Τρία βαπτίσματα ἀντὶ τοῦ τρεῖς καταδύσεις [3]. V1 P.

33[a]. Ven. Ἕως ὧδε κρατεῖ ἡ τοῦ θεοῦ ἐκκλησία.

33[b]. V_1 Ἕως ὧδε ἡ Ῥωμαίων κρατεῖ ἐκκλησία. P.

LI. **34**. V Καὶ ἐνταῦθα πολλὴ ἀποτομία.

LII. **35**. V Ἀληθὴς ἐπιστροφὴ ἡ τοῦ κακοῦ ἀπαλλοτρίωσις καὶ τοῦ πάθους ἀπαλλαγή, ὡς ὅ γε μὴ οὕτως οὔτε ἀπὸ ἁμαρτίας ἐπιστρέφει, οὔτε δεκτέος.

LIII. **36**. P *(къ κεκαυτηριασμένος)* Μὴ ἔχων ὑγιῆ τὴν συνείδησιν.

LV. **37**. V Ἐξ αὐθαδείας δηλονότι καὶ ἀλαζονείας, ἀλλ' οὐκ ἄξια ὕβρεως δράσαντα [4] Ven.

LVIII. **38**. V Παιδεύσει δὲ ἤτοι ῥάβδῳ ἢ ἀγάπῃ· ἡ γάρ τοι παιδεία διττή.

LIX. **39**. V Εἰ δὲ μὴ μόνον οὐκ ἐπιχορηγῇ, ἀλλὰ καὶ τὰ πρὸς τὸ ζῆν αὐτὸν ἐφόδια ἀποστερῇ, τί ἂν πάθοι;

LXV. **40**. V Πολλὴ κἀνταῦθα αὐστηρία.

LXVI. **41**. Ven. Εἰ δὲ μὴ φονεύσῃ κρούσας, τί, καὶ μάλιστα εἰ μηδὲ ἅπαξ ἀλλὰ πολλάκις κρούσει, τοῦ κζ' κανόνος τὸν καὶ ἁπλῶς τύπτοντα, κἂν μὴ πατάξῃ, καθαιροῦντος; ἔστιν οὖν εἰπεῖν, ὡς οὐκ ἐναντιοῦνται· ἄλλο γὰρ τὸ ἑκόντα καὶ σὺν αὐθαδείᾳ τύπτειν, καὶ ἄλλο τὸ μάχῃ συντυχόντα καὶ ἐκ περιστάσεως, ἢ καὶ ἀμυνόμενον, εἰς τὸ πολλάκις κροῦσαι συνενεχθῆναι.

[1] δὲ VL (вм. οὖν ὁ κανών). [2] ἀνακαινιζόμενον VL (вм. αὖθις ἁγιαζ.). [3] ἑκάστῃ καταδύσει ἑνὸς τῶν τῆς τριάδος προσώπων ἐπιφημιζομένου друг. рук. добавл. P. [4] πράξαντα Ven.

LXVIII. **42**[a]. Ven. Ὅτι παρὰ τῶν αἱρετικῶν χειροτονηθέντας ἀναχειροτονεῖ οὗτος ὁ κανών, τὴν χειροτονίαν αὐτῶν μὴ δεχόμενος.

42[b]. L Ὅτι τοὺς παρὰ τῶν αἱρετικῶν χειροτονηθέντας ἀναχειροτονεῖ ὁ κανών, οὐ μὴν καὶ πάντας ἀναβαπτίζει. ἀλλ' ὅτι οὓς καὶ μύρῳ χρίει, ζήτει τῆς ς' συνόδου κανόνα ϟε' καὶ τὸν ζ' τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει.

LXXX. **43**. Ven. Ὅρα, ποίους λαϊκοὺς ὁ ἀποστολικὸς οὗτος κανὼν οὐ βούλεται παραυτὰ χειροτονεῖσθαι· καὶ σκόπει, ὅτι ὁ μὲν β' τῶν ἐν Νικαίᾳ ἕπεται τούτῳ, ὁ δὲ ι' τῶν ἐν Σαρδικῇ μάχεται οὐ δι' ὅλου, ἀλλὰ μερικῶς, ὅτι μηδὲ πάντα κωλύει λαϊκόν. ἀλλ' ὡρισμένως πλούσιον καὶ σχολαστικοὺς ἀγοραίους.

LXXXI. **44**. L Ὁ ὀρθὸς λόγος... διαγράφουσι φύσιν. (= Hergenröther, Monumenta ad Photium, 11—12).

VXXXV. **45**. V Πρόῤῥησις ἐναργεστάτη· ἡ γάρ τοι παρόρασις τούτων καὶ τῆς μετὰ ἀλλήλων ἀνυποκρίτου συναφείας ἀπεστέρησεν καὶ τοῦ γνωρίσματος τοῦ χριστιανισμοῦ, τῆς ἀγάπης ἠλλοτρίωσεν καὶ πρὸς τὸν βέβηλον τρόπον ἀποδιωθήσατο.

Къ правиламъ Никейскаго (I всел.) *собора.*

II. **46**. V *(къ ψυχικόν τι ἁμάρτημα).* Οὐ τὸ πρὸ τοῦ ἁγίου φησὶ βαπτίσματος (λυτικὸν γὰρ τοῦτο πάντων τῶν πρώην), ἀλλ' εἰ τῷ πρὸ τοῦ ἁγίου βαπτίσματος πονηρῷ ἐπιτηδεύματι καὶ μετὰ ταῦτα ἐνέχοιτο πονηρᾷ συνηθείᾳ κρατούμενος· οἷον εἰ ὑβριστὴς φέρε, ἢ ἀλαζών, ἢ ὀξύθυμος, ἃ τοῖς ἀπὸ γενεᾶς χριστιανοῖς ἐπιγινόμενα μέμψιν φέρει καὶ μετρίαν ἐπιτίμησιν, οὐ μέντοι καὶ ἐκβολὴν τῆς ἱερᾶς ἀξίας. καὶ τούτου μάρτυς τοῦ λόγου καὶ Παῦλος ὁ ἱερός, ὃς καθιστᾶν ἐκέλευσεν ἱερεῖς μὴ πλήκτας, μὴ παροίνους, μὴ τέκνα ἀνυπότακτα κεκτημένους· διὰ τοῦτο καὶ οὐδὲ σωματικὸν εἶπεν ἁμάρτημα, ἀλλὰ ψυχικόν, ὡς τῶν σαρκικῶν ἐκπλυνομένων πάντῃ, τῶν δὲ ψυχικῶν μὴ ῥᾳδίως ἀπαλειφομένων διά τε τὸ λανθάνον καὶ τὴν ἐκ ῥαθυμίας πονηρὰν γνώμην.

47. Ven. Σκόπει [1] ὅπως τὸ "νεόφυτον" ἡ ἐν Νικαίᾳ σύνοδος ὀρθῶς νοεῖ [2] καὶ ἀκολούθως [3] τῷ τῶν ἀποστόλων π' κανόνι, καὶ

[1] Σημείωσαι L_1. [2] νοεῖ проп. L_1. [3] дальше слова до οὐχ ὡς стерлись въ L_1.

οὐχ ὡς ἡ Ῥωμαϊκὴ ἄνοια καὶ ἀμαθεία [1] κατὰ τὸν ι΄ τῆς ἐν Σαρδικῇ κανόνα. L_1.

IV. **48.** Ven. Ὅτι πάντως τρεῖς χειροτονοῦσιν.

49. Ven. Ὅτι τὸ κῦρος [2] ὁ μητροπολίτης ἔχει. L.

V. **50.** Ven. Τὸν ιβ΄ τῶν ἁγίων ἀποστόλων.

51. V Ὅτι οὐ δεῖ τὸν ὑφ' ἑτέρου δεσμούμενον ὑφ' ἑτέρου ἀπολύεσθαι· ὁ τρώσας γάρ, κατὰ τὴν θύραθεν παροιμίαν, καὶ ἰάσεται [3].

52. V Ἂν δὲ καὶ ὁ δικαίως ἐκβαλὼν ἐπίσκοπος ὑπερόριος καταστῇ τοῦ ἑαυτοῦ ἐπισκοπείου, ἆρα τῷ εἰς τοσοῦτον ἐπηρεάσαντι ὑπολείπεται συγγνώμη ἀμεταμελήτῳ μένοντι καὶ ἐχομένῳ τῆς πράξεως, δι' ἣν καὶ ἀπελήλαται τῆς τοῦ θεοῦ ἐκκλησίας, ὡς παραβάτης καὶ καταφρονητὴς τῶν ἱερῶν διατάξεων; οἱ δὲ παρ' οὐδὲν θέμενοι ταῦτα, ἀλλὰ καὶ δεξάμενοι καὶ τοῖς θείοις σκηνώμασιν ἀδιόρθωτον ἐνοικίσαντες, πόσων σκήπτρων ἄξιοι, πόσης τῆς μελλούσης τιμωρίας.

VI. **53.** Ven. Ὅτι οὐδεὶς χωρὶς γνώμης τοῦ μητροπολίτου γίνεται ἐπίσκοπος.

54. Ven. Πότε ἡ τῶν πολλῶν γνώμη κρατεῖ ἐπὶ χειροτονίᾳ.

55ᵃ. L Ἡ ρκγ΄ νεαρὰ λέγει περὶ τοῦ πατριάρχου Ἱεροσολύμων.

55ᵇ. Ven. Ἡ ρκγ΄ νεαρὰ πατριάρχην λέγει τὸν Ἱεροσολύμων [4]. V_1 Ath.

56. L_1 Ὅτι κοινὰ λέγει τὰ προνόμια τῶν ἀρχιερατικῶν τριῶν τέως θρόνων δεῖν εἶναι, ἀλλ' οὐκ ἐξαιρέτοις πρεσβείοις παρὰ τὸν Ἀλεξανδρείας καὶ Ἀντιοχείας φυσιοῦσθαι τὸν Ῥώμης.

VII. **57ᵃ.** Ven. Τινὲς ἐνταῦθα λέγουσιν μητρόπολιν [5] εἰρῆσθαι [6] Καισάρειαν· αὕτη [7] γὰρ χρηματίζει μητρόπολις πρώτη τῆς [8] Παλαιστίνης, ἧς ἔστι [9] καὶ ἡ ἁγία πόλις· καὶ ἡ νεαρὰ δὲ [10] διάταξις [11] ἡ περὶ τοῦ ἀνθυπάτου Παλαιστίνης τὴν Καισάρειαν λέγει μητρόπολιν τῆς [12] Παλαιστίνης. V_1 Ath.

57ᵇ. L Τινὲς ἐνταῦθα μητρόπολιν λέγουσιν [13] εἰρῆσθαι Καισάρειαν τὴν Φιλίππου· αὕτη γὰρ χρηματίζει μητρόπολις πρώτη Παλαιστίνης, ἧ ἐστιν

[1] дальше иной конецъ въ L_1: καὶ τίνας κωλύει μὴ θᾶ[τ]τον εἰς ἐπισκοπὴν ἀνιέναι. [2] ἅπαν вставл. L. [3] Corpus paroemiographor. graecor., II 763. [4] φησὶ τῶν Ἱεροσολύμων V_1; τὸν ἐν Ἱεροσολύμοις Ath. [5] μητρόπολιν λέγουσιν V_1 Ath. [6] αἱρεῖσθαι V_1. [7] αὐτὴ Ath. [8] τῆς проп. V_1; πρώτης Ath. [9] ἐστὶν ὡς V_1. [10] δὲ проп. Ath. [11] словами καὶ νεαρὰ διάταξις оканчив. V_1. [12] πρώτης Ath. [13] cod. λέγει.

καὶ ἡ τῆς Αἰλίας πόλις, τουτέστιν ἡ ἁγία τῶν Ἱεροσολύμων πόλις, ἧς λέγει τὸν ἐπίσκοπον τιμᾶσθαι ὡς πατριάρχην, τῇ μητροπόλει σωζομένου τοῦ οἰκείου ἀξιώματος, ὡς μηδὲν ἐντεῦθεν βλαπτομένης τὸ σύνολον· ὡς καὶ ἡ προγεγραμμένη διέξεισι νεαρά.

VIII. **58.** Ven. Ἐν τῇ ἀρχῇ σχεδὸν τῶν τῆς ἐν Νικαίᾳ β′ συνόδου πρακτικῶν ὁ κανὼν οὗτος ἀνεγνώσθη· καὶ ἐπεὶ ἐζητήθη, πῶς νοητέον τοὺς χειροθετουμένους, Ταράσιος ὁ ἁγιώτατος πατριάρχης εἶπεν, ὅτι ἐπ' εὐλογίας ἐνταῦθα ἡ χειροθεσία λέγεται καὶ οὐκ ἐπὶ χειροτονίας [1].

59. V_1 Ὅτι χειροθετοῦνται [2] οἱ λεγόμενοι Καθαροί. L_1.

60. V_1 Ὅτι ἀναγκάζονται οἱ Καθαροὶ καὶ διγάμοις κοινωνεῖν καὶ τοῖς ἐν τῷ διωγμῷ παραπεσοῦσιν [3].

61. V_1 Ὅτι οὐ δεῖ ἐν μιᾷ πόλει δύο ἐπισκόπους εἶναι.

62. V Ὅρα, ὅτι οὐ σαφῶς φησιν ἀναχειροτονεῖσθαι αὐτούς.

X. **63.** V (къ *οἱ προκρίνει*) Ἀντὶ τοῦ οὐ φέρει κατάκριμα.

XI. **64.** V (къ *οἱ πιστοί*) Οὐ γὰρ καὶ οἱ κατηχούμενοι οὕτως.

65. V Πάνυ κατάλληλον τῇ νῦν καταστάσει τῶν πραγμάτων.

XII. **66.** Ven. Ὡς [4] οὐκ ἔστιν ὑπερβῆναι βαθμὸν τὸν [5] ἐν μετανοίᾳ, ἐξ οὗ ἡ ποιότης τοῦ ἁμαρτήματος ἀρχὴν λαβοῦσα ἀφορίζεται τὴν μετάνοιαν τῷ ἡμαρτηκότι. V.

XIII. **67** [6]. V_1 Καὶ τοὺς πρὸς τῇ ἐξόδῳ γενομένους τοῦ βίου, εἰ δέοιντο καὶ ἱκετεύοιεν, ἀφέσεως τυχεῖν, πρὸ ὀφθαλμῶν ἔχοντες εἰς ἣν ἀπίασιν κρίσιν, λογιζόμενοι ἃ πείσονται δεσμῶται καὶ κατάδικοι παραδοθέντες, πιστεύοντες δὲ εἰ λυθεῖεν ἄνεσιν ἕξειν καὶ κουφισμὸν τῆς ἐκεῖ τιμωρίας (ἀληθῆ γὰρ εἶναι καὶ βεβαίαν τὴν εὐδοκίαν τοῦ κυρίου), καὶ τούτους ἐλευθέρους παραπέμπειν, τῆς φιλοπρεποῦς ἐστιν φιλανθρωπίας. εἰ μέντοι μετὰ τοῦτο ἐπιμένοιεν τῷ βίῳ, δεσμεύειν μὲν αὖθις καὶ ἐπαχθίζειν [7] ταῖς ἁμαρτίαις οὐκ ἀκόλουθόν μοι φαίνεται· τοὺς γὰρ ἅπαξ ἀφειμένους καὶ τῷ θεῷ συνστάντας καὶ πάλιν τῆς θείας χάριτος κοινωνοὺς ἀποφανθέντας καὶ ὡς ἐλευθέρους πρὸς τὸν κύριον ἀπεσταλμένους, μηδενὸς ἐν τῷ μεταξὺ ὑπ' αὐτῶν ἑτέρως γενομένου [8], πάλιν ἀνθυπάγειν τοῖς ἁμαρτήμασιν ἀλογώτατον. εἶτα τῷ μὲν θεῷ τῆς ἡμε-

[1] Ник. II собора дѣяніе I (Coll. Reg. XIX 76, 77). [2] χειροτονοῦνται L_1. [3] cod. τοὺς.. παραπεσόντας. [4] Σημειωτέον ὡς V. [5] βαθμὸν ὑπερβῆναι τῶν V. [6] сравн. изслѣдованія стр. 290. [7] cod. ἐπαχθίζει. [8] cod. γενομένους.

τέρας κρίσεως ὅρους δώσομεν φυλαχθησομένους ὑπ᾽ αὐτοῦ, ἑαυτοῖς δὲ τούτους οὐ τηρήσομεν, κατεπαγγελλόμενοι μὲν τὴν χρηστότητα τοῦ κυρίου, ἀφαιρούμενοι δὲ τὴν ἑαυτῶν. εἰ μέντοι φαίνοιτό τις μετὰ τὸ ῥαῖσαι πλείονος ἐπιστροφῆς δεόμενος, ἑκοντὶ συμβουλεύομεν ταπεινοῦν καὶ κακοῦν (καὶ) συστέλλειν ἑαυτόν, εἴς τε τὸ ἑαυτῷ συμφέρον ἀφορῶντα καὶ τὸ πρὸς τοὺς λοιποὺς εὐπρεπὲς καὶ πρὸς τοὺς ἔξωθεν τὸ ἀνεπίληπτον· καὶ πειθόμενος μὲν ὀνήσεται, εἰ δὲ ἀπειθοίη καὶ ἀντιλέγοι, τότε δὴ τούτῳ ἔγκλημα ἔσται πρὸς ἀφορισμὸν δεύτερον.

68. V_1 (къ *μετὰ δοκιμασίας*) Δοκιμασίαν [1] λέγει τὴν δεδομένην τοῖς ἱερεῦσι τοῦ δεσμεῖν καὶ λύειν [2] ἐξουσίαν. Ven.

69. Ven. (къ концу) Ἄχρις ἂν πληρωθῇ ὁ ὁρισθεὶς ὑπὸ τῆς μεγάλης συνόδου χρόνος.

XIV. **70.** V Οὐδὲ τοὺς κατηχουμένους ἁμαρτάνοντας ἀνεπιτιμήτους ἐᾶν ἐδοκίμασαν, καίτοι τοῦ ἁγίου βαπτίσματος ἱκανοῦ πάντα ῥύπον ψυχικὸν ἀποπλῦναι· ἀλλ᾽ ὅμως ἐπεὶ τοῖς χριστιανοῖς ἐνηριθμήθησαν καὶ πρὸς τὴν οὐράνιον τάξιν ἐπολιτογραφήθησαν, οὐκ ἀπολύτῳ τῷ βίῳ ἐδόκει καὶ πρὸ τῆς εἰσόδου τοῦ νυμφῶνος διαβιοῦν, οὐδὲ συνηθείᾳ πονηρᾷ τῷ μετὰ ταῦτα εὐεφόδους λυμαίνεσθαι ἐπαγγέλματι. χαλεπὸν γὰρ συνήθεια ἐμπαθὴς εἰς ἀνατροπήν, οὐχ ἧττον ἢ ποταμοῦ βία ἐξ ὑπερδεξίου πολλῷ τῷ ῥεύματι ἐφορμῶντος καὶ κατακλύζοντος. ἄλλως τε δὲ καὶ εἰ κατηχούμενοι, ἀλλ᾽ οὖν ἐπὶ τῷ προκειμένῳ ἁμαρτήματι (ἄρνησις γὰρ καὶ οὗ ἔλαβον ἀῤῥαβῶνος τῆς πίστεως ἀποβολὴ καὶ ἀθέτησις) καὶ τῷ πολιτικῷ νόμῳ προέχονται, ὃς ἐν τοῖς συμβολαίοις μέγα τὸν ἀῤῥαβῶνα πρὸς τὴν ἑξῆς ἡγούμενος πρᾶξιν οὐκ ἀτίμητον ζημίαν ἐᾷ τὸν πρὸς ἀθέτησιν ἀπιδόντα τοῦ συναλλάγματος μετὰ τὴν τοῦ ἀῤῥαβῶνος ἐπίδοσιν.

XV. **71.** Ven. Οὗτος παντελῶς ἀναιρεῖ τὰς μεταθέσεις οὐ τῶν ἐπισκόπων μόνον, ἀλλὰ καὶ τῶν πρεσβυτέρων καὶ διακόνων, ὅπερ οὐδ᾽ ὅλως φυλάττεται· ὁ δὲ τῆς ἐν Σαρδικῇ α΄ κανών, ἀποσιωπήσας πρεσβυτέρους καὶ διακόνους, τῶν ἐπισκόπων οὐ μόνον παντελῶς εἴργει τὴν μετάθεσιν, ἀλλὰ καὶ ἀκοινωνησίᾳ τούτους ὑποβάλλει· ἀποτρέπει δὲ τοῦτο προβαίνειν καὶ ὁ κα΄ κανὼν τῆς ἐν Ἀντιοχείᾳ.

XVI. **72.** V_1 Ὁ ἀναχωρῶν τῆς ἰδίας ἐκκλησίας ἢ οἰκείως ἢ ὑφ᾽ ἑτέρου ἀναστατούμενος ἢ οἴκοθεν κινούμενος ἀναχωρεῖ.

[1] Εὐδοκίαν Ven. [2] λύειν καὶ δεσμεῖν Ven.

73. V Περὶ τοῦ μὴ ἄνευ γνώμης τοῦ ἐπισκόπου, ὑφ' ὃν τις προετέτακτο κληρικός, ἐξεῖναι ἑτέρῳ ἐπισκόπῳ χειροτονεῖν τοῦτον, ὃς ἄξιος ἱεροῦ τάγματος ἐδοκιμάσθη μέν, οὐχ ὑπὸ τὴν ἐξουσίαν δὲ τοῦ αὐτὸν δεδοκιμακότος τελεῖ.

XVII. **74.** Ven. (къ *ἐκ μεταχειρίσεως*) Ἢ αὐτὸς δι' ἑαυτοῦ τοκίζων ἢ [1] ἑτέρῳ ὑποτιθέμενος τὸ ἀργύριον αὐτοῦ τοκίζειν, ὡς ἂν μὴ αὐτὸς διαγινώσκοιτο τοῦτο ποιῶν. V.

75. V Κἀνταῦθα αὐστηρία πολλή.

XVIII. **76.** Ven. Ὁ ὀκτωκαιδέκατος κανὼν τοὺς διακόνους κωλύει διδόναι τοῖς πρεσβυτέροις κοινωνίαν καὶ πρὸ τῶν ἐπισκόπων ἅπτεσθαι τῆς εὐχαριστίας [2], καὶ πῶς δεῖ μεταλαμβάνειν αὐτοὺς καὶ μὴ καθῆσθαι μεταξὺ τῶν πρεσβυτέρων. V_1 Ath.

77. V Σημείωσαι τὸ μὴ μεταξὺ πρεσβυτέρων καθῆσθαι διάκονον.

XIX. **78.** Ven. Περὶ τῶν ἐξ αἱρέσεων μετελθουσῶν [3] διαλέγεται ὁ παρὼν κανών. καὶ λέγει μὴ σχεῖν [4] αὐτὰς χειροτονίαν. V_1.

(къ *διακονισσῶν τῶν ἐν τῷ σχήματι ἐξετασθεισῶν*) **79.** V Τῶν διακονισσῶν, οὐ μέντοι καὶ χειροθεσίας ἀξιωθεισῶν.

80. V Οὐ τῶν ἐχουσῶν χειροθεσίαν, ἀλλ' οὕτω λεγομένων, ὥσπερ καὶ νῦν· διὸ καὶ ἠκριβολογήσατο.

Къ правиламъ Анкирскаго собора.

I. **81.** Ven. (къ *ὁμιλεῖν*) Λόγους διδασκαλίας ποιεῖσθαι τῷ λαῷ· πῶς γὰρ ἂν ἑτέροις ὑπόθοιντο [5] τὰ βέλτιστα, αὐτοὶ παρασφαλέντες τοῦ κρείττονος; V.

IV (= V обычн. сч.). **82.** V (къ *κοινωνησάτωσαν χωρὶς προσφορᾶς*) Σκόπει, ὅτι [6] τὴν κοινωνίαν οὐ τὸ μετασχεῖν τοῦ ἀγαθοῦ φησιν, ἀλλὰ τὸ τοῖς πιστοῖς συνίστασθαι [7]. Ven.

V (= VI обычн. сч.). **83.** V (къ *μετὰ τὴν μεγάλην ἡμέραν*) Ἤτοι τὴν τοῦ κυρίου ἀναστάσιμον, λέγω δὴ τὸ ἅγιον πάσχα, ἢ τὴν κυρίαν [8] ἡμέραν τῆς συνόδου, καθ' ἣν καὶ πέρας λαμβάνει [9] τὰ διοικηθέντα. Ven.

[1] Ἢ αὐτὸς δι' ἑαυτοῦ τοκίζων ἢ проп. V. [2] κοινωνίας V_1. [3] Περὶ τῶν αἱρέσεων V_1. [4] ἔχειν. V_1. [5] πῶς γὰρ ἑτέροις ὑποθοῖεν V. [6] ὡς Ven. [7] συστῆναι Ven. [8] κυριακὴν Ven. [9] καὶ ἔμελλεν πέρας λαβεῖν Ven.

IX (= X обычн. сч.). **84.** V Περὶ διακόνων μετὰ τὴν χειροτονίαν γημάντων.

X. **85**[a]. Ven. Δοκεῖ μάχεσθαι οὗτος ὁ κανὼν τῷ κϛ′ τῶν ἀποστόλων· τάχα δὲ οὐ μάχεται· οὗτος μὲν γὰρ περίστασιν εἰσάγει τὴν περὶ τὴν κατάστασιν, ἐκεῖνος δὲ ἀπεριστάτως ὁρίζει, ὁ δὲ τῆς ϛ′ συνόδου ϛ′ ἀντίκειται φανερά.

85[b]. L_1 Ὅς [1] δοκεῖ τοῖς ἀποστολικοῖς ἐναντιοῦσθαι κανόσιν ἢ οὐχί; περίστασιν γὰρ οὗτος τὴν περὶ τὴν κατάστασιν εἰσάγει, ὁ δὲ ἀπεριστάτως ὁρίζει, εἰ μέντοι καὶ ἀντίκειται ⟨ἡ ϛ′⟩ σύνοδος.

XII. **86.** L_1 Τί λέγει, εἰ μετ' ἐπιτροπῆς ἔξεστιν αὐτῶν.

XII (= XIII обычн. сч.). **87.** V Σημείωσαι· φοβερόν.

XIII. **88.** Ven. Ζήτει τῶν ἐν Νεοκαισαρείᾳ κανόνα ιγ′ καὶ τῶν ἐν Λαοδικείᾳ κανόνα κζ′, ὃς κωλύει γίνεσθαι χωρεπισκόπους.

XIV (= XV обычн. сч.). **89.** V Ἀπολαβεῖν τὴν τιμὴν δηλονότι τοὺς κακῶς ὠνησαμένους.

XIX. **90.** L_1 Οἱ ἐφεξῆς τῶν ἄλλων συνόδων κανόνες βαρύνουσι τὸν παραπεσόντα τὸ ἐπιτίμιον

XIX (= XX обычн. сч.). **91.** V Ἐνταῦθα ἡ μοιχὸς ἑπτὰ ἔτεσιν ἐπιτιμᾶται.

XX (= XXI обычн. сч.). **92.** V Αἱ τὰ φθόρια ποιοῦσαι δεκαετίᾳ.

93. V (къ *κατὰ τοὺς βαθμοὺς τοὺς ὡρισμένους*) Τὸν τοῦ προσκλαίοντος, τοῦ ἀκροωμένου, τοῦ ὑποπίπτοντος, τοῦ συνεστῶτος.

XXI (= XXII обычн. сч.). **94.** V Ὁ ἑκούσιος φόνος μέχρι τοῦ βίου παντός.

XXII (= XXIII обычн. сч.). **95.** V Ὁ ἀκούσιος πενταετίᾳ.

XXIII (= XXIV обычн. сч.). **96.** V Οἱ καταμαντευόμενοι πέντε.

XXIV (=XXV обычн. сч.). **97.** V Εἰς τοὺς συνεστῶτας, ἀλλ' οὐκ εἰς τὴν κοινωνίαν τοῦ ἀγαθοῦ.

Къ правиламъ Неокесарійскаго собора.

I. **98.** L_1 Τί λέγει τῆς τάξεως μετατίθεσθαι.

III. **99.** V Τοῦτον ἐξηγούμενος τὸν κανόνα ὁ μακάριος Βασίλειος, ὁ τῆς καθ' ἡμᾶς Καισαρείας φωστήρ, ἐν ταῖς πρὸς Ἀμφιλόχιον κανο-

[1] cod. Ὡς.

νικαῖς ἐπιστολαῖς οὕτω φησὶ [1] περὶ τριγάμων καὶ πολυγάμων, καὶ δείκνυσιν, ὅτι πολυγάμους οἱ πατέρες τοὺς τριγάμους οὐκ ἄλλους φασίν. Ven.

IV. **100.** Ven. Καλῶς εἶπεν "προθῆται"· ἐὰν γὰρ μὴ [2] μέχρι ψιλῆς προθέσεως ἔστη, [3] ἀλλὰ [4] καὶ τὸ σπουδῆς [5] ἐχόμενον ἔπραξεν, ὑπόκειται σωφρονισμῷ, καθὼς διαγορεύει ὁ ο′ [6] κανὼν τοῦ ἁγίου Βασιλείου. V_1P.

V. **101.** Ven. Κατηχουμένους λέγει πιστοὺς βαπτίζεσθαι μέλλοντας. δύο δὲ τούτων εἴδη· οἱ μὲν γὰρ ἄρτι προσέρχονται, διὸ καὶ ὡς ἀτελέστεροι μετὰ τὴν ἀκρόασιν τῶν Γραφῶν καὶ τῶν Εὐαγγελίων εὐθὺς ἐξίασιν· οἱ δὲ ἤδη προσῆλθον καὶ γεγόνασι τελειότεροι τῶν ἄρτι προσερχομένων, ὅθεν καὶ τὴν ἐπὶ τοῖς κατηχουμένοις εὐχὴν ἀναμένοντες τὸ γόνυ κλίνουσιν ἐν ταύτῃ.

102. V Ἐοίκασιν οἱ μακάριοι πατέρες καὶ τοὺς κατηχουμένους διὰ τῶν βαθμῶν ἄγοντες τῶν μετανοούντων οὕτω τῷ πληρώματι τῶν πιστῶν ἀποκαθιστᾶν (ὥσπερ που καὶ Γρηγόριος ὁ μέγας ἐπισημαίνεται φάσκων· "ἕως ἔτι κατηχούμενος εἶ, ἐν προθύροις εἶ τῆς ἐκκλησίας· εἴσω γενέσθαι σε δεῖ, εἰς τὰ ἅγια παρακύψαι" [7]), ἐπεὶ οὖν τὸ γόνυ κλίνειν, ὃ ἐπὶ τὸ ἀπορκίζεσθαι γινόμενον καὶ ἴσον ὂν τῷ προσκλαίειν καὶ εἰσαγωγικώτερον τοῦ ἀκροᾶσθαι. διὰ τοῦτο τὸν μὲν ἁμαρτάνοντα συγγνώμης ἀξιοῖ ἐπὶ χρόνους ε′, τὸν ἀκροώμενον δὲ ὡς τελειοτέρας ἠξιωμένον τάξεως ἐκβάλλει· οἱ γὰρ γευσάμενοι θεοῦ διὰ τῆς ἀκροάσεως καλῶν ῥημάτων καὶ παραπεσόντες ἀσύγγνωστοι κατὰ τὸν μακάριον Παῦλον καὶ θεραπείας ἐπιπονωτάτης δεόμενοι [8]· "δυνατοὶ γὰρ δυνατῶς ἐτασθήσονται" [9]. εἰ οὖν οἷα ἔτι κατηχούμενοι ἀσύγγνωστοι, τί ἂν οἱ πιστοὶ πράξειαν, εἰ καὶ νῦν ῥαθυμίᾳ τῶν ἐφορώντων καὶ καπηλείᾳ, μᾶλλον δὲ πονηρῷ ἑαυτοῖς συνειδότι ἐπὶ τὸ ἄνετον πάντες τοῦ βίου καὶ χοιρῶδες παρακαλοῦνται;

VII. **103.** V Οἱ δὲ τοῖς τετραγάμοις οὐ μόνον συνεστιώμενοι. ἀλλὰ καὶ συνευδοκοῦντες τίνος ἄξιοι;

XI. **104.** V Ἀλλὰ νῦν καὶ πεντεκαίδεκα ἐτῶν χειροτονοῦσιν.

XV. **105.** Ven. Οὕτως ὀνομάζει τὴν ἐν ταῖς ἀποστολικαῖς Πράξεσι φερομένην ἐκλογὴν τῶν ζ′ διακόνων. ζήτει τὸν ις′ τῆς ϛ′ συνόδου κανόνα.

[1] ἐν τῷ δ′ αὐτοῦ κανόνι φησὶν οὕτως (вм. ἐν ταῖς πρὸς... φησι) Ven. [2] ἐν ἀρχῇ (вм. ἐὰν γὰρ μὴ) PV_1. [3] ἔστη проп. V_1. [4] ἂν γὰρ (по по скобленному) P. [5] σπουδὴν V_1. [6] ο′ добавл. изъ V_1P. [7] S. Gregorii Naz. in sanctum baptsma § XVI (Migne XXXVI 380 A). [8] Евр. VI 5—6. [9] Премудр. Солом. VI 7.

106. L_1 Ὡς οὐκ ἀκριβώσαντός ἐστι τὸν νοῦν τῶν Πράξεων τὸ οὕτως νοεῖν τοὺς ζ′ διακόνους· διὸ σοφῶς αὐτῶν διορθοῦνται τὴν ἄγνοιαν.

Къ правиламъ Антіохійскаго собора.

II. **107.** P (ко второй половинѣ) Περὶ τῶν κοινωνούντων τοῖς ἀκοινωνήτοις.

III. **108.** L_1 Ἀκριβέστερον διείληφεν τῶν ἄλλων.

IV. **109.** Ven. Οὗτος ὁ κανὼν ἐμφαίνει, ὅτι καὶ τὰ ὑπὸ συνόδου κρινόμενα ἀναψηλαφᾶται ὑπὸ [1] ἑτέρας συνόδου· τὸ ἐναντίον δὲ κεῖται ἐν τῷ ιε′ κανόνι ταύτης τῆς συνόδου [2]. P.

VI. **110.** V Χρειῶδες τοῦτο τῇ νῦν τῶν μελαγχολησάντων ἐμπληξίᾳ.

VII. **20**ᵇ. V Εἰρηνική ἐστιν ἐπιστολὴ ἡ ἄνευ τινὸς σκανδάλου τοῦ ἐπικομιζομένου ἐγχειριζομένη ὑπὸ τοῦ προέχοντος πρός τινας ἀποφέρεσθαι· συστατικὴ δὲ ἡ κινηθεισῶν τινων κατηγοριῶν καὶ εἰς συκοφαντίαν ἀπελεγχθεισῶν τὸ ἀνεπίληπτον τῷ ἐπιφερομένῳ προσμαρτυροῦσα.

VIII. **111.** V (къ *εἰρηνικάς*) Ἃς καὶ ἀπολυτίκιά φασιν.

IX. **112.** P Ὅτι ὁ κανὼν οὗτος ἀπαράλλακτός ἐστι τῷ ἕκτῳ τῶν ἐν Νικαίᾳ. L_1.

X. **113.** V Εἰ ἐπισκόπου δηλονότι ἔχοι ἀξίωμα· χωρεπισκόπῳ γὰρ ψιλῷ οὐ μετόν, πλὴν ἀναγνώστου καὶ ὑποδιακόνου καὶ ἐπορκιστοῦ.

XIII. **114.** Ven. Ὅτι ὁ παραβὰς ἤδη καθήρηται. V_1P.

XV. **115.** P Ὅτι συμφώνως ὑπὸ πάντων τῶν ἐπισκόπων τῆς συνόδου τῆς ἐπαρχίας κατακριθεὶς [3] οὐκέτι δύναται παρ᾽ ἑτέροις δικάζεσθαι, ἀλλὰ μένει ἡ ψῆφος βεβαία. V_1.

XVI. **116.** Ven. Ὅτι δύναται γενέσθαι, ἐὰν ἡ τελεία σύνοδος ψηφίσηται.

XVIII. **117.** L_1 Οὗτος καὶ τῆς τιμῆς μετέχειν αὐτόν φησιν, οἱ δὲ πρὸ αὐτοῦ κανόνες τὸν τοῦ πρεσβυτέρου τάξιν ἐπέχειν.

XIX. **118.** P Τοῦτο εἴρηται ἐν [4] τῷ ς′ κανόνι τῶν [5] ἐν Νικαίᾳ. V_1.

XX. **119.** L_1 Ἡ ς′ σύνοδος ἅπαξ γίνεσθαι σύνοδον διωρίσατο καὶ ἡ ἐν Καρθαγένῃ δὲ διὰ τὰς τῶν ἀθροιζομένων συντριβάς.

XXI. **120.** P (къ *κατὰ τὸν ἤδη πρότερον ἐξενεχθέντα ὅρον*) Τὸν ις′ [6] κανόνα τὸν [7] ἐν Νικαίᾳ αἰνίττεται. Ven. L_1.

[1] παρὰ P. [2] ταύτης τῆς συνόδου проп. P (по друг. рука добав. эти слова). [3] ἐπισκόπων κατὰ τῆς ἐπαρχίας κριθὲν ὑπὸ V_1. [4] καὶ V_1. [5] τὸ V_1. [6] ις′ L_1 переправл. въ ιε′. [7] τῆς Ven.; Τῷ ις′ κανόνι τῶν V_1.

1-ый Ленинградский Юридический Институт БИБЛИОТЕКА

Къ правиламъ Лаодикійскаго собора.

I. **121.** L_1 Βαθμόν· ἔπραξε δὲ τοῦτο καὶ ἡ οἰκουμενικὴ σύνοδος ἡ β'.

III. **122.** L_1 Σύμφωνος τῶν πρὸ αὐτοῦ. ὁ μέντοι τοῦ ἁγίου Βασιλείου κανὼν τὸν νεοφώτιστον εἰς ἐπισκοπὴν προσελθεῖν οὐκ ἐκώλυσεν.

V. **123.** V (къ *ἐπὶ παρουσίᾳ ἀκροωμένων*) Τουτέστι μεγάλῃ ἐκφωνουμένων φωνῇ τῶν εὐχῶν.

VI. **124.** V Οὔπω τούτου ἐκτεθέντος τοῦ κανόνος, Βασίλειος ὁ μέγας Οὐάλεντα τῷ πληρώματι παρεδέχετο τῶν πιστῶν.

VII. **125.** L_1 Ὅτι Ναυατιανοὺς ἤτοι Καθαροὺς οἱ ἔμπροσθεν κανόνες ἀναβαπτίζουσι, οὗτος δὲ χρίει μόνον.

VIII. **126.** V (къ *τοὺς ἀπὸ... Φρυγῶν*) Τοὺς ἀπὸ Μοντανοῦ καὶ Πρισκίλλης.

XII. **127.** P Ὅτι δεῖ δόκιμον εἶναι τὸν ἐπίσκοπον τῇ πίστει καὶ τῷ ὀρθῷ βίῳ. L_1.

XV. **128.** V (къ *εὐλογιῶν*) Ἤτοι ξενίων.

XV. **129.** V (къ *διφθέρας*) Ὃ νῦν φελόνιόν φασι.

XIX. **130.** P Ὅτι τρεῖς εὐχαί εἰσιν [1] τῶν πιστῶν. L_1.

131[a]. V (къ *εἰρήνην*) Τὸν ἀσπασμόν φησι εἰρήνην.

131[b]. V (къ тит. III гл. 5, гдѣ сдѣлана ссылка на одно только правило—Лаод. 19) Εἰρήνη νῦν ὁ ἐπὶ τῇ θείᾳ λειτουργίᾳ ἀσπασμός.

132. L_1 (къ *εἰρήνην δίδοσθαι*) Περὶ τῆς εἰρήνης πῶς φησι δίδοσθαι.

133. L_1 Τίσιν ἔξεστιν εἰσιέναι εἰς τὸ θυσιαστήριον.

XXVI. **134.** V (къ тит. IV гл. 2, гдѣ имѣется въ виду одно только Лаод. 26). Ἦσάν τινες ἀπὸ τῶν ἱερῶν ἀποστόλων ἐπορκισταὶ καθεσταμένοι, ὧν ἔργον περιϊέναι τοὺς νοσοῦντας, μάλιστα τοὺς πνεύμασι χειμαζομένους, καὶ ἀπορκίζειν εὐχαῖς ἱεραῖς καὶ ἀποτροπιασμοῖς· καὶ ὅτι τοῦτο ἀπὸ τῆς βίβλου τῶν Πράξεων διὰ τῶν υἱῶν τοῦ Σκευᾶ μαθεῖν ἔνεστι καὶ ἀπὸ τῆς Ἰακώβου τοῦ ἀδελφοθέου ἐπιστολῆς, ὃς ἐπὶ τοῦ νοσοῦντος προσκαλεῖσθαί φησι τοὺς πρεσβυτέρους τῆς ἐκκλησίας [2] καὶ τὸ ἀκεσώδυνον ἐνεργεῖν ἔλαιον [3], ὡς ὄντων δηλαδὴ καὶ ἑτέρων τῶν ἐπεύχεσθαι τοῖς κάμνουσι δυναμένων· τοῦτο γὰρ διὰ τοῦ ἀφωρισμένως

[1] εἰσιν εὐχαὶ L_1. [2] до сихъ поръ есть въ Barber. 578. [3] Іакова V 13—16.

τοὺς πρεσβυτέρους εἰπεῖν νοεῖν δίδωσιν. ἐπεὶ οὖν τοῦτο οὐ βούλεται, οὐδὲ τούτους ὁ ἱερὸς κανὼν ἄνευ χειροθεσίας τὴν διακονίαν μετιέναι.

XXXV. **135.** Ven. (къ *ἀγγέλους*) Μέμνηται μὲν καὶ ὁ θεῖος Ἐπιφάνιος ἐν τοῖς Παναρίοις αἱρέσεώς τινος τῶν Ἀγγελικῶν λεγομένης, εἴτε διὰ τὸ ἑαυτούς φησι σεμνύνειν ὡς τάξιν ἀγγέλων μετὰ τὴν πολιτείαν ἐπέχοντας, εἴτε διὰ τὸ ληρεῖν ὑπ' ἀγγέλων ἐκτίθεσθαι τὸν κόσμον· προσφυέστερον δὲ ἔστι μάλιστα τῷ κανόνι τῷδε τὸ ἐν τῇ πρὸς τοὺς Κολοσσαεῖς ἐπιστολῇ παρὰ τοῦ ἀποστόλου Παύλου δηλωθέν, ἐν ᾧ φησι· "μηδεὶς ὑμᾶς καταβραβευέτω θέλων ἐν ταπεινοφροσύνῃ καὶ θρησκείᾳ τῶν ἀγγέλων, ἃ μὴ ἑώρακεν, ἐμβατεύων" [1]. ἦσαν γάρ τινες διδάσκοντες μὴ δεῖν λέγειν ἡμᾶς διὰ Χριστοῦ προσάγεσθαι τῷ θεῷ καὶ πατρὶ (μείζων γὰρ ἢ καθ' ἡμᾶς φασιν ὁ Χριστός), ἀλλὰ δι' ἀγγέλων· ἄρνησις γὰρ τοῦτο ἔοικεν τῆς θείας οἰκονομίας ἐν προσχήματι ταπεινοφροσύνης.

XXXVI. **136.** V Περὶ ἀστρολόγων.

XL. **137.** V (къ *ἀνωμαλίαν*) Ἀνωμαλίαν νόσον φησὶν ἤ τινα ἄλλην ἠναγκασμένην βιωτικὴν περίστασιν.

XLV. **138ª.** V Ἀλλὰ τοὺς ἐξ ἀρχῆς τῆς νηστείας, ὡς εἶναι τὴν ἄσκησιν καὶ γυμνασίαν αὐτῶν τελείαν, ἀλλὰ μὴ ἀποσχεδιασμένην [2].

138ᵇ. Ven. Ὡς ἐκείνων μόνων ὄντων δεκτῶν τῶν ἐξ ἀρχῆς αὐτῆς τῆς τεσσαρακοστῆς νηστευόντων, οἷα τῆς ἀσκήσεως τελείας οὔσης καὶ οὐκ ἀπεσχεδιασμένης.

XLVIII. **139.** V (къ *χρίσματι*) Τὸ θεῖον μύρον φησί.

XLIX. **140.** V Καλῶς εἴπερ τι ἄλλο καὶ τοῦτο τοῖς θεοφόροις ἔδοξε πατράσι· ταπεινώσεως γὰρ ὁ καιρὸς καὶ τῶν ἑκάστῳ πεπλημμελημένων τὴν ἐπιγνωμοσύνην φέρων, ὅτε καὶ ἀναξίους ἑαυτοὺς ἡγεῖσθαι καὶ τοῦ πρὸς ὕψος ἀφορᾶν οὐρανοῦ ὁ σώφρων λογισμὸς ὑποβάλλεται, μὴ ὅτι γε πνευματικῆς εὐφροσύνης πίμπλασθαι. [3] ἐν δὲ τοιούτῳ καιρῷ οὐκ ἂν εἴη ἀκόλουθον ἀφεμένους τῶν περὶ ἃ ἡ σπουδή, πρὸς ἕτερα [4] ἀποκλίνειν εὐφραινομένους οὐ προσηκόντως καὶ αἰθριάζοντας ἐν στυγνότητι· δέον ὡς κλοιῷ κάμπτειν τὸν τράχηλον καὶ σάκκον ἐπὶ τὴν ὀσφὺν περιάπτειν καὶ σποδὸν ἐπὶ κεφαλῆς καταπάσσειν, τὰ τῆς ἀληθοῦς νηστείας ἐπασκοῦντας γνωρίσματα· μόγις γὰρ ἂν οὕτω προκαταρτισθεῖσιν ὁ μόσχος τυθείη

[1] Колосс. II 18. [2] вмѣсто ἀπεσχεδιασμένην. [3] ὅτε καὶ ἀναξίους... πίμπλασθαι Ven. проп. [4] πρὸς ἑορτὰς Ven.

ὁ σιτευτὸς καὶ πρὸς ἀξίαν βρωθείη, τὸ τῆς οὐ σβεννυμένης ἐφόδιον εὐφροσύνης οὐδ' ἀπολήγειν ἢ διαπνεῖσθαι πεφυκυίας τροφῆς, ἡ ἐπιούσιος δόσις καὶ τοῦ παρέχοντος ἀξία τῆς ἀγαθότητος· καὶ ὅτι ταῦτα οὐκ οἶμαί τινα ἐπ' οὐδενὶ χρησίμῳ περιέλκειν τινὰ ἐμποιῆσαι τῷ λόγῳ ἢ τοῦτον, ὃς τὴν κατὰ τὸν ἄσωτον υἱὸν παραβολὴν ἀγνοῶν προηγουμένην ἔχουσαν τὴν ταπείνωσιν καὶ πᾶσαν τὴν δι' ἀτίμου ἀγωγῆς αὐτοῦ ψήφῳ ἐκείνου τοῦ τῆς πατρῴας ἑστίας ἑαυτὸν ἠλλοτριωκότος ἀξιοπάθειαν αὐτοσχεδιάζει τὴν πνευματικὴν εὐφροσύνην, μιγνύειν τὰ ἄμικτα κακῶς ἄγαν ἐπιχειρῶν καὶ τὸν ἐπιτήδειον προαρπάζων εἰς ἀφροσύνης παράστασιν [1]· πίστις τοῦ λόγου τὸ ἐπειδὰν μὴ οἷόν τε τὸ τῆς νηστείας ἐνεργεῖν ταπεινὸν μὴ τοῦτο κωλῦσαι [2], ἀλλ' ἐν σαββάτῳ καὶ τῇ ἀναστασίμῳ προτρέπειν καὶ θύειν τὸ ἄθυτον θῦμα καὶ τῆς ἀπ' αὐτοῦ θυμηδίας κορέννυσθαι. τὰς μὲν οὖν θυσίας καὶ διὰ τοῦτο ἀπάγει ὁ τῶν πατέρων θεῖος χορὸς καὶ ὅτι, πολέμου συγκροτουμένου ἡμῖν (προσευπορείσθω γὰρ καὶ τοῦτο [3] πρὸς [4] ἀντιπάλους τοῦ ἐν ἡμῖν κρείττονος), οὐχ ὅσιον τὴν τῆς εἰρήνης θυσίαν ἐπιτελεῖν μεταξὺ ἔργου [5] ἐχομένους καὶ ὥσπερ ἄλλο τι τῶν κατὰ πόλεμον πραγμάτων ταύτην μεταχειρίζεσθαι, ἢ τῷ τέλει καὶ τῇ ἐκεχειρίᾳ εἴωθεν παραγίνεσθαι [6]. ἀλλὰ τοῦ μὲν ἄρτου ἐπαινετῶς μάλα μετέχειν καὶ τοῦ ποτηρίου τοῖς οὐ κατὰ καπήλους μετέχουσιν ἀνεῖται εἰς ἀντίληψιν δοκῶ μοι καὶ κραταίωμα τῶν πονουμένων· τὴν μέντοι θυσίαν ἀναβάλλεσθαι τέως δεδοκίμασται κράτιστον, ἐπεὶ καὶ στρατιώτης χρήσαιτ' ἂν ἄρτῳ καὶ κρέασι πολέμου καιρῷ, ἑώλοις μέντοι καὶ οὐ προσφάτοις καὶ νεαροῖς. ὅτι μηδὲ σχολὴν ὁ πόλεμος παρέχει ἀρτοποιΐαις προσκεῖσθαι καὶ ζωοθυσίαις ἐκδίδοσθαι. Ven.

L. **141**. V Σκόπει, ὅτι ξηροφαγεῖν πᾶσαν τὴν ἁγίαν ἐπιτρεπόμεθα τεσσαρακοστήν.

LV. **142**. V (къ *ἐκ συμβολῆς συμπόσια*) Τὰ ἐξ ἐράνου φησίν. ἔρανος δέ ἐστιν, ὅταν ἀπὸ συλλογῆς ἤτοι συνεισφορᾶς καὶ συντελείας πολλῶν ἅμα γίνηταί τι, πάντων κοινωνούντων τῇ ἐπιδόσει ταύτῃ.

LVII. **143**. L_1 Ὅτι τὸν χωρεπίσκοπον ἡ ἐν Λαοδικείᾳ σύνοδος κωλύει.

[1] καὶ πνευματικῆς ἀγαλλιάσεως ἐμπιπλαμένου παρὰ καιρὸν Ven. (вм. δέον ὡς κλοιῷ κάμπτειν... εἰς ἀφροσύνης παράστασιν). [2] οὐ κωλῦσαι τὸ θεῖον Ven. (вм. μὴ τοῦτο κωλῦσαι). [3] προσευπορείσθω γὰρ καὶ τοῦτο Ven. переставл. послѣ κρείττονος. [4] πρὸς τοὺς Ven. [5] ἔργου μεταξὺ Ven. [6] καὶ ὥσπερ ἄλλο τι... παραγίνεσθαι. Ven. проп.

Къ правиламъ II вселенскаго собора.

II. **144**. Ven. Ὅτι οὐ δεῖ ἐπίσκοπον ἀλλοτρίᾳ ἐκκλησίᾳ ἐπιβαίνειν. L_1P.

145[a]. P Ὅτι ὁμοφωνεῖ καὶ οὗτος ὁ κανὼν τῷ ϛʹ τῶν ἐν Νικαίᾳ. L_1Ven.

145[b]. L Ὁμοφωνεῖ καὶ οὗτος τῷ ϛʹ τῶν ἐν Νικαίᾳ, ἀπαγορεύει δὲ χειροτονεῖν ἐπισκόπους ἄλλοις ἐπισκόποις ὑποκειμένους· δίδωσι δὲ καὶ διὰ τοῦ γʹ κανόνος τὰ πρεσβεῖα τῷ Κωνσταντινουπόλεως.

146. P Περὶ τῶν ἐν ταῖς βαρβαρικαῖς ἔθνεσιν ἐκκλησιῶν.

III. **147**. Ven. Τὸ "μετὰ" τοῦ χρόνου δηλωτικόν ἐστιν [1], οὐ τῆς τιμῆς, ἐπεὶ πῶς ἕξει τὰ κατὰ τὴν [2] τιμὴν πρεσβεῖα ὁ κατ' αὐτὴν δευτερεύων [3]; οὕτως οὖν [4] καὶ ἡ ἁγία δʹ [5] οἰκουμενικὴ σύνοδος τὸν κανόνα τοῦτον ἐνόησεν, ἐν τῷ κηʹ αὐτῆς κανόνι ἐπικυρώσασα ἴσοις πρεσβείοις [6] τὸν Κωνσταντινουπόλεως τιμᾶσθαι θρόνον· τὸ δὲ ἰσάζειν ἅμα καὶ δευτερεύειν τῇ τιμῇ ἀσύμβατόν τε καὶ ἀδιανόητον. L.

148. V Περὶ τοῦ τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐπισκόπου.

VI. **149**. V Περὶ κατηγορουμένων ἐπισκόπων.

150. Ven. Ποίων κατηγόρων [7] ἐπισκόπου οὐκ ἐξετάζεται πρόσωπον. PL_1.

151. Ven. Ἡ ἐπιφερομένη τῷ ἐπισκόπῳ μέμψις ἢ ἰδιωτική ἐστιν, ἢ ἐκκλησιαστική L_1.

152. Ven. Ὅτι αἱρετικὸς οὐ κατηγορεῖ ἐπισκόπου περὶ ἐκκλησιαστικοῦ πράγματος.

153. Ven. Ποίους οἶδεν ὁ κανὼν αἱρετικούς.

154. Ven. Ὁ κατηγορεῖν [8] ἐπισκόπου βουλόμενος ἢ ὑπὸ μέμψιν [9] καὶ ἄδεκτος, ἢ ἄμεμπτος καὶ δεκτὸς ὑπάρχει, ἢ αἱρετικός, ἢ ἐκβεβλημένος, ἢ προκατεγνωσμένος. P.

155. Ven. Ὁ κατήγορος [9] ὑπὸ μέμψιν ὑπάρχων [10] ἢ αἱρετικός, ἢ ἀποβεβλημένος, ἢ ἀκοινώνητος, ἢ προκατεγνωσμένος, ἢ προκατηγορημένος. L_1.

[1] Ὅτι τὸ «μετὰ τὸν Ῥώμης» χρόνου ἐστὶ δηλωτικὸν L_1· [2] τὴν проп. L_1. [3] ὁ κατὰ τὴν τιμὴν ὁ δευτερεύων τῇ τιμῇ L_1. [4] δὲ L_1. [5] καὶ L_1 [6] ἐνόησεν τοῦτον τὸν κανόνα ἴσοις πρεσβείοις ἐπικυρώσασα L_1 (вм. τὸν κανόνα... πρεσβείοις). [7] κατηγοριῶν P. [8] κατηγορῶν P. [9] κατηγορῶν L_1. [10] здѣсь кончается схолія въ L_1.

156. Ven. Πῶς δεῖ κατηγορεῖν ἐπισκόπων καὶ ἐπὶ τίνων. PL_1.

157. Ven. Τί δεῖ ποιεῖν τοὺς ἐπαρχεώτας ἀδυνατοῦντας κρῖναι. L_1.

158. Ven. Ὅτι ὁ κατήγορος τοῦ ἐπισκόπου ἴσῳ ὑπόκειται κινδύνῳ, ᾧ καὶ ὁ ἐπίσκοπος μὴ δυνηθεὶς ἐπεξελθεῖν. L_1.

VII. **159**. V (къ концу) Βαθμοὶ τῶν κατηχουμένων.

160. Ven. Ζήτει τῆς ϛ' συνόδου κανόνα ια'.

161^{a}. Ven. Ποῖοι χρίονται καὶ ποῖοι βαπτίζονται.

161^{b}. L_1 Τίνες μύρῳ τῶν ἐξ αἱρέσεως χρίονται καὶ τίνες ἀναβαπτίζονται.

162. Ven. Ὅτι Φρύγες οἱ Μοντανισταί.

163. Ven. *Ποῖοι ἐξ αἱρέσεως ἐπιστρέφοντες χρίονται μόνον.* Ἀρειανοί. Μακεδονιανοί. Σαββατιανοί. Ναυατιανοί. Τεσσαρεσκαιδεκατῖται Ἀπολιναρισταί. *Ποῖοι ἐξ αἱρέσεως ἐπιστρέφοντες βαπτίζονται.* Εὐνομιανοί. Μοντανισταί. Σαβελλιανοί. Γαλάται καὶ λοιποί. L_1.

Къ правилу *περὶ ψευδοκατηγόρων*. **164.** V Οἱ δὲ καὶ ἑτέρους ἀναγκάσαντες ψευδορκοῦντας κατηγορεῖν ἐπισκόπων τίνος ἄξιοι; ἀλλὰ καὶ οἱ τούτους παραδεξάμενοι ἐπίσκοποι ἆρα ἂν ἢ ἐπίσκοποι ἔτι, ἢ συγγνώμης τινὸς ἐντὸς δίκαιοι καταστῆναι;

165. V_1 Ὅλον καὶ τοῦτο καὶ τὸ πρὸ τούτου ἐπιτιμίου καὶ σωφρονισμοῦ πλῆρες.

Къ правиламъ III вселенскаго собора.

VIII. **166**. Ven. Ὅτι [1] καὶ οὗτος ὁ κανὼν φυλάττει ἑκάστῃ ἐκκλησίᾳ τὰ ἑαυτῆς [2] δίκαια [3]. LL_1 Ath.

167. Ven. Ὅτι [4] οἱ Κύπριοι δι' ἑαυτῶν [5] τὰς χειροτονίας ποιοῦνται [6]. LV_1P [7].

168. V (къ *εἰ δέ τις μαχόμενον τύπον...*) Ὅτι τοὺς τύπους καὶ τὰ ἐξ ἀρχῆς ἔθη οὐ παρασαλευτέον.

IX (= посл. къ Памф. соб.). **169.** V (къ *ἐκ πολλῆς ἄγαν ἀπραγμοσύνης ἀπειρηκὼς...*) Συνυπακούεται τὸ πατρός.

170. V (къ *παραιτήσεως... προσεκόμισε βιβλίον*) Καὶ ποῦ

[1] Ὅτι проп. L. [2] αὐτῆς Ath. [3] Ath. добавл. δίελθε ὅλον. [4] Παριστᾷ δὲ καὶ ὅτι L. [5] δι' ἑαυτὰ L. [6] ποιοῦσιν L. [7] въ P другой рукой. [8] cod. γραφή.

οἱ νῦν ῥᾳδίως παραιτούμενοι, καὶ ταῦτα μηδεμιᾶς ὑπούσης προφάσεως εὐλόγου ἢ περιστάσεως;

171. L Περὶ λιβέλλου παραιτήσεως ἡ σύνοδος αὕτη γράφει [8] πρὸς τὴν ἐν Παμφυλίᾳ σύνοδον· διαλέγεται καὶ μέμφεται μὲν μετρίως τὸν παραιτησάμενον ὡς ὀλίγωρον, συγγνωμονεῖ δὲ τοῖς ἀντ᾽ αὐτοῦ χειροτονήσασιν ἕτερον, ἐπείπερ ἐκεῖνος οὐ περὶ τῆς πόλεως, φησίν, οὐδὲ περὶ τῆς ἐκκλησίας ἐφιλονείκει, ἀλλὰ περὶ μόνης τῆς τιμῆς· ἢ γὰρ ἂν ἀπέλα⟨βεν⟩ καὶ τὴν ἐκκλησίαν ὡς οἶμαι, καθὰ δὴ καὶ τὴν τιμήν· ἔδει γάρ φησι ἔχεσθαι τῆς ἀρχῆς καὶ τοῖς πόνοις ἀνταποδύεσθαι. πλατύτερον δέ γε περὶ τοῦδε διελέχθη ὁ ταύτης τῆς συνόδου προεδρεύσας, ὁ μακάριος Κύριλλος, ἐν τῇ πρὸς Δόμνον ἐπιστολῇ, ἐν ᾗπερ οὐκ εὐχερῶς φαίνεται λιβέλλους δεχόμενος.

Къ правиламъ IV вселенскаго собора.

II. **172.** V (къ концу) Περὶ τοῦ τοῖς ἀτόποις συναιρουμένου καὶ μεσιτεύοντος.

IV. **173.** V (къ срединѣ) Περὶ ἀπειθείας μοναχῶν.

VI. **174.** V Περὶ ἀπολελυμένως ἄνευ βαθμοῦ χειροτονουμένων.

VII. **175.** V Περὶ τῶν λαϊζόντων κληρικῶν ἢ μοναχῶν.

176. L_1 Νῦν οὐκ εὐαγῶς οὐ φυλάττεται.

IX. **177.** Ven. Ὅτι οὐ δύναται κληρικὸς πρὸς [1] κοσμικὰ δικαστήρια ἔρχεσθαι. P [2].

178^a. Ven. Περὶ τῶν πρᾶγμα ἐχόντων πρὸς ἐπίσκοπον ἢ κληρικόν.

178^b. V_1 Περὶ τῶν πρᾶγμα ἐχόντων κληρικῶν πρὸς ἐπίσκοπον.

179. Ven. Περὶ τῶν ὑπόπτως [3] ἐχόντων τοὺς ἰδίους ἐπισκόπους ἢ μητροπολίτας κληρικῶν [4]. V_1.

180. P Ζήτει σχόλιον [εἰς τὴν ἀρχὴν τῆς] [5] ἰΕφέσου.

X. **181.** Ven. (къ *διὰ δόξης κενῆς ἐπιθυμίαν*) Ἡ αἰτία.

182. Ven. Περὶ κληρικοῦ μετατεθέντος ἀπὸ ἐκκλησίας εἰς ἐκκλησίαν. P [6].

[1] ἐπὶ P. [2] въ P эта схолія другой рук. и слова στήρια ἔρχεσθαι не дописаны. [3] ἐπόπτως V_1. [4] κληρικῶν проп. V_1. [5] средина схоліи неразборчива. [6] въ P другой рук.

XI. **183**[a]. V Εἰρηνικῶν γραμμάτων διαφορὰ καὶ συστατικῶν.

183[b]. Ven. Σημείωσαι διαφορὰν εἰρηνικῶν καὶ συστατικῶν ἐπιστολῶν.

XII. **184**. V Ὅτι ἔξεστι βασιλεῖ καινίζειν ἐξ ἐπισκοπῆς μητρόπολιν.

185. V (къ *σωζομένων τῇ κατὰ ἀλήθειαν μητροπόλει τῶν οἰκείων δικαίων*) Οὐχὶ καὶ τοῦ προεστῶτος ὑποτασσομένου, ἀλλὰ μηδὲν τῶν τῆς ἐνορίας τοῦ προτέρου μητροπολίτου παρασπωμένης καὶ τῷ νέῳ προσκυρουμένων.

186. Ven. Περὶ τῶν [1] τιμηθεισῶν ὀνόματι μητροπόλεως [2] ὑπὸ βασιλέως ἐκκλησιῶν [3]. P [4].

XVI. **187**. V Περὶ παρθένων ἐκκλησιαστικῶν γαμουμένων.

XVII. **188**. V (къ *ει δὲ καί τις ἐκ βασιλικῆς ἐξουσίας ἐκαινίσθη πόλις*) Καὶ τοῦτο ἄδειαν καινίζειν δίδωσι βασιλεῦσιν.

189. V (къ *ἀγροικικὰς παροικίας ἢ ἐγχωρίους*) Ἀγροικικὰς [5] τὰς ἐπὶ τῶν ἐσχατιῶν ἱδρυμένας, ἃς καὶ μονοίκιά φασι νῦν [6], ἐγχωρίους δὲ τὰς ἐν μέσοις [7] ἀγροῖς ἢ κώμαις. Ven.

190. V Οὐ μάχεται δὲ ταῦτα τοῖς ἐν Ἐφέσῳ ἁγίοις πατράσι, μηδόλως κανονίσασιν ἐπιπηδᾶν ἕτερον ἐπίσκοπον τῇ μὴ προσηκούσῃ παροικίᾳ, ἀλλ' εἰ καὶ τετόλμηται τοιοῦτον, ἀναμφιλέκτους τῷ προδεσπόζοντι ἀποκαθιστᾶν, εἴγε οὗτοι οὐ μόνον οὐκ ἀποκαθιστᾶν, ἀλλὰ καὶ διαδικάζεσθαι κελεύουσιν καὶ πρὸς ἀποδείξεις χωρεῖν· ἄλλο γὰρ παρ' ἐκείνοις, ἄλλο παρὰ τοῖς παροῦσιν τὸ ἀμφισβητούμενον· οἱ μὲν γὰρ περὶ τῶν ἤδη κατηρτισμένων λαῶν καὶ ὑφ' ἑτέρῳ ἐπισκόπῳ τελούντων, εἶτα ὑπὸ τοῦ πλεονεκτεῖν εἰωθότος ἁρπαζομένων τὰ ὁρισθέντα ἀπεφήναντο πόλεών φημι ἢ κωμῶν· οἱ δὲ νῦν περὶ ἀγρῶν, ὧν εἰκὸς μηδὲ τοσοῦτον λόγον εἶναι παρὰ τῷ ἐπισκόπῳ τῷ προκατειληφότι, διὰ τὸ ἀχρεῖον καὶ μικροπρεπὲς παρορωμένων.

191. V_1 Ὅτι τὸ αὐτό φησιν ὁ θ' κανών.

192. L_1 Περὶ ἐξάρχων. τίνες δὲ καὶ πόσαι διοικήσεις ὑπὸ τὸν Κωνσταντινουπόλεως, ἀνάγνωθι κανόνα κη'.

[1] τῶν проп. P. [2] μητροπόλεως ὀνόματι P. [3] ἐκκλησιῶν добавл. изъ P. [4] въ P друг. рук. вся схолія. [5] μὲν λέγει вставл. Ven. [6] νῦν φασιν Ven. [7] cod. ἐμμέσοις.

193 V (къ *τοῖς πολιτικοῖς ἢ δημοσίοις τύποις*) Πολιτικοῖς, τοῖς κατὰ τὴν ἐξουσίαν τῶν ἄρχειν ἐν αὐταῖς κοσμικῶν τεταγμένων, ὥστε ἐφ' ὅσον ἐπιτρέπειν ἀφώρισται τῷ ἄρχοντι, ἐπὶ τοσοῦτον παρατείνεσθαι καὶ τὸν ὅρον ταῖς ἐκκλησιαστικαῖς ἐπικρατείαις· δημόσιοι δὲ αἱ κατὰ τοὺς φόρους συντάξεις, αἷς τὸ ὑφ' ἕνα λόγον τελεῖν περιγράφει τὸ ὁμοδέσποτον.

194. Ven. Ἐξάρχους καλεῖ ἐκείνους, ὑφ' οὓς τελοῦσιν οἱ μητροπολῖται· εἶεν δ' ἂν οὗτοι οἱ πατριάρχαι, ὑφ' ὧν καὶ κρίνεσθαι τὰς κατὰ τῶν μητροπολιτῶν κινουμένας βούλεται δίκας, ἢ ὑπὸ τοῦ Κωνσταντινουπόλεως, ἐξαιρέτῳ προνομίῳ τοῦτον ἡ σύνοδος τὸν θρόνον τιμήσασα. ὅτι δὲ ἐξάρχους λέγει τοὺς τῆς πρώτης καθέδρας ἐπισκόπους, οἷοί εἰσιν οἱ πατριάρχαι, τεκμηριοῖ καὶ ὁ τῆς ἐν Καρθαγένῃ λθ' κανὼν ἀπαγορεύων, μὴ δεῖν λέγων αὐτοὺς ἔτι τῇ τοῦ ἐξάρχου προσηγορίᾳ καλεῖσθαι. εἰ δὲ λέγει τις, ὡς ὁ ἕκτος τῆς ἐν Σαρδικῇ κανὼν ἔξαρχον καλεῖ τὸν μητροπολίτην, ἀληθεύσει μέν, οὐδὲν δὲ ἀξιόλογον ἐρεῖ πρὸς τὸ παρὸν ζήτημα· αὐτὸς γὰρ οὗτος ὁ προκείμενος τῆς ἐν Καλχηδόνι κανών, λέγων τὸν παρὰ τῶν μητροπολιτῶν ἀδικούμενον δικάζεσθαι παρὰ τῷ ἐξάρχῳ, δείκνυσιν ἕτερον ὄντα τὸν ἔξαρχον παρὰ τὸν μητροπολίτην. εἰ δὲ ὑποτρέχει τις λογισμός, μήποτε τοὺς παρὰ τῶν πατριαρχῶν ἐπί τινας ἐκκλησιαστικὰς διοικήσεις πεμπομένους ἐξάρχους (οὕτω γὰρ ὀνομάζονται κατὰ τὸ νῦν ἐπιχωριάζον ἔθος) ὁ κανὼν σημαίνει, οὐδεμίαν οὐδὲ οὕτως εὑρίσκει χώραν ὁ λογισμός· πρῶτον μὲν γάρ, διὰ τί τῶν ἄλλων θρόνων ἐχόντων ἐξάρχους ὁ Κωνσταντινουπόλεως οὐχ ἕξει; ἔπειτα καὶ τὰ ἐναντία κατασκευασθήσεται τῶν σπουδαζομένων τοῖς ἀντιλέγουσιν, ἐξαιρουμένου κἀντεῦθεν τοῦ Κωνσταντινουπόλεως· εἰ γὰρ οἱ ὑπὸ [1] τοὺς ἄλλους θρόνους ἐπίσκοποι καὶ κληρικοὶ πρὸς τοὺς μητροπολίτας ἀμφισβητοῦντες μέλλοιεν τὰς ἐκκλήτους ποιεῖσθαι πρὸς τοὺς ὑπὸ τῶν πατριαρχῶν αὐτῶν στελλομένους ἐξάρχους, ἢ πρὸς τὸν Κωνσταντινουπόλεως πατριάρχην, ἄρα ὁ Κωνσταντινουπόλεως μόνος ἔχει προνόμιον τοὺς τῶν ἄλλων πατριαρχῶν ἐπισκόπους καὶ κληρικοὺς καὶ μητροπολίτας κρίνειν καὶ λύειν αὐτῶν τὰς ἀμφισβητήσεις. ἕπεται δὲ καὶ τρίτον ἄτοπον, τὸ τοὺς ἄλλους πατριάρχας παντελῶς εἴργεσθαι τοῦ κρίνειν τοὺς αὐτοῖς ὑποκειμένους

[1] cod. ἀπὸ.

καὶ μᾶλλον εἶναι μείζονα τὴν αὐθεντίαν τῶν ἐξάρχων αὐτῶν, εἴπερ ἢ αὐτοὶ μέλλουσι δέχεσθαι τὰς ἐκκλήτους ἢ ὁ Κωνσταντινουπόλεως.

Ὅπως παντὶ τρόπῳ τὸ προνόμιον ἐξῃρημένον τῷ Κωνσταντινουπόλεως σῴζεται διά τε τοῦ παρόντος ιζ' κανόνος καὶ διὰ τοῦ θ'.

XVIII **195**. V (къ *φατριάζοντες*) Ἑταιρίας συνιστάντες, ἀλληλοβοηθείας κατασκευάζοντες.

XXI. **196**. V Περὶ ἱεροκατηγόρων.

XXII. **197** V Περὶ τῶν ἁρπαζόντων κληρικῶν τὰ τῶν ἐξοδευόντων ἐπισκόπων διαφέροντα.

XXIV. **198**. V (къ началу) Ὡς τά γε μὴ κατὰ γνώμην τοῦ ἐπισκόπου μὴ μένειν.

XXV. **199**. V_1 Ὅτι ὁ μὲν κανὼν ἐντὸς γ' μηνῶν φησιν, ἡ δὲ διάταξις ἓξ μῆνας [1] λέγει. Ven.

XXVI. **200**. V_1 Περὶ ἐκκλησιαστικῆς προσόδου καὶ περὶ οἰκονόμων.

XXVIII (къ *μητροπολίτας μόνους*). **201**. V Τὸ "μόνους" πρόσκειται, ἐπειδὴ οἱ ἀπὸ Μακεδονίας καὶ πρὸς τοῖς Ἰλλυριοῖς [2] καὶ ἔτι τῆς [3] Θεσσαλίας καὶ Ἀττικῆς καὶ Πελοποννήσου καὶ Παλαιᾶς Ἠπείρου καὶ τῶν ταύτῃ [4] ἐθνῶν ὑπὸ Ῥώμην τὸ [5] τηνικαῦτα ἐτέλουν. Ven.

202. L Τὸ πλέον. τὸ "μόνους" πρὸς ἀντιδιαστολὴν ἐτέθη τῶν ἐπισκόπων· κατ' οὐδὲν γάρ φησι ἐπικοινωνήσει ταῖς ἐκείνων χειροτονίαις ὁ Κωνσταντινουπόλεως.

203. Ven. (къ *τὰ ἴσα πρεσβεῖα*) Τὰ ἴσα φησίν. ὥστε τὸ ἐφεξῆς εἰρημένον "δευτέραν μετ' ἐκείνην", καὶ εἴ που ἄλλοθεν γέγραπται τὸ δευτερεύειν, οὐ τῇ τιμῇ τῶν πρεσβείων χρὴ νοεῖν (οὕτω γὰρ ἂν αὐτὸς ἑαυτῷ διεμάχετο ὁ κανών), ἀλλὰ τὸ δεύτερον τῷ χρόνῳ ἀκουστέον· καὶ τὸ ἀληθὲς οὕτως ἂν ἔχοι, καὶ ὁ κανὼν ἕξει τὸ μὴ ἀναιρεῖν ἑαυτόν, εἴπερ δὴ ἡ βασιλεία εἰς ἴσον ἄγει τὰς δύο καθέδρας, ἡ ζημιωθεῖσα ταύτην κατὰ τὸν ἱερὸν τοῦτον κανόνα ἐζημιώθη δηλονότι καὶ τὴν ἰσότητα.

204. P (къ *ὑπὸ τοῦ προειρημένου ἁγιωτ. θρόνου τῆς κατὰ* КП...) Ζήτει ἑκάστου, Ἐφέσου καὶ ἄλλω(ν).

205. L Ἐνταῦθα τὴν ἀφορμὴν ἔλαβον οἱ πατέρες ἀπὸ τοῦ β' καὶ γ' κανόνος τῶν ρν'· πλέον δέ τι δεδώκασι τῷ Κωνσταντινουπόλεως θρόνῳ,

[1] ἐντὸς ἓξ μηνῶν Ven. [2] Ven. καὶ Ἰλλυρίων. [3] Ven. проп. ἔτι τῆς. [4] Ven. ταύτης. [5] Ven. ὑπὸ τὸν Ῥώμης.

τὰς χειροτονίας τῶν ἐν ταῖς ἐπαρχίαις μητροπολιτῶν, ἑκουσίως αὐτῷ χειρίσαντες ἑαυτούς, πρότερον ὑπὸ τῶν τῆς ἐπαρχίας ἐπισκόπων καὶ τῶν [1] ἐπὶ τούτῳ προσκεκλημένων πλησιοχώρων ἐπισκόπωνκα τὰ τὸ - -[2] τοῦ ϛ′ κανόνος τῆς ἐν Σαρδικῇ συνόδου χειροτονουμένων.

XXIX (= изъ дѣянія о Фотіи и Евстафіи). **206**. V (къ словамъ Анатолія) Ὥστε ἀναντιῤῥήτως [3] ἐπίσκοποι μὲν οἱ ἀναιτίως ἐκβληθέντες, ἵνα μὴ διὰ δικαιοσύνην λέγω, ἀνάξιοι δὲ καὶ μυρίας καταδίκης [4] ὑπεύθυνοι οἱ τοῖς θρόνοις τούτων ἐπεισφθαρέντες.

207. L_1 (къ словамъ Пасхасина и Лукинсія) Ὅτι ἕτεροι κανόνες καὶ ποιοῦσι τοῦτο ἐκ προστάγματος συνοδικῆς ψήφου.

Къ правиламъ Сардикскаго собора.

въ заглавіи. **208**. L (къ *ἐν Σαρδικῇ*) Ἡ Σαρδικὴ πόλις ἐστὶ Μυσίας τῆς νῦν Βουλγαρίας, ἥτις ἐγχωρίως Τράλιτζα λέγεται.

въ предисловіи. **209**. L (послѣ *τὰ ὑποτεταγμένα*) Οἱ πατέρες σν′.

I. **210**. V (къ началу словъ Осія) Περὶ τοῦ μὴ τὴν ἥττονα παραιτεῖσθαι καὶ πρὸς μείζονα ἐπιπηδᾶν παροικίαν.

211. Ath. Σχόλιον. Καλῶς καὶ ἀξίως τῆς τῶν ὁρισάντων ἱερότητος ὁ ἱερὸς καὶ ἅγιος κανὼν τὰς μεταθέσεις ἐκώλυσε· καὶ γὰρ τὴν ἀνίερον ἐπιθυμίαν τῶν τὴν μετάθεσιν ἐπιζητούντων καὶ πρὸς τὴν παράλογον μετάθεσιν [5] τῶν τῇ ἐπιθυμίᾳ τούτων κατανευόντων ἀπηγόρευσε τοῦτο ⟨τὸ⟩ πρᾶγμα ὁ ἱερὸς κανὼν καὶ τὸ ἐπιτίμιον ὥρισεν βαρὺ καὶ φρικτόν. μετάθεσιν δὲ τὴν κατὰ χρείαν ἐκκλησιαστικὴν γινομένην καὶ ἀντιμισθίαν τῶν πόνων καὶ τῶν ἱδρώτων, οὓς οἱ πολλάκις μετατεθέντες ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας ὑπέμειναν, οὔτε ὁ κανὼν ἀποκωλύει, οὔτε τὸ πρᾶγμά ἐστι κατακεκριμένον. καὶ ἵνα τὰ λοιπὰ ἐάσω πάντα, ὅσα ἐξ ἀρχῆς καὶ ἀπὸ τῆς τοῦ κανόνος θέσεως τοιαῦτα γέγονεν, αὐτὸν εὑρίσκομεν τὸν κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστὸν καὶ θεὸν τὴν τοιαύτην φιλοτιμίαν ἤτοι μετάθεσιν χαριζόμενον· πρωτόκλητος γὰρ ἀποστόλων αὐτοῦ καὶ μαθητὴς Ἀνδρέας, ἀλλ’ ὁ ἀδελφός, ὃν ἐκεῖνος προσήγαγε τῷ σωτῆρι, κορυφαῖός ἐστι τῶν ἀποστόλων καὶ θεμέλιος τῆς ἐκκλησίας, καὶ τὰς κλεῖς τῆς βασιλείας τῶν οὐρανῶν ἐμπιστεύεται. οὐχ ἁπλῶς οὕτως, ἀλλὰ διὰ τὸ ἔντονον

[1] cod. τῶ. [2] два слова не разобраны мною. [3] cod. ἀναντιρρή [4] слѣдовало бы ожидать: μυρίαις καταδίκαις. [5] cod. κατανέσιν.

καὶ διανεστικὸν [1] καὶ γοργὸν καὶ παῤῥησιαστικὸν τῆς γνώμηςΠαῦλος ὁ ἁγιώτατος ἀπόστολος, καίτοι μηδὲ ἰδὼν ἐν σαρκὶ τὸν Χριστὸν καὶ θεὸν ἡμῶν, τοσαύτης ἔτυχεν παρὰ τοὺς ἄλλους φιλοτιμίας καὶ (ἵνα οὕτως εἴπω) μεταθέσεως, ὥστε καὶ εἰς τρίτον οὐρανὸν ἡρπάγη καὶ τὰ ἄῤῥητα ἐκεῖ ἐξεπαιδεύθη μυστήρια [2]. διὰ τί; ὅτι ἔμελλεν, ὡς αὐτός φησι, καὶ κοπιᾶν ὑπὲρ τοὺς ἄλλους καὶ ἐξ ἀνατολῆς μέχρι δυσμῶν κηρύσσειν τὸ εὐαγγέλιον [3].

II. **212**. V Τίς ὥρισται καταδίκη τοῖς αὐθαδῶς ἐπιπηδῶσιν τοῖς ἐκκλησιαστικοῖς θρόνοις.

213. Ven. Ξένον καὶ ἐναντίον τοῖς κανόσι τὸ μηδὲ [4] ἐν τῇ ἐξόδῳ κοινωνίας ἀξιοῦσθαι [5]. Ath. P [6].

III. **214**^{a}. L Πότε δύναται ἐπίσκοπος ἀπὸ τῆς ἰδίας ἐπαρχίας εἰς ἑτέραν διαβαίνειν.

214^b. L_1 Ὅτι οὐ δύναται ἐπίσκοπος ἀπὸ τῆς ἰδίας ἐπαρχίας εἰς ἑτέραν διαβαίνειν καὶ διὰ τί.

215^a. L Ὅτι οὐ δύναται ἐπίσκοπος πρὸς συνεπίσκοπον διαδικαζόμενος ἀφ' ἑτέρας ἐπαρχίας ἐπισκόπους ἐπικαλεῖσθαι ἐπιγνώμονας· τοῦτο γὰρ ὕβρις. ἐκκλήτου δὲ παρακολουθούσης, ἀνανεοῦται ἡ κρίσις, αὐτῶν τῶν κρινάντων ἐξαιτουμένων διὰ γραμμάτων ἀπὸ τοῦ πατριάρχου δοθῆναι τῆς ἐκκλήτου τοὺς διαγνώμονας ἐκ τῶν γειτονούντων ἐπισκόπων· ἐφ' ὧν, εἰ καὶ πάλιν καταδικασθῇ, τὰ ἅπαξ κεκριμένα μὴ ἀναλύεσθαι. ταῦτα περὶ τυχόντων, ἐπὶ δὲ καθαιρέσει χώρα πάλιν ἐκκλήτου καὶ χρεία καὶ πατριαρχικῆς ἀκροάσεως.

215^b. L_1 Ὅτι οὐ δύναται ἐπίσκοπος ἀπὸ ἑτέρας ἐπαρχίας λαμβάνειν [7] ἐπίσκοπον ἐπιγνώμονα. V_1.

216. V_1 (къ второй половинѣ) Ποῦ φησι τὴν ἐκκλησίαν γυμνάζεσθαι καὶ ἀνανεοῦσθαι τὴν δίκην καὶ πῶς.

IV. **217**^{a}. Ven. Ἐκ τούτου τοῦ κανόνος εἴρηται τὸ Ῥωμαϊκῆς ἀλαζονείας· καὶ τοῦτον ὡς τῆς ἐν Νικαίᾳ συνόδου πάλαι προβαλόμενοι ὑπὸ τῆς ἐν Καρθαγένῃ συνόδου ἑάλωσαν κακουργίας οἱ τότε τῶν Ῥωμαίων προεδρεύοντες, ὡς αὐτὸ δηλοῖ τὸ συνοδικὸν προοίμιον τῆς ἐν Καρθαγένῃ. πλὴν οὐδὲ οὗτος αὐτοῖς ὁ κανὼν πλέον τι χαρίζεται τῶν ἄλλων κανόνων. κἂν ἀλόγως τοῦτο δοκῶσιν· οὐ γὰρ ἁπλῶς πάντα καθ-

[1] διαλεκτικόν? [2] Кор. XII 2—4. [3] сравн. Римл. XV 18—19. [4] μήτε Ath. [5] ἀξιοῦσθαι κοινωνίας P Ath. [6] другой рукой въ P. [7] καλεῖν. V_1.

αιρεθέντα φησὶν ἄδειαν ἔχειν ἔκκλητον διδόναι τῷ Ῥώμης (οὕτω γὰρ ἂν ἦν ἄντικρυς πολεμοῦσα τῇ οἰκουμενικῇ συνόδῳ ἡ ἐν Σαρδικῇ), ἀλλὰ τὸν ὑπὸ τῶν γειτνιαζόντων ἐπισκόπων καθῃρημένον, καὶ πάλιν τὸν ὑπὸ τῆς αὐτῆς ἐνορίας· οὔτε γὰρ μητροπολίτου συνέλευσιν, οὔτε ἐξάρχου ἤτοι πατριάρχου συμπαρουσίαν συμπεριλαμβάνει· ὥστε, ἔνθα ἄν τις τούτων παρῇ καὶ οὐδὲ ὑπὸ τῶν γειτνιώντων οὐδὲ ἐν τοῖς γειτνιῶσιν ἡ τοῦ ἐπισκόπου κατάκρισις συστῇ, οὐδεμία ὑπὸ τοῦ Ῥώμης ἀναψηλάφησις ἔσται, οὔτε τῷ προκειμένῳ κανόνι περιληφθήσεται· οὗτος γὰρ προδήλως περὶ μόνων τῶν ἐν τῇ Δύσει ἐκπεφώνηται, διότι καὶ ὁ Ὅσιος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ ἐκθέμενοι τοὺς κανόνας ἐκ τῶν μερῶν ἐκείνων ἦσαν· ἐν γὰρ τῇ Ἀνατολῇ οὐδαμῶς μέχρι νῦν συνήθεια τοιαύτη κεκράτηκεν.

217[b]. V_1 Πρόδηλον περὶ τῶν ἐν Δύσει ἐπισκόπων... οὐ κεκράτηκεν.

V. **218**. Ven. Ὁ παρὼν κανὼν τοῦ πρὸ αὐτοῦ δοκεῖ ἀπόκρισις εἶναι. V_1.

219. V_1 Τί φησι περὶ τῶν ὀφειλόντων ἀποσταλῆναι πρεσβυτέρων ἐκ προσώπου τοῦ πάπα.

VI. **220**. (къ *ἐξάρχου τῆς ἐπαρχίας*.) Ven. Τίνα καλεῖ ἔξαρχον.

221. L_1 Ὅτι οὗτος ὁ κανὼν οὐχ ὡς ἡ δ' σύνοδος τὸν πατριάρχην, τὸν μητροπολίτην δὲ καλεῖ ἔξαρχον.

222. Ven. (къ срединѣ) Ξένον καὶ ἐναντίον τοῖς ἄλλοις κανόσιν. V_1P[1].

223. V (къ концу) Περὶ καινουργήσεως ἐπισκοπῆς.

VII. **224**. V (къ *στρατόπεδον*) Στρατόπεδον, ἐν ᾧ τόπῳ βασιλεὺς διατρίβει, εἰώθασιν οἱ παλαιοὶ καλεῖν.

225. V (къ *προσῆκον ἐστὶν τοῖς πένησιν καὶ τοῖς λαϊκοῖς ἢ ταῖς χήραις συναίρεσθαι καὶ ἐπικουρεῖν*) Καὶ ποῦ νῦν τοῦτο, μακάριε Ὅσιε;

226. V (къ *ἐπειδὴ πολλάκις...*) Ἐπισημαντέον, ὅτι πᾶσιν ἀπροφασίστως τὸν ἐπίσκοπον ἐπικουρητέον, μηδὲν φιλοκρινοῦντα [2] περὶ τοῦ εἰ ἀδίκως ἢ δικαίως ὁ ἐπικουρίας δεόμενος πάσχει.

227. L_1 Περὶ τῶν προσφευγόντων τῇ ἐκκλησίᾳ φόβῳ περιορισμοῦ ἢ ἑτέρας μωρίας.

IX. **228**. Ven. Σκόπει, ὅσοι κανόνες (μικροῦ σύμπαντες) ταύτης τῆς συνόδου μερικὰς καὶ οὐ καθολικὰς κανονίζουσι πράξεις καὶ μόνας ἐκεί-

[1] другой рукой въ P. [2] cod. φυλοκρινοῦντα.

νας, αἳ τῇ ἐνορίᾳ τοῦ Ῥωμαϊκοῦ ἀνήκουσι θρόνου· ὥστε. εἴ τις ἐθέλοι σώζεσθαι καὶ τιμᾶσθαι τούτους. οὐκ ἂν αὐτοὺς εἰς καθολικὸν ἐκβιάσαιτο σχῆμα (οὐδὲ γὰρ αὐτὰ τὰ πράγματα ἐᾷ), ἀλλ' ἐξ ὧν περὶ τοῦ Ῥώμης οὗτοι διορίζουσι. δύναται καὶ ἕκαστος τῶν λοιπῶν τεσσάρων πατριαρχῶν ὑπὲρ τῶν εἰς τὴν ἰδίαν τῆς πατριαρχίας ἐνορίαν πραττομένων κεχρῆσθαι αὐτοῖς· οὐ γὰρ ὑπὸ τὸν Ῥωμαϊκὸν θρόνον ἁπάσας ἀναφέρουσι τὰς διοικήσεις (τοῦτο γὰρ ἀδύνατον καὶ ξένον τῶν ἐκκλησιῶν), ἀλλ' ἐξ ὧν τὰ ἐν τῇ Ῥωμαϊκῇ ἐνορίᾳ διοικούμενα εἰς τὴν τοῦ Ῥώμης προέδρου ἀναφέρουσι γνώμην, ἐκ τῶν αὐτῶν ἐστιν ἐννοεῖν. ὅτι καὶ τὰς ἐν ἑκάστῃ τῶν ἄλλων πατριαρχῶν διοικήσεις εἰς τὴν τοῦ οἰκείου πατριάρχου ἀνάγεσθαι διδόασι κρίσιν· οὕτω γὰρ καὶ ἡ ἐν Βενετάλοις σύνοδος τὸν κανόνα τοῦτον ἐνόησεν.

X. **229**. Σχόλιον. [1] Ὅτι τοὺς πλουσίους καὶ τοὺς ἀπὸ τῆς ἀγορᾶς σχολαστικοὺς ὁ κανὼν οὗτος κωλύει. διὸ οὐδὲ δοκεῖ καθόλου μάχεσθαι τοῖς ἀποστολικοῖς κανόσι καὶ ταῖς οἰκουμενικαῖς συνόδοις, αἷς ἡ ἀπὸ λαϊκῶν τῶν μὴ προσφάτως πιστευσάντων ἀκώλυτός ἐστι πρόοδος παντελῶς εἰς τὴν τῶν ἐπισκόπων τιμήν· τὸ μέντοι γε "νεόφυτον" ἀλόγως ἅμα καὶ ἐναντίως τοῖς πρὸ αὐτοῦ κανόσιν ἐνόησε· νεόφυτος γὰρ καὶ τῷ θείῳ ἀποστόλῳ καὶ τοῖς ἄλλοις ἡμῶν πατράσι καὶ τοῖς κανόσιν οὐχ ὁ νῦν εἰς κλῆρον [2] παραγγέλλων, ἀλλ' ὁ τὴν χριστιανῶν πίστιν ἄρτι περιλαμβάνων καὶ νοεῖται καὶ λέγεται. πλὴν καὶ ἐπισκόποις ὅτι οὗτος ὁ κανὼν οὐχὶ ἐπισκόπους μόνον μὴ γίνεσθαι ἀπὸ λαϊκῶν ἀνοήτως προσδιορίζεσθαι συγχωρεῖ, ἀλλ' οὐδὲ πρεσβύτερον ἢ διάκονον, ὅπερ ταῖς ἁπανταχῇ ἐκκλησίαις ὁρᾶται ἀπρόσδεκτον, πλὴν εἰ μή τις πάλιν ἐπὶ μόνων τῶν ἀπ' ἀγορᾶς πλουσίων καὶ σχολαστικῶν τὸν κανόνα διαλαβεῖν λέγει, βοήθειαν [3] αὐτῷ ἐπινοῶν τινα. ἄλογος δὲ [4] παντελῶς καὶ ἡ τῆς παραιτήσεως αἰτία· διὰ γὰρ τὴν δοκιμασίαν τῶν τρόπων δεῖν φησιν παραλαμβάνεσθαι τὸν χρόνον, ὥσπερ οὐ κακὸν (?) τὸν λαϊκὸν ἐξεταζόμενον δοκιμὴν παρασχεῖν βίου. καίτοι εἰ μὴ δυνατὸν δοκιμασίαν βίου [5] δοῦναι λαϊκόν, οὐδ' ἁπλῶς εἰς κλῆρον ὅλως χρὴ παραγγέλλειν τοῦτον· ἀδύνατον γάρ, ὡς ἡ ἄνοια [6]

[1] у Pitra нѣтъ слова: σχόλιον, которое взято изъ Hergenröther, Photius III 118^{45}. [2] εἰς κληρικὸν Pitra, εἰς κληρικοὺς Hergenröther въ томъ же сп.; я предпочелъ чтеніе по Amerbach. (у Bevereg., 200), такъ какъ сравн. ниже въ строкѣ 30: εἰς κλ... παραγγέλειν. [3] Pitra: βοηθῇ. [4] Pitra: [ὡς] ἄλογος καί. [5] βίου добавл. изъ Hergenr. [6] такъ Hergenr.; а у Pitra: πρόνοια.

βούλεται, δοκιμὴν βίου λαϊκοῦ λαμβάνειν· ἀδόκιμον δὲ πῶς ἄν τις εἰς τάξιν ἄγοι κληρικῶν; ὥστε ἢ ὅλως ἀπείργει τὸ παρὸν νόημα, μηδένα καθίστασθαι κληρικόν, ἢ τἀναντία ὧν ἐπαγγέλλεται κατασκευάζει, τοὺς ἀνεξετάστους βίους τῶν λαϊκῶν κληρικῶν ὑποβάλλεσθαι τάξει ἀξιοῦν, εἰ μή τι ἄρα νομιεῖται δεῖν τοὺς εἰς κληρικοὺς μέλλοντας εἰσιέναι κληρικοὺς [1] χρηματίζειν πρότερον· εἰς τοῦτο γὰρ ἡ ἄνοια τελευτᾷ. (изъ Pitra II 649 по Monac. 122 л. 113). Ven.*

230. V Καὶ ποῦ οἱ νῦν σχεδιάζοντες τοὺς ἱεροὺς βαθμούς, μᾶλλον δὲ ἐπὶ πολλῇ συγγνώσει τῶν ἀτόπων καὶ ἀσελγῶν τὸ τῆς ἱερωσύνης ἄχραντον παρεχόμενοι;

XI. **231.** V Ὅτι οὐ χρὴ ἐπίσκοπον τῆς ἑαυτοῦ παροικίας ἄνευ εὐλογωτάτης αἰτίας ἐπὶ τρεῖς ἑβδομάδας ἀπολιμπάνεσθαι.

232. V_1 Τί φησιν ἐπὶ λαϊκοῦ μὴ κοινωνοῦντος ἐπὶ τρεῖς κυριακάς.

XII. **233.** V Ἐνταῦθα σαφέστερον περὶ τῶν τριῶν ἑβδομάδων.

XIII. **234.** V Εἰ ἐπὶ τῶν ἱερωμένων οὕτω, τί ἐπὶ τῶν λαϊκῶν;

XIV. **235.** Οὗτος ὁ κανὼν ἐναντίος τοῖς πρὸ αὐτοῦ καὶ συγχύσεως καὶ σκανδάλων αἴτιος· τὸ μὲν γὰρ καταδικασθέντα ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου τὸν κληρικὸν ἐπὶ τὸν κοινὸν ἀνατρέχειν μητροπολίτην ἀκόλουθον καὶ κανονικόν· τὸ δ', ἂν μὴ παρῇ ἐκεῖνος, εὐθέως [2] εἰς ἕτερον καταφεύγειν καὶ κύριον καὶ ἐξεταστὴν ποιεῖν τοῦ ἐπισκόπου αὐτοῦ τὸν μηδέποτε ἐξουσίασαντα αὐτοῦ (ἡ γὰρ τῆς πράξεως ἔτασις δηλονότι τὸν πεπραγότα συνεξετάζει καὶ ὑπόδικον ποιεῖ) πῶς οὐ παράλογον καὶ παρεκτικὸν θορύβου καὶ ταραχῆς καὶ τῆς εὐταξίας λυμαντικόν; (изъ Pitra II 649 по Monac. 122 л. 311). Ven.*

XV. **236.** V Περὶ τοῦ, ὅτι οὐ δεῖ ἐπίσκοπον ἐκ τῆς μὴ προσηκούσης αὐτῷ παροικίας λαμβάνειν κληρικὸν ἐπὶ προχειρήσει βαθμοῦ ἄνευ γνώμης τοῦ παρ' ᾧ ἐστι κληρικός.

XXI. **237.** V (къ началу словъ Гауденція) Μακάριος εἶ, ἅγιε τοῦ θεοῦ, καὶ αἰωνία ἐν ἀγαθοῖς ἡ τιμία μνήμη σου.

Къ правиламъ Кароагенскаго собора 419 г.

въ дѣяніи 419 г. **238.** (послѣ предисловія, передъ словами Аврелія) Σχόλιον περὶ τῆς Ἀφρικῆς. Ἰστέον, ὅτι τῆς Ἀφρικῆς μοῖραί

[1] такъ Hergenr.: а у Pitra: κληρικόν. [2] по Hergenröther (l. c. 118[44]): εὐθύς, и далѣе: καταφυγεῖν и ἐξέτασις (вм. ἔτασις).

εἰσιν ὀκτώ· πρώτη μέν, ἣν ἡ Ἀλεξάνδρεια καὶ ἡ Πεντάπολις Λιβύης καὶ ἡ προσαγορευομένη Ἔρημος Τριπολῖτις συμπληροῦσι· δευτέρα δὲ ἡ τοῦ Βυζακίου· τρίτη δὲ ἡ τῆς Καρχηδόνος, ἡ καὶ Προκονσουλαρία ἤτοι Ἀνθυπατικὴ καλουμένη. εἶτα Νουμιδίαι δύο, Παλαιά τε καὶ Νέα. ἔπειτα Μαυριτανίαι τρεῖς, Καισαρησία ἡ καὶ Καισαρειανὴ καλουμένη παρὰ τοῦ τῆς μητροπόλεως αὐτῆς ὀνόματος, Σιτιφησία, ἧς ἡ μητρόπολις Σιτιφῆνσα, Τιγγιανὴ ἡ τὴν μητρόπολιν ἔχουσα Τίγγιν. (изъ Bevereg., II, annot., 202). Ven. *

239. Ven. (къ *Φαυστῖνος ἐπίσκοπος Πικένου τοῦ λαοῦ τοῦ Ποτεντίνου*) Σχόλιον. Πικένος πόλις Ἰταλίας, λέγεται δὲ καὶ θηλυκῶς Πίκενος, ὡς Ἀρίμηνον καὶ Ἀρίμηνος· ὁ οἰκήτωρ Πικενὸς καὶ Ἀριμηνός, ὡς τοῦ Αἴκανος Αἰκανός. Ποτεντία πόλις Ἰταλίας. λέγεται δὲ καὶ Ποτεντός· ὁ πολίτης Ποτεντῖνος, ὡς Πικεντία Πικεντός, Πικεντῖνος.

240. V (къ словамъ Фаустина: *τινὰ μὲν τάξει καὶ κανόνι κρατοῦνται, τινὰ δὲ συνηθείᾳ ἐτυπώθη*) Ὅτι καὶ ἡ συνήθεια ἐγγράφου δύναμιν ἀποφέρεται.

241. P (къ словамъ Данiила нотарiя) Σχόλιον [1]. Οὐκ ἔστι τῆς ἐν Νικαίᾳ συνόδου ὁ κανών, ἀλλὰ τῆς ἐν Σαρδικῇ πέμπτος· ὅθεν καὶ οἱ τῆς παρούσης συνόδου ἔφησαν αὐτὸν ἀγνοεῖν, καθὰ δηλοῦσιν αἱ περὶ τούτου αὐτῶν [2] ἀποφάσεις. Ven.

242. L_1 (къ словамъ Зосимы) Ὅρα τὸ ψεῦδος ἐκ θυρῶν τῆς Ῥωμαϊκῆς ἅμα κακουργίας καὶ ἀλαζονείας.

243. P (послѣ *Αὐρήλιος ἐπίσκοπος εἶπεν· Ἀναγνωσθήτω...*) Σχόλιον. Τὰ λοιπὰ τοῦ κομμονητωρίου.

244. Ven. (къ *Ἀλύπιος ἐπίσκοπος Ἀδαγαθέων πόλεως*) Τῶν τῆς Ἀδαγάθης πόλεως οἰκητόρων.

245. L_1 (къ словамъ Алипiя) Ἀδύνατον γὰρ ἦν τὸ πεπλασμένον ὡς γεγενημένον ἐν τοῖς γνησίοις εὑρεῖν.

246. Ven. (къ словамъ Осiя) Τῆς ἐν Σαρδικῇ συνόδου κανὼν ιδʹ.

247. Ven. (къ *Αὐγουστῖνος ἐπίσκοπος τῆς ἐκκλησίας Ἱππῶνος τῆς Νουμιδικῆς χώρας*) Ἱππῶνες εἰσὶ δύο τῆς Νουμιδίας πόλεις, ὁ μὲν Βασιλικός, ὁ δὲ Διάῤῥυτος ἐπονομαζόμενοι.

[1] σχόλιον проп. Ven. [2] τούτων Ven. (вм. τούτου αὐτῶν).

IV. **248**[a]. Ven. Ἐντεῦθεν παρὰ Ῥωμαίοις ἐκράτησε τὸ μηδὲ πρεσβυτέρους νομίμοις ὁμιλεῖν γάμοις· ἐκδηλότερον δὲ καὶ διὰ τῶν ἐφεξῆς γίνεται κανόνων, ὡς ἡ σύνοδος αὕτη τὸν ἔνθεσμον γάμον τῶν πρεσβυτέρων καὶ διακόνων ἐκώλυσεν, ἀντιφθεγγομένη τοῖς συγχωροῦσιν ἔχεσθαι τοὺς ἱερωμένους τῶν ἤδη συστάντων νομίμων γάμων. ἔστι δὲ εἰπεῖν, ὅτι οὐχ ἁπλῶς τοῦτό φασιν, ἀλλὰ κατὰ τὸν καιρὸν μόνον τῆς ἱερουργίας καὶ τῆς ἄλλης ἱερᾶς ὑπηρεσίας ἀπέχεσθαι τῶν γαμετῶν αὐτῶν αὐτοὺς βούλονται, ὅπερ ὅσιον καὶ τῷ θείῳ Παύλῳ καθόλου προδιατυπωθέν.

248[b]. V Ὅτε δηλονότι ταῦτα ψηλαφᾶν καιρός, οὐ διὰ παντός· ἀντιφθέγγεται γὰρ τοῦτο τοῖς συγχωροῦσι τοὺς ἱερωμένους τῶν ἤδη νομίμων γάμων ἀντέχεσθαι.

249. Ven. Ζήτει τὸν κε′ κανόνα καὶ τὸν ο′ καὶ τὸν ιγ′ τῆς ϛ′ συνόδου.

V. **250.** V_1 Περὶ ἀπληστείας.

VI. **251.** Ven. (къ словамъ Аврелія) Ζήτει τὸν μγ′ κανόνα.

252[a]. Ven. Τοῦτο τῆς Ῥωμαϊκῆς ἐστι ἴσως αἴτιον παραφυλακῆς· κρατεῖται γὰρ παρ' αὐτῶν. ἀλλ' ἡ κορῶν καθιέρωσις καὶ παροραται, εἰ καὶ μὴ παρὰ πάντων, μήποτε δὲ χρίσματος ποίησις. οὐχὶ τὸ χρίειν φησὶ τοὺς ἄρτι φωτιζομένους, ἀλλὰ τὸ ἱερουργεῖν αὐτὸ τὸ ἅγιον μύρον· τοῦτο πανταχοῦ κεκράτηκεν ὑπ' οὐδενὸς πρεσβυτέρου τελεσιουργηθῆναι τολμώμενον. σκόπει δέ, ὅτι οὐκ ἔστι πρεσβύτερον μετανοοῦντι συγγινώσκειν, οὐδὲ ἀπολύειν τὸν ὑπὸ ἐπιτίμιον ὄντα ἄνευ τῆς γνώμης τοῦ κατὰ τὸν τόπον ἐπισκόπου.

252[b]. V (къ словамъ Фортуната) Ὅτι οὐκ ἐξὸν πρεσβυτέρῳ μετανοοῦντι συγγινώσκειν, ἀλλ' ἐπισκόπῳ.

252[c]. V (къ словамъ всѣхъ) Σκόπει, ὅτι ὑπὸ ἐπιτίμιον ὄντα τινὰ ἀπολῦσαι οὐκ ἐξὸν πρεσβυτέρῳ ἄνευ τῆς τοῦ ἐπισκόπου γνώμης, τοῦ κατὰ τὸν τόπον δηλονότι καθεστῶτος.

IX. **253.** V (къ словамъ Августина) Ὅτι οἱ τοὺς ὑφ' ἑτέρου ἀφορισθέντας δεχόμενοι καὶ αὐτοὶ τῷ ἴσῳ ἐγκλήματι ἐνέχονται.

X. **254.** V (къ *κεχωρισμένως*) Ἀντὶ τοῦ ἰδιαζόντως.

XI. **255.** V (къ словамъ Феликса) Περὶ τοῦ πόσοι ἐπίσκοποι ἐξετάσαιεν ἔγκλημα ἐπισκόπου, καὶ πόσοι πρεσβυτέρου, καὶ πόσοι διακόνου.

256. V (къ словамъ всѣхъ епи. въ концѣ) Ὅτι οἱ τὰ ἑαυτῶν ἀρνούμενοι ἰδιόχειρα καθαιροῦνται.

XV. **257.** V (къ *ἐκλήπτορες*) Ἐκμισθωταί, ἤτοι ὑποβάλλοντες ἑαυτοὺς ἀλλοτρίοις τέλεσιν ἐφ᾽ ὡρισμένῳ λόγῳ· οἷόν τι ποιοῦσι καὶ οἱ δημοσιῶναι καὶ τελῶναι, οὓς νῦν κουμερκιαρίους φασίν.

258. V Ὅτι εἴκοσι καὶ πέντε ἐτῶν δεῖ τὸν διάκονον εἶναι τῷ καιρῷ τῆς χειροτονίας.

259. Ven. Τίνες οὐκ ὀφείλουσιν θεώρια κοσμικὰ ἢ [1] ἐκτελεῖν ἢ θεωρεῖν. V_1.

XVIII. **260.** P Ὁ κανὼν περιέχει· Ἵνα οἱ χειροτονούμενοι διδάσκωνται τὰ τῶν συνόδων. Ἵνα τοῖς σώμασι τῶν νεκρῶν ἡ εὐχαριστία μὴ δοθῇ. Ἵνα τοὺς τελευτήσαντας μὴ βαπτίζωμεν. Ἵνα καθ᾽ ἕκαστον ἐνιαυτὸν σύνοδος γένηται. Ath.

261. P Ὅτι τοῖς σώμασι τῶν τελευτησάντων οὐ δίδοται εὐχαριστία.

262. P Ὅτι οὐ δεῖ βαπτίζειν τοὺς τελευτήσαντας.

263. V (къ началу) Ὅτι μέχρι τοῦ ἐλεγχθῆναι τὸ ἔγκλημα οὐκ ὀφείλει ὁ κατηγορούμενος ἱερεὺς ἀτιμοῦσθαι.

264. V (къ концу) Τοῦτο καὶ οἱ ἑκατονπεντήκοντα καὶ οἱ χλ᾽ ὥρισαν πατέρες.

XIX. **265.** V (къ концу) Προείρηκε γάρ, ὅτι εἰ μετακαλούμενος ἐκτὸς ἀσχολίας ἐντὸς μηνὸς μὴ ἀπαντήσοι, ἔνοχος ἔσται, καὶ ὅτι τὰ πρόσωπα τῶν κατηγορούντων ἀνεπίληπτα δεῖ εἶναι.

XXV. **266.** Ven. Ζήτει τὸν δ᾽ κανόνα καὶ τὸν ο᾽.

XXVI. **267.** V Περὶ τῶν ἀλόγως ἐκποιουμένων τὰ ἐκκλησιαστικά.

XXX. **268.** V Ἐὰν δὲ ὁ πρὸς κατηγορίαν βιαζόμενος βασιλεὺς ᾖ, τί προστάσσετε, ἅγιοι πατέρες;

XXXVII. **269.** Ven. Ξένον. περὶ ἀπαρχῆς μέλιτος καὶ γάλακτος τί φησιν ὁ κανών [2]. PV_1.

270. V Σημείωσαι· φοβερόν.

XXXIX. **271.** Ven. Ξένον καὶ ἐναντίον τοῖς ἄλλοις. P

XLI. **272.** Ven. Ζήτει τῆς ἐν τῷ τρούλλῳ συνόδου κανόνα κθ᾽.

273. Ven. Ξένον. τί φησιν, ἐν ᾗ ἡμέρᾳ ἐπιτελεῖται τὸ κυριακὸν δεῖπνον, καὶ εἴ τις δειλινὸν τελευτήσει.

[1] ἢ проп. V_1. [2] οὗτος добавл. V_1.

(къ *παράθεσις*) **274**^{a}. Ven. Παράθεσις ἰδία τῶν εὐχῶν πρὸς τὸν θεὸν σύστασις καὶ οἷον οἰκείωσις τοῦ τελευτήσαντος, οἱ δὲ τὴν ἐκκομιδὴν ἤτοι τὸ ἐξόδιον εἶπον.

274^{b}. V Ἀντὶ τοῦ ἐκκομιδή, ἐξόδιον ἤτοι παραστάσιμον.

275. Ath. Ὅτι τοῦτο νῦν μᾶλλον δὲ ἐκ παλαιοῦ ἀκοῇ ἐστιν φορητόν. πολλῷ δὲ μᾶλλον οὐδ᾽ ἡ πρᾶξις οἶδεν θεμιτόν· οὐδεὶς γὰρ οὐδαμοῦ ἐν οὐδεμιᾷ ἡμέρᾳ μετὰ βρῶσιν ὁρᾶται τὰ θεῖα μυστήρια ἤτοι τὴν εὐχαριστίαν ἱερουργῶν, ὥστε ἔξεστιν συνιδεῖν, ὅτι πολλὰ καὶ τῶν ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ παλαιῶν ἐθῶν κατὰ προκοπὴν ἐντελεστέραν εἰς τὸ εὐσεβέστερον ἐκαινίσθη.

XLIII. **276**. V (къ *ἀψίδος*) Τοῦ προπυλαίου.

XLVII. **277**. V_1 Περὶ τῶν παθῶν τῶν ἁγίων μαρτύρων.

XLVIII. **278**. V (къ *μονοτονίας*) Μονότονος ὁ αὐθάδης καὶ ἰδιόῤῥυθμος.

XLIX. **279**. L (къ словамъ Аврелія: *Ὁ ἀρχαῖος τύπος φυλαχθήσεται...*) Ὁμοφωνεῖ τῷ δ' κανόνι τῶν ἐν Νικαίᾳ.

LX. **280**. V къ словамъ Аврелія: *πρεσβύτερος πρὸς ἐπισκοπὴν δυσχερῶς εὑρίσκεται ἐπιτήδειος*) Ὅτι μὴ πᾶς πρεσβύτερος ἤδη καὶ εἰς ἐπισκοπὴν ἄξιος προβιβάζεσθαι.

LVI. (къ *ἀποδρυφθείη*) **281**^{a}. Ven. Ληφθείη, ἀποσπασθείη, ἀλλοτριωθείη.

281^{b}. V Ἀντὶ τοῦ ἀποσπασθείη, ἀφαιρεθείη, ἀλλοτριωθείη.

282. V (къ *πολλαὶ ἐκκλησίαι οὕτως ὑπάρχουσιν ἔρημοι, ὡς μηδένα διάκονον, κἂν ἀγράμματον, ἔχειν εὑρίσκεσθαι*) Εἰ μὴ πολλὴ ἀκρίβεια ἐσκοπεῖτο, οὐκ ἂν ἦν τοσαύτη ἀπορία τῶν χειροτονουμένων.

LVIII (къ *οἱ ναοὶ αὐτῶν οἱ ἐν τοῖς ἀγροῖς καὶ ἐν ἀποκεκρυμμένοις τόποις χωρὶς τινος εὐκοσμίας καθεστῶτες παντὶ τρόπῳ κελευσθῶσι καταστραφῆναι*). **283**^{a}. V Ὡς οἵ γε μετ' εὐκοσμίας οὐχ οὕτως. ἢ τοῦτο μὲν οὐδὲν εἰς παραίτησιν τοῦ κακοῦ, ἀλλ' ἐκ παντὸς ἐκριζωτέον, μηδὲν εἰς φειδῶ τοῦ κάλλους συντελοῦντος αὐτοῖς. ἀλλὰ καὶ τοὺς δοκοῦντας λανθάνειν δι' ἀπρέπειαν καὶ ἐν ἀγροῖς συναναιρετέον· οὐ γὰρ τῷ κάλλει φθονοῦντες τὰ ἑλληνικὰ ἐδαφίζομεν, ἀλλὰ τῆς πλάνης καὶ ἀπωλείας τὰ ὑπομνήματα ὀλοθρεύομεν.

*

283[b]. Ven. Ὅτι οὖν τοὺς μετ' εὐκοσμίας οὐ καθαιρετέον, (ἀλλ') ἐκ παντὸς ῥιζωτέον, μηδὲν αὐτοῖς συμβαλομένου πρὸς φειδὼ τοῦ κάλλους. καὶ οὐ τούτους καταστρεπτέον μόνον (τοῦτο γὰρ πρόδηλον), ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐν ἀγροῖς ὄντας καὶ δοκοῦντας λανθάνειν δι' ἀπρέπειαν συναιρετέον· οὐ γὰρ τῷ κάλλει φθονοῦντες τὰ ἑλληνικὰ ἐδαφίζομεν, ἀλλ' ἁπλῶς τῆς πλάνης καὶ ἀπωλείας ὑπομνήματα ὀλοθρεύομεν.

LIX. **284.** V (къ *αἰτίαν ἀποστολικῷ δικαίῳ τῷ ταῖς ἐκκλησίαις ἐπικειμένῳ γυμνάσαι*) Τουτέστιν, εἰ μὴ ὑπ' ἐκκλησιαστικοῖς ἀρέσκοιντο κρίνεσθαι.

LXIII. **285.** V (къ концу) Σκόπει, ὡς τῷ θελήματι τοῦ βαπτιζομένου ἐπιτρέπει τὸ ἐπιτήδευμα.

LXVII. **286.** Ven. Ζήτει τὸν ξθ' καὶ τὸν πη' περὶ Μαξιμιανιστῶν.

LXIX. **287.** Ven. Ζήτει τὸν πη' κανόνα.

288. Ven. (къ *τούτων κοινωνίαν*) Τῶν Μαξιμιανιστῶν δηλονότι.

LXX. **289.** V (къ *κατὰ τοὺς ἰδίους ὅρους*). Ἡνίκα τι ἱερὸν διαπράττοιντο.

290. V (къ *ὅπερ εἰ μὴ ποιήσαιεν... ἀποκινηθῶσι τάξεως*) Καὶ τίς αὐτοὺς ἐλέγξαι δυνήσεται;

LXXIV. **291.** Ven. Ὅτι ἐντὸς ἐνιαυτοῦ φησιν ἐναντίως τοῖς ἄλλοις. P.

LXXV. **292.** P Καὶ τοῦτο ἐναντίον μέν, ὡραῖον δέ. Ath.

LXXVI. **293.** P Ξένον ἐπιτίμιον. Ath.

LXXXVI. **294.** V (къ концу заглавія: *τοὺς μεταγενεστέρως χειροτονηθέντας μὴ τολμᾶν ἑαυτοὺς προτιμᾶν τῶν προτέρων*) Τοῦτο μέχρι νῦν ἐν Ῥώμῃ φυλάττεται.

295. V (къ концу словъ Валентина) Τοῦτο περὶ τῶν μὴ ἐν τάξει καθισταμένων θρόνων ἐκ τῶν ὑπεσταλμένων τῷ κανόνι τούτῳ ἐξηκριβώσαμεν.

XCIII. **296.** Ven. (къ среднѣ *κομμονητόριον τοῖς ἀδελφοῖς Θεασίῳ...*) Περὶ τοῦ νόμου τοῦ κωλύοντος αἱρετικὸν χειροτονεῖν. P.

297. Ven. Ὡς βιβλίον α' τοῦ κώδικος τίτλ. ε' διάτ. β' καὶ γ' καὶ η' καὶ κ'. τῶν δὲ βασιλικῶν βιβλ. α' τίτλ. α' κεφ. ιζ' καὶ ιη' καὶ κβ' καὶ κη'.

298. Ven. Βιβλ. α΄ τοῦ κώδικος τίτλ. ε΄ διάτ. δ΄ καὶ ε΄. τῶν δὲ βασιλικῶν βιβλ. α΄ τίτλ. α΄ κεφ. ιθ΄ καὶ κ΄.

XCVII. **299**. Ven. (къ концу) Πριμωσσός, ὡς Βηρωσσός, ὄνομα κύριον. καὶ Κερωσσὸς ὄνομα πόλεως.

CI. **300**. L_1 Τίς ἦν ἡ διχόνοια.

CIII. **301**. Ven. Ζήτει τοῦ γ΄ τίτλου κεφ β΄.

302. Ven. Ἱκεσίας μὲν λέγει τὴν ὅλην λειτουργίαν, προοίμια δὲ τὰς ἄχρι τῶν θείων εὐαγγελίων ψαλμῳδίας καὶ ἀναγνώσεις τῶν ἱερῶν Γραφῶν· παραθέσεις δὲ τὰς ἐπὶ τοῖς κατηχουμένοις εὐχάς, δι' ὧν παρατίθενται τῷ θεῷ· ἐπιθέσεις δὲ χειρὸς τὰς μετὰ τὴν ἐπὶ τοῖς μετανοοῦσιν εὐχὴν γινομένας αὐτοῖς εὐλογίας τῇ τοῦ ἐπισκόπου χειρί.

303. Ven. Ζήτει τὸν ἐν Λαοδικείᾳ κανόνα ιθ΄.

CVIII. **304**. V (къ заглавію, гдѣ упоминаются Пелагій и Келестій) Ἔοικε τῶν Δονατιστῶν εἶναι τοὺς ταλαιπώρους τούτους ἀνθρώπους, καὶ τούτους πάλιν οὐκ ἄλλους, ἢ τοὺς Μασσαλιανοὺς ἤτοι Εὐχίτας ὑπάρχειν, ἐπεὶ καὶ ἡ Μασσαλία τῶν ἀντιπέρας ἐστὶ Λιβύης πρὸς τοῖς μέρεσι Ῥώμης τῆς ἐπὶ Θύμβριδι. Ven.

CIX. **305**. V Ὅτι ὁ Ἀδὰμ θνητὸς ἀπὸ θεοῦ οὐκ ἐγένετο.

CX. **306**. P Τὸ λεγόμενον ὡραῖον.

CXII. **307**. V (къ *ἡ ἀγάπη ἐκ θεοῦ ἐστιν*) Οὐαὶ ἡμῖν, μακάριοι πατέρες· τὴν γὰρ ἀγάπην ἡμῶν μὴ ἐχόντων (ἐψύγη γὰρ ἀφ' ἡμῶν τῷ πληθυνθῆναι τὴν ἀνομίαν [1]), τί ἂν ἄλλο περιλείπεται, ἀλλ' ἢ τοῦ γλυκυτάτου ἠλλοτριῶσθαι Χριστοῦ; εἴπερ κατὰ τὸν μακάριον Ἰωάννην "ὁ τὸν ἀδελφὸν μὴ ἀγαπῶν ψεύστης ἐστίν" [2]. οὐδεὶς δὲ ψεύστης ἐν τῇ ἀληθείᾳ ἕστηκεν, ὅ ἐστι θεός. ἀλλὰ καὶ ἔριδος ἐν ἡμῖν οὔσης καὶ διχοστασίας, οἷς τὸ κατ' ἀνθρώπους προσευπορεῖται περιπατεῖν [3], τὸ τῆς Χριστοῦ χάριτος πνεῦμα μακρὰν ἀφ' ἡμῶν καὶ τὸ γνώρισμα τῶν ἑαυτοῦ μαθητῶν· καὶ τί τὸ ἐντεῦθεν; τὸ πονηρὸν τοῦτο συμπέρασμα μὴ εἶναι Χριστοῦ. τί γάρ φησι Παῦλος; "εἰ δέ τις πνεῦμα Χριστοῦ οὐκ ἔχει, οὗτος (οἴμοι τῆς πονηρᾶς ὑπεξεργασίας) οὐκ ἔστιν αὐτοῦ" [4].

308. Ven. Ἐν τῷ Ϟγ΄ ψαλμῷ. ἐν τῇ α΄ καθολικῇ τοῦ ἁγίου ἀποστόλου Ἰωάννου.

[1] cod. ἀνμίαν. [2] Іоанн. IV 20. [3] I Кор. III 3. [4] Римл. VIII 9.

309. Ven. Ἐν τῇ α′ καθολικῇ ἐπιστολῇ τοῦ ἁγίου Ἰωάννου γέγραπται οὕτως· "ἐὰν εἴπωμεν... ἁμαρτίας". (= I Іоанн. I 8—9).

310. Ven. Ἐν τῇ καθολικῇ ἐπιστολῇ τοῦ ἁγίου Ἰακώβου γέγραπται οὕτως· "μὴ πολλοὶ διδάσκαλοι... ἅπαντες". (= Іакова III 1—2).

311. Ven. Ἐν τῷ γ′ τῶν Βασιλειῶν μετὰ τὸν ἀπαρτισμὸν τοῦ ναοῦ προσευχόμενος ὁ Σολομὼν τῷ θεῷ, φησὶ πρὸς τοῖς ἄλλοις καὶ τοῦτο· ὅτι "οὐκ ἔστιν ἄνθρωπος, ὃς οὐχ ἁμαρτήσεται". (= III Царствъ VIII 46).

312. Ven. Ἐν τῇ βίβλῳ τοῦ ἁγίου Ἰὼβ κατὰ τὴν τελευταίαν πασῶν διάλεξιν, ἥ ἐστι τοῦ Ἐλιού, γέγραπται οὕτως παρὰ τοῦ θεοῦ· "ἐν χειρὶ παντὸς ἀνθρώπου κατασφραγίζει, ἵνα γνῷ πᾶς ἄνθρωπος τὴν ἑαυτοῦ ἀσθένειαν". (= Іова XXXVII 7).

CXIV. **313.** P Ὡραῖον πρόβλημα.

CXV. **314.** Ven. Ἐν τῷ ρμβ′ ψαλμῷ.

315. P Ὅλον ὡραῖον.

CXX. **316.** V (къ *ὥστε ἄλλων... ἐπέλθωσιν τοῖς λαοῖς*) Ἀντὶ ἄνευ κριτῶν διαγνώσεως.

CXXII. **317.** V (къ *μονοτονίαν*) Αὐθάδειαν, σκληρότητα.

318. V (къ *ἐκκαλεῖσθαι*) Ἀντὶ τοῦ παραιτεῖσθαι, ἀποπέμπεσθαι τὸ παρὸν κριτήριον, ἐφ' ἕτερον δὲ ἤτοι μεῖζον ἢ ἔλαττον ἐφέσιμον δίκην ποιεῖν.

CXXV **319.** Ven.. Ζήτει τὸν ρλη′ κανόνα καὶ τὸν κη′.

320. Ven. Ὅρα τὸν Ῥωμαϊκὸν τῦφον ὑπὸ τῆς συνόδου ταύτης πατούμενον· οὐκ ἐᾷ γὰρ τοὺς κεκρυμμένους ἐν ταῖς τῆς Καρχηδόνος ἐνορίαις ἐπὶ τὸν Ῥώμης διαπερᾶν ἢ ἄλλοθεν καὶ τῆς κρίσεως ἐπιδιδόναι ἔκκλητον.

CXXVI. **321.** (къ загл.: *Περὶ παρθένων μικρῶν ει ἔτι μὴν καλυπτέον αὐτάς*) Τοῦτο δέ ἐστιν, ὡς οἶμαι, τὸ περιβαλεῖν τὸ σχῆμα.

CXXVIII. **322.** V Περὶ τῶν ἀπὸ κοινωνίας, ὅτι οὐκ ὀφείλει κατηγορεῖν, οἷος ἂν ᾖ.

CXXXI. **323.** Ven. Ὅτι ἐντὸς ιδ′ ἐνιαυτῶν οὐ χρὴ προσδέχεσθαι μάρτυρα.

CXXXII. **324.** Ven. Ὅτι οὐ πιστεύεται μόνος ὁ ἀκούσας τὸ ἔγκλημα, ἀρνουμένου τοῦ ἐξαγγείλαντος.

325. Ven. (къ *σκινδαλμῷ*) Τουτέστιν τῇ λεπτολογίᾳ. γράφεται δὲ καὶ τῷ σκανδαλισμῷ.

CXXXIII. **326.** V (къ *τῷ αὐτῷ ἐπισκόπῳ*) Τῷ ἀλόγως ἠφορικότι καὶ λόγον οὐκ ἔχοντι τοῦ ἀφορισμοῦ ἀποδοῦναι.

327. V (за текстомъ) Θεῖός τις ἀνὴρ Αὐρήλιος οὗτος καὶ τοῦ ἐπισκόπου ὀνόματος ἄξιος, δυνατός, εἴ τίς ποτε καὶ ἄλλος, βίῳ καὶ λόγῳ καὶ ἔργῳ κρατῦναι (οὐχ ἧττον ἢ λόγῳ) τὴν εὐαγγελικὴν πίστιν τε καὶ ἀκρίβειαν.

CXXXIV (= посл. къ папѣ Бонифацію). **328.** Ven. (къ *πεμφθεῖσι τῷ αὐτῷ τῆς προσκυνητ. μνήμης...*) Πῶς ἡ τῆς Ῥώμης οἴησις καθαιρεῖται.

329. Ven. (къ *ἐὰν ἐπίσκοπος κατηγορηθῇ...*) Ζήτει τὸν ἐν Σαρδικῇ κανόνα ε'.

330. Ven. (къ *ἐὰν δὲ καὶ πιστεύσῃ...*) Ζήτει τὸν ἐν Σαρδικῇ κανόνα ιδ'.

331. Ven. (къ *ἵνα ἢ κυρωθῇ ἢ διορθωθῇ...*) Πῶς ὁ Ῥώμης ἀθετεῖται.

332. Ven. (къ *ὑπομενοῦμεν τὸν τύφον τοῦτον...*) Πῶς ὁ Ῥωμαϊκὸς πατεῖται τῦφος.

CXXXVIII (= посл. къ папѣ Келестину). **333.** Ven. (къ *προενοήσατο, κύριε ἀδελφέ...*) Περὶ τοῦ Ῥώμης.

334. Ven. (къ *οὐδεμιᾷ τῶν πατέρων συνόδῳ ὁρισθὲν εὑρίσκομεν...*) Περὶ τοῦ Ῥώμης.

Къ отвѣтамъ 84 епископовъ собора Карѳагенскаго 256 г. при Кипріанѣ.

Въ посланіи къ Януарію. **335.** V (къ *χειροτονοῦντες [ὅπερ διὰ παντὸς ἀσφαλῶς κρατύνομεν]*) Χειροτονοῦντες ἀντὶ τοῦ ψηφιζόμενοι· χειροτονεῖν γάρ φασιν οἱ παλαιοὶ τὸ ψηφίζεσθαι.

336. V (къ *ἡ ἁγία γραφὴ προμηνύουσα λέγει· ἀπὸ ὕδατος ἀλλοτρίου ἀπέχεσθε καὶ ἀπὸ πηγῆς ἀλλοτρίας μὴ πίετε*) Οὐκ ἀκριβῶς μὲν τὸ παροιμιακόν, οὐδὲ διὸ λέλεκται· εὐσήμως μέντοι καὶ καταλλήλως παρείληπται.

337. V (къ *πῶς δὲ εὔξηται ὑπὲρ τοῦ βαπτισθέντος οὐχ ἱερεὺς...*) Χρησιμώτατον ἡμῖν πάνυ τὸ παρόν, εἴ τι καὶ ἄλλο.

338. V (къ *δοκιμάζειν [γάρ ἐστι τὸ τῶν...]*) Ἀντὶ τοῦ δόκιμον ἀποφαίνειν.

VI. **339**. V (къ цитатѣ изъ Притчей Соломона у Немесіана) Εὐθυβόλως μὲν ταῦτα τὰ γραφικὰ οὐ πρὸς τὰ παρόντα φέρεται, κατὰ καιρὸν δὲ μεταληφθέντα θαυμασίαν τινὰ τὴν ἡδονὴν ἐμποιεῖ.

XXV. **340**. V Ὡραῖον πάνυ.

XXVIII. **341**. V Καὶ τοῦτο παρεγκλίνει μὲν τοῦ πρὸς ὃ εἴρηται, ἐπιδεξίως μέντοι ἐνταῦθα μετεχειρίσθη.

342. V Κἀγὼ φημί, εἰ τὸ πνεῦμα Χριστοῦ ἐστι τὸ ἐλευθεροῦν ἡμᾶς καὶ εἰς υἱοθεσίαν καλοῦν κατὰ τὴν τοῦ θείου ἀποστόλου φωνὴν ("ἐξαπέστειλεν γάρ "φησί" τὸ πνεῦμα τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ εἰς τὰς καρδίας ἡμῶν κρᾶζον· ἀββᾶ ὁ πατήρ. ὥστε οὐκέτι εἶ δοῦλος ἀλλ' υἱός" [1]), τούτου δὲ ἀλλότριοι οἱ αἱρετικοί, ὡς μὴ δυνάμενοι ὀρθῶς λέγειν ἐν πνεύματι ἁγίῳ κύριον Ἰησοῦν (ὁ πνεῦμα Χριστοῦ μὴ ἔχων κατ' αὐτὸν τὸν μακάριον Παῦλον μηδὲ ὢν αὐτοῦ [2]), πῶς ἂν οὖν, ὃ μὴ ἔχει, δοίη ἢ ἐλευθερώσῃ καὶ εἰς υἱὸν θεοῦ οἰκειώσεται διὰ τοῦ βαπτίσματος; ὥστε βαπτιστέον ἄνωθεν τῷ ἀληθινῷ βαπτίσματι, ἵνα τὸ τῆς ἀληθείας ἐπαναπαύσηται πνεῦμα τῷ βαπτιζομένῳ καὶ τὸ πλάνον αὐτὸν καταλείποι πνεῦμα. ὃ τῶν αἱρετικῶν [3] τὸ πεπλανημένον βάπτισμα προεξένησεν.

XXXVIII. **343**. V Κἀγὼ πάλιν λέγω, τοῦ Παύλου φάσκοντος "ὅσοι εἰς Χριστὸν ἐβαπτίσθητε, Χριστὸν ἐνεδύσασθε" [4], τῶν δὲ αἱρετικῶν ψευδοχρίστων κατὰ τὴν τοῦ κυρίου φωνὴν ὄντων, οἳ μετὰ τὴν αὐτοῦ παρουσίαν ἐληλύθασιν [5], πῶς οἷόν τε τὸν ψευδόχριστον αἱρετικὸν τὸν ἀληθῆ Χριστὸν ἐνδιδύσκειν, εἰ μή που οὐδεμία διαφορὰ τοῦ ἀληθοῦς Χριστοῦ πρὸς ψευδόχριστον; ἐπεὶ οὖν οὐ δύναται ὁ ψευδόχριστος τὸν ἀληθῆ ἀμφιάζειν Χριστὸν διὰ τοῦ παρ' αὐτῷ δῆθεν βαπτίσματος, ἀναβαπτιζέσθω ὁ τῷ ἀληθινῷ Χριστῷ ἀπὸ τῶν ψευδοχρίστων προσερχόμενος, εἰ μέλλοι τῇ τοῦ ἀληθινοῦ ποιμένος συναγελάζεσθαι ποίμνῃ· ὡς γὰρ μία θύρα, δι' ἧς μόνης εἰσέρχεσθαι δυνατόν, ὅς ἐστι Χριστός, οὕτως καὶ μόνον ἓν βάπτισμα, τὸ αὐτὸν ἀμφιεννύον Χριστὸν τὸν βαπτιζόμενον.

[1] Галат. IV 6. [2] Римл. VIII 9. [3] cod. αἱρετικόν. [4] Галат. III 27. [5] Мѳ. XXIV 24; Мрк. XIII 22.

XLIX. **344**. V Καὶ τοῦτο τοῖς καθεστῶσιν ὁμόλογον πρᾶγμα.

LXIII. **345**. V (къ концу) Οὗ δὲ καὶ λόγος κατηγορεῖ κανόνος καὶ συνήθεια παρὰ τὸ προσῆκον ἐλέγχει, τούτῳ συνηγορῶν τις ἄρα τῶν ἐπιγινωσκόντων θεὸν ἢ τῆς ἀνθρώπων ἄξιός ἐστι συναναστροφῆς εἶναι;

LXXVII. **346**. V Πάλιν φημί, εἰ εἰσαγωγὴ τῆς εἰς Χριστὸν πίστεως αἵρεσις ἢ σχίσμα, στοιχείσθω παρ' ἡμῖν καὶ τὸ βάπτισμα τούτων, ὡς πάντων ἐποφειλόντων διὰ τῶν στοιχειωδεστέρων ἐπὶ τελεώτερα προβαίνειν· εἰ δὲ οὐ μόνον εἰσαγωγή, ἀλλὰ καὶ ἐκτροπὴ καὶ παντελῶς ἀλλοτρίωσις καὶ ἀποστασία, σημειούσθωσαν προσιόντες τῷ τοῦ ἁγίου βαπτίσματος φωτί, ἵνα μηδὲν ᾖ κοινὸν φωτὶ πρὸς σκότος μηδὲ συμφώνησις Χριστοῦ πρὸς Βελίαρ.

LXXXI. **347**. V Ὡραῖον πρὸς τὰ παρόντα.

Къ правиламъ Трулльскаго собора 691 г.

Въ προσφωνητικός. **348**. Ven. (къ *εὐθετίζοντες*) Εὐθετίζειν ἐστὶ τὸ εὖ διατίθεσθαι καὶ κοσμεῖν καὶ καλλωπίζειν, ἐνταῦθα δὲ ἐπὶ τοῦ εὖ διδάσκειν εἴληπται.

349. Ven. (къ *...πᾶν τὸ ἀρχόμενον ἐκ τρικυμίας...*) Ἐν τῷ τέλει τῆς πρὸς Φιλιππησίους.

350. V (къ *βασιλέως Κωνσταντίνου*) Τὸν εἰς ἐπώνυμον τὸν πώγωνα λαχόντα λέγει.

351. Ven. (къ *ἀποστολικῶς εἰπεῖν...*) Τῆς πρὸς Ἑβραίους. τῆς Ἐξόδου.

352. Ven. (къ *τὰ θεῖα προστάγματα...*) Τῆς πρὸς Ἑβραίους. τῶν Παροιμιῶν.

I. **353**. P Κἀντεῦθεν ἔστιν καταφωρᾶσαι τῆς τῶν Εἰκονομάχων κακουργίας τὸ ἀναίσχυντον, οἳ διαβάλλειν τὴν τῶν προκειμένων ἱερῶν κανόνων ἐπιχειροῦντες ἀκρίβειαν (διότι κατὰ τῆς ἐκφύλου αὐτῶν αἱρέσεως ἵστανται), φασὶ τοὺς ἐκθεμένους αὐτοὺς τῇ τῶν Μονοθελητῶν ἐνισχημένους νόσῳ καὶ κατὰ τῆς ἁγίας καὶ οἰκουμενικῆς ἕκτης ὑπογράψαι συνόδου. οἱ δέ, ὡς ὁρᾶν ἐστι παντί, ταύτην λαμπραῖς ταῖς φωναῖς ἀνακηρύττοντες, τοὺς ὑπ' αὐτῆς κατακριθέντας ἅμα τῷ αὐτῶν ἐναγεστάτῳ φρονήματι ταῖς αὐταῖς εὐθύναις καὶ ἀραῖς ὑποφέρουσιν. ἔοικεν οὖν τὸ γένος τοῦτο τῶν Εἰκονομάχων τοὺς προγόνους Εὐτυχιανιστὰς καὶ Διοσκό-

ρους μιμεῖσθαι. ὥσπερ ἐκεῖνοι τοὺς ἐν τῇ ἁγίᾳ καὶ οἰκουμενικῇ δ' συνόδῳ, ὅτι τὴν αὐτῶν λύσσαν ἐξεκκλησίασαν, τὰ Νεστορίου φρονεῖν καίτοι λαμπρῶς αὐτὸν ἀναθεματίσαντες συκοφαντῆσαι ἀπηναισχύντησαν, οὕτως καὶ οἱ ἐκείνων ὡς ἀληθῶς γνήσιοι μαθηταὶ καὶ ἀπόγο(νοι) τοὺς ἱεροὺς τούτους καὶ ἁγίους ἄνδρας λαμπρῶς μετὰ τῆς ἁγίας καὶ οἰκουμενικῆς ἕκτης συνόδου κατὰ τῶν δυσσεβῶν Μονοθελητῶν ἀνδραγαθιζομένους ἐκείνων τούτους φρονεῖν οὐκ ἐρυθριῶσι λοιδορούμενοι. ὅμοιόν τι τοῖς Ἰουδαίοις ποιοῦντες. οἳ τὸν κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστὸν τῶν δαιμονίων τὸ πλάσμα καθαίροντα δαιμόνιόν τε ἔχειν οὐκ ἔφριττον ἐξυβρίζοντες [1] καὶ ἐν τῷ ἄρχοντι τῶν δαιμονίων καθαίρειν αὐτοῦ τὴν δυναστείαν ἤτοι ἀπελαύνειν τὰ δαιμόνια τερατευόμενοι οὐκ ἐνεκαλύπτοντο. Ath. *

II. **354.** (къ *προέδρων*) Ἰστέον, ὅτι ἐπὶ τοῦ ἱερομάρτυρος Κυπριανοῦ Καλχηδόνος ἐπισκόπου περὶ τῶν ἐξ αἱρέσεων τῇ ὀρθοδόξῳ πίστει προσερχομένων ἐζητήθη, εἰ δεῖ τούτους βαπτίζειν ἢ μή. καὶ συνελθόντες ὀγδοήκοντα καὶ τέσσαρες ἐπίσκοποι δεῖν ἔκριναν βαπτίζεσθαι πάντας τοὺς ἐξ οἱασοῦν αἱρέσεως προσιόντας, τῶν δὲ μετέπειτα θεοφόρων πατέρων ἡμῶν οὐχ ἁπλῶς τοῦτο καὶ ἀδιορίστως παραδεξαμένων, ἀλλὰ διαστειλάντων καὶ εἰπόντων τινὰς βαπτίζειν ἁρμόδιον καί τινας μή, ὁ τοῦ θείου Κυπριανοῦ κανὼν ἐκράτυνε παρὰ μόνοις τοῖς Ἄφροις, παρ' οἷς καὶ ἐξεφωνήθη· τούτους γὰρ λέγει νῦν προέδρους, ἤτοι πρωτεύοντας, διὰ τὸ εἶναι, τῶν Ἄφρων ἴδιον τὸν τοῦ πρώτου θρόνου ἐπίσκοπον [πρόεδρον] ἤτοι πρωτεύοντα καλεῖν· ὅθεν καὶ τὸ α' κεφάλαιον τοῦ α' τίτλου τοῦ παρόντος νομοκανόνου τῶν ἐν Ἀφρικῇ πριβάτων τουτέστι πρωτευόντων μέμνηται, καὶ οἱ κανόνες τῶν ἐν Καρθαγένῃ ὅ τε ιζ' καὶ λθ' φανερῶς τοῦτο δηλοῦσι. (изъ Pitra II 651 по Monac. 122 л. 61). Ven.*

355. V Περὶ τοῦ ἀπαρασαλεύτους φυλάττεσθαι παντὶ τρόπῳ τοὺς ὑπὸ πάντων τῶν ἁγίων πατέρων ἐκτεθέντας ἱεροὺς κανόνας.

356. V (къ *εἰ δέ τις ἀλῷ κανόνα τινὰ...*) Τοῦτό φησιν, ὃν ἄν τις παραβαίῃ κανόνα, τοῖς αὐτοῦ ἐκείνου τοῦ παραβεβασμένου αἱρεῖσθαι ἄξιος ἐπιτιμίοις· οἷον, εἰ ἱεροσυλίας, ἱεροσύλου ἐπιτιμίοις, εἰ πορνείας, πόρνου, καὶ εἴ τι λοιπὸν τῶν ὑπὸ τὸ πονηρὸν ἐργαστήριον ἐνθεωρουμένων ὑγιῶς κατακρίνοιτο.

[1] cod. ἐξυβρίζειν τες.

III. **357**. V (къ *μηδαμῶς ἐν ἑτέρῳ μείζονι...*) Ὅτι ἐστὶν ἐχόμενον τῆς ἤδη λαχούσης ἱερᾶς τιμῆς ἀπρόκοπον μεῖναι.

358. V_1 Περὶ ἱερέων καὶ κληρικῶν. Ath.

IV. **359**. V_1 Περὶ πρεσβυτέρων συγγινομένων μοναστρίαις.

VI. **360**. Ven. Πότε ὀφείλουσιν λαμβάνειν οἱ εἰς κλῆρον προερχόμενοι.

VII. **361**. V Περὶ τιμῆς πρεσβυτέρων.

VIII. **362**. V_1 Περὶ προκλησίας.

XI. **363**. V Ἀπηγόρευσεν Ἰουδαίοις συλλούεσθαι ἢ ὑπὸ τούτων νοσοῦντας ἰατρεύεσθαι.

XII. **364**. V (къ *οὐκ ἐπ' ἀθετήσει ἢ ἀνατροπῇ τῶν ἀποστολικῶς προνενομοθετημένων...*) Ὅπου δὲ καὶ κανόνος παράβασις, καὶ παλαιοῦ ἔθους ἀνατροπή, καὶ τῆς ἐπὶ τὸ χεῖρον προόδου ἀρχή, τί φατε, ἅγιοι;

365. Ven. (къ *φησὶ γὰρ ὁ θεῖος ἀπόστολος...*) Τῆς πρὸς Κορινθίους α'.

XIII. **366**. Ven. (къ *τοῦ ἀποστόλου διδάσκοντος...*) Τῆς πρὸς Ἑβραίους, τῆς πρὸς Κορινθίους α'.

367. Ven. Ἐν τῷ γ' κανόνι καὶ τῷ δ' καὶ τῷ κε' καὶ τῷ ο'.

XIV. **368**. Ven. Ὁ τῶν ἐν Νεοκαισαρείᾳ, ὁ τῶν ἐν Χαλκηδόνι, ὁ τῶν ἐν Καρθαγένῃ.

XV. **369**. V Περὶ τοῦ ποίας ἡλικίας χρὴ χειροτονεῖν.

XVII. (= обычн. сч. XVI). **370**. V (къ *ἑπτὰ διακόνους μὴ ἐπὶ τῶν τοῖς...*) Ἀλλὰ φαίην ἂν ἐγώ, πατέρες μακάριοι, ὡς εἰ τραπεζῶν διάκονοι μόγις εὕρηνται τὸν ἑπτὰ ἀριθμὸν συμπληροῦντες, πόσον εἰκὸς σπανίζειν εἰς θείων μυστηρίων ὑπηρεσίαν τοὺς ἀπροσκόπως τὴν ἱερὰν διακονίαν μετιέναι ὀφείλοντας, ὡς μήτε ἡλικίας ὑστερεῖν μή⟨τε⟩ σεμνότητος τρόπων ἐνδεῶς ἔχειν; οἷς, εἰ προσέχοιμεν, οὐκ ἄν, οἶμαι, οὐδὲ τρεῖς ἢ τέσσαρας ἑκάστῃ ἐκκλησίᾳ εὐπορήσομεν καθιστᾶν, μὴ ὅτι γε πλῆθος τοσοῦτον, οἳ καὶ τὸν τῶν διακονουμένων ὑπερπέσειαν ἀριθμόν, ὡς ἐφ' ἡμῶν ἐστι νῦν καθορᾶν, ἀφθονίᾳ πνευματικῶν χαρισμάτων ὡς ἔοικεν.

XIX. **371**. V (къ *χρὴ τοὺς τῶν ἐκκλησιῶν προεστῶτας... διδάσκειν*) Κάλλιστος ὁ νόμος, ἀλλὰ τί ἂν διδάξωμεν, μηδ' αὐτῶν τῶν ἱερῶν βιβλίων ἐπιστάμενοι τὰ ὀνόματα;

372. V (къ *ἢ λόγους οἰκείους συντάττοντες*) Οὐδὲν τοῦτο

εἴθε δύναμις παρῆν· μικρὸν γὰρ ἂν ἐφρόντισα τῆς ἐπτιμίας τοῦ πνεύματος, οὐ στενοχωρουμένης τῆς χάριτος ἐπὶ τὸ τρανότερον τὰ τισὶ τῶν πρὸ ἡμῶν ἀσαφέστερον προκεχειρισμένα ἐξαπλοῦν τε καὶ ἀναπτύσσειν ἐπὶ τὸ εὔληπτόν τε καὶ εἰσυνοπτότερον· εἰ γὰρ μὴ τοῦτο, ἐχρῆν μηδὲ τοὺς πρότερον πατέρας τοῖς πρὸ αὐτῶν ἐπικεχειρηκέναι, ἀλλὰ τοῖς ἤδη προσκαθημένους τε καὶ ἐναπομένοντας τοσαύτην ζημίαν ἡμῖν προξενῆσαι [1]· μήτε τοῦ χρυσοῦ Ἰωάννου τὰς τοῦ ἀποστόλου ἐξηγήσεις προσεκπονήσαντος, μὴ Κυρίλλου τὰς τῶν ἱερῶν προφητῶν, μηδ' ἄλλου, ᾧ τὸ τοῦ θείου πνεύματος δώρημα ἐπιτευκτικώτερον τῶν πρὸ αὐτοῦ παρέσχετο τὴν νέαν προενεγκεῖν οἷς τισι δὴ παράθεσιν καὶ σαφήνειαν, ἐπεὶ μηδὲ τὸ ἀνενδεὲς καὶ ἀμώμητόν τινι τῶν ἀνθρώπων εἰς τήνδε προσὸν κατείληπται.

XXI. **373.** V Εἰ τὴν ἁμαρτίαν μεμισήκασιν, δι' ἣν ἐξέπεσον τοῦ βαθμοῦ φησιν· εἰ γὰρ μετὰ τὴν ἔκπτωσιν ἐπιμένοιεν τῷ πάθει, τότε τῆς ἐπιτεθείσης ἐπιτιμίας ἀξιοῦσθαι.

XXIV. **374.** V (къ срединѣ) Οὐ κωλύεται κληρικὸς σεμνῷ γάμῳ παρεῖναι.

375. Ven. Τοῦ νδ' κανόνος τῶν ἐν Λαοδικείᾳ.

XXV. (къ *[ἀνανεοῦμεν] τὸν κανόνα*). **376.** V Κανὼν ὁ τῆς τριακονταετίας.

377. Ven. Τὸν ιζ' τῶν ἐν Χαλκηδόνι.

XXVI. **378.** Ven. Τὸν κζ' τοῦ μεγάλου Βασιλείου.

XXVIII. **379.** V_1 Τῆς ἐν Καρθαγένῃ κεφάλαιον μα'.

XXIX. **380.** V_1 Περὶ τοῦ κυριακοῦ δείπνου.

381. V (къ *ἐν τῇ τεσσαρακοστῇ τῇ ὑστέρᾳ ἑβδομάδι τὴν πέμπτην*) Ἦν ἡμῖν ἔθος μεγάλην πέμπτην καλεῖν.

XXX. **382.** P Ὅπερ ἐν ἄλλοις ἀποκωλύει, ἐν [1] τοῖς ἐθνικοῖς καὶ [2] ἐπιτρέπει. Ven.

XXXI. **383.** Ven. (къ *οἱ ἐν Καρθαγένῃ*) Ἐν τῷ λζ' κανόνι.

XXXIII. **384.** Ven. Ἐν τῇ πρὸς τοὺς χωρεπισκόπους ἐπιστολῇ τοῦ μεγάλου Βασιλείου καὶ τῷ ς' κανόνι τῶν ὑπομνηστικῶν τοῦ Θεοφίλου.

XXXVI. **385.** V (къ *φατρίας*) Φατρία τὸ σύνταγμά φησι, τὴν ἑταιρίαν, τοὺς ἐπὶ κακῷ συλλόγους, τὰ πονηρὰ ἐργαστήρια.

[1] cod. προξενίσαι, [2] τούτοις вставл. Ven. [3] καὶ проп. Ven.

XXXV. **386.** V (къ началу) Καλὸς [1] ὁ νόμος καὶ ἐπαινετός, εἰ μὴ τὸ δέμνιον τοῦ οἰχομένου καὶ τὸ βορδώνιον σὺν τῇ ἐφεστρίδι τοὺς τινὰς ἡμῶν ὑπολιχνεύοντα καὶ ἀνερεθίζοντα καταφρονεῖν τούτου ἀνέπειθεν.

387. V (къ *ὑπὸ παραφυλακὴν ἔστωσαν τοῦ κλήρου...*) Εἰ δὲ παρακοῆς τούτων τις ἁλῷ, τίνος ἄξιος καταδίκης; τοῦτο νομοθετήσατε, ἐπεὶ λόγῳ ἁπλῷ τίς τούτων ἀνέξεται; εἰ γὰρ τῶν τοῦ Χριστοῦ νόμων ἀλογοῦντες φωρῶνται, σχολῇ γ' ἂν ὑμῶν ἀνέξονται;

XXXVI. **388.** Ven. Τὸν γ' κανόνα. τὸν κη' κανόνα.

389. V_1 α' Ῥώμης. β' Κωνσταντινουπόλεως. γ' Ἀλεξανδρείας. δ' Ἀντιοχείας. ε' Ἱεροσολύμων.

XXXVIII. **390.** Ven. Τὸν ιζ' τῶν ἐν Χαλκηδόνι.

391. V Καὶ οὗτος ὁ κανὼν ἄδειαν δίδωσιν τοῦ καινίζειν ἐξ ἐπισκοπῆς βασιλεῖ μητρόπολιν.

XXXIX. **392.** V (къ *τὴν Νέαν Ἰουστινιανούπολιν*) Τὴν νῦν ἐν Κυζίκῳ Ἀρτάκην καλουμένην.

393. Ven. Ἐν τῷ η' κανόνι.

XL. **394.** Ven. (къ *ἔστω τοίνυν ὁ μέλλων...*) Τοῦτο φησὶν ὁ θεολόγος ἐν τῷ εἰς τὸ βάπτισμα λόγῳ.

395. P Ὡς ὁ ἅγιος Βασίλειος πλείονα τὸν χρόνον ὁρίζει. Ath.

396. Ven. (къ *ἐν γὰρ τῷ θείῳ ἀποστόλῳ...*) Ἐν τῇ πρὸς Τιμόθεον α'.

397. Ven. (къ *οἱ ἱεροὶ κανόνες...*) Ὁ ιε' κανὼν τῶν ἐν Χαλκηδόνι.

398. Ath. Κανὼν περὶ μοναχῶν καὶ μοναστριῶν.

XLI. **399.** V_1 Περὶ ἐγκλείστων.

400. V Περὶ τῶν ἐγκλείεσθαι ποθούντων μοναχῶν.

XLII. **401.** V_1 Περὶ ἐρημιτῶν.

XLIII. **402.** V_1 Περὶ ἀποταγῆς.

403. V Τίς ἡ δύναμις τοῦ μοναχικοῦ σχήματος.

XLIV. **404.** V_1 Περὶ μοναχῶν.

XLV. **405.** V Περὶ τύπου γυναικῶν ἀλογίστου τῷ τῶν μοναχῶν σχήματι προσερχομένων.

XLIX. **406.** Ven. Τὸν κδ' τῆς ἐν Χαλκηδόνι συνόδου.

[1] cod. καλῶς.

407. V Σκόπει ὡς τά γε ἄνευ τοῦ κατὰ τὸν τόπον ἐπισκόπου γινόμενα οὐδὲ μοναστήρια.

L. **408.** V_1 Περὶ λαϊκῶν.

LII. **409.** V Ὅτι καὶ ἐν τῇ τοῦ εὐαγγελισμοῦ ἡμέρᾳ ἐν ταῖς ἁγίαις νηστείαις τελεία γίνεται λειτουργία.

LIII. **410.** V Μανθανέτωσαν ἐντεῦθεν ἅπαντες τοὺς ἱεροὺς θεσμοὺς καὶ κανόνας σπουδὴν ἅπασαν ποιουμένους καὶ τὰ ἤδη τῷ βίῳ ὑποικουροῦντα περιτέμνειν καὶ ἀποκαθαιρεῖν κακά, οὐ τὰ μὴ ὄντα καινίζειν καὶ παῤῥησιάζειν· ὥστε καὶ συνόδους κατὰ τοῦτο συγκροτεῖσθαι ἐπ' ἀναιρέσει τῶν ἁμαρτανομένων, οὐκ ἐπ' ἀνατροπῇ τῶν τῆς πολιτείας βελτίστων ἐθῶν καὶ συστάσει τῶν ἐκφύλων καὶ ἀλλοδαπῶν παραδόσεων.

LIV. **411.** V (къ *δι' ὧν περιεκτικῶς...*) Ἐν οἷς φησιν ἡ τῆς ἀπειρημένης συγγενείας εἰς γάμον ἀνθρώπων στάσις, εἰ φωραθείη ἐν ἁμαρτήμασι γεγενημένη, τὰ τῶν μοιχῶν ἐπιτίμια δέξεται.

412. V (къ *ὑπὸ τὸν τῆς ἑπταετίας κανόνα*) Παρατετηρήσθω ἐκ τούτων, φημὶ δὴ τῶν τῆς ἑπταετίας κανόνων, ὡς ὀφειλέτης ἐστὶν ὁ τῷ τοσούτῳ ὑποκείμενος τῶν ἐτῶν ἀριθμῷ ἐπιτιμίοις ἀναντιῤῥήτως ἀφίστασθαι πρότερον τοῦ ἐπὶ τοῦτο τῆς ἐπιτιμήσεως προενεγκόντος μιάσματος.

413. L Τὸν οἰκείᾳ ἐξαδέλφῃ πρὸς γάμου κοινωνίαν συναπτόμενον, ἢ πατέρα καὶ υἱὸν μητρὶ καὶ θυγατρί, ἢ δύο κόραις ἀδελφαῖς πατέρα καὶ υἱόν, ἢ ἀδελφοῖς δυσὶ μητέρα καὶ θυγατέρα, ἢ ἀδελφοὺς δύο δυσὶν ἀδελφαῖς ὑπὸ τὸν τῆς ἑπταετίας πίπτειν κανόνα.

414. Ven. Ἐν τῷ Λευϊτικῷ, ἐν τῷ κγ' καὶ ξζ' καὶ ξη' καὶ οε' καὶ ος' καὶ οη' καὶ οθ' καὶ ἐν τῇ πρὸς Διόδωρον ἐπιστολῇ.

LVIII. **415.** V Ὡς εἴγε μὴ πάρεστιν ἱερατικὸς ἀνὴρ ἢ κληρικός τις τῶν ἐπ' εὐλαβείᾳ γνωρίμων ἢ μοναχός, εὐπορεῖται δὲ ἁγιάσματα καὶ χρεία καλεῖ, οὐδέν τὸ κωλύον ἑαυτῷ λαϊκὸν μεταδιδόναι.

LIX. **416.** V Καλὸς [1] ὁ νόμος καὶ ἀξιέπαινος διά τε τὴν τοῦ χριστιανισμοῦ παῤῥησίαν καὶ τὸ ἀναμφίβολον τῶν προσιόντων τῇ πίστει· ἀλλ' ἔδει καὶ κατὰ τοῦ κρύφα μυουμένου τὴν ἀπόφασιν γίνεσθαι· εἰ γὰρ ὁ ἐργάτης ἐπὶ τοσοῦτον ὑποτετίμηται, ἐχρῆν οἶμαι καὶ τὸ ἔργον καταλλήλως κολάζεσθαι.

[1] cod. καλῶς.

417. P Σημείωσαι ὅπως νῦν οὐδὲν [1] παροράται. Ath.

LX. **418.** Ven. Τῆς πρὸς Κορινθίους α'.

419. V Ἀπόχρη τοῦτο, πατέρες ἅγιοι, πρὸς ἐπιτιμίαν αὐτοῖς τὸ σωφρονοῦντας αὐτοὺς ἐπίσπαστον ποιεῖσθαι πρᾶγμα, πολλὴν ἀπόδειξιν τῆς τοῦ βίου παρεχόμενον ἀκαθαρσίας.

LXI. **420.** Ven. Τὸν κδ' τῶν ἐν Ἀγκύρᾳ. τὸν λς' τῶν ἐν Λαοδικείᾳ. τὸν πγ' τοῦ μεγάλου Βασιλείου. ἐν τῇ πρὸς Κορινθίους β'.

421. V (къ *τοὺς τὰς ἄρκους ἐπισυρομένους...*) Περὶ ἀρκοτρόφων.

422. V (къ *καθ' ἃ καὶ οἱ ἱεροὶ κανόνες διαγορεύουσι*) Τοῦ ἱεροῦ καὶ θείου Βασιλείου.

LXII. **423.** P Σημείωσαι, ὅπως νῦν οὐκ εὐαγῶς παροράται. Ath.

424. V_1 (къ *τὰς τῶν γυναικῶν ὀρχήσεις...*) Ὡς ἀσέμνους καὶ πολλὴν λυμὴν καὶ βλάβην ἐνεγκεῖν δυναμένας, ἔτι μὴν καὶ τὰς ἐπ' ὀνόματι τῶν παρὰ τοῖς Ἕλλησι ψευδῶς ὀνομασθέντων θεῶν, ἢ ἐξ ἀνδρῶν ἢ γυναικῶν γινομένας ὀρχήσεις.

LXIII. **425.** P Σημείωσαι τί λέγει.

LXIV. **426.** Ven. Ἐν τῷ λόγῳ τῷ περὶ τῆς ἐν διαλέξεσι εὐταξίας.

427. V Καὶ τοῦτο καλόν, πατέρες θειότατοι, ἀλλ' ἐπεὶ ἐξέλιπεν ὁ ὁρῶν ἐξ οἴκου Ἰσραὴλ καὶ οἷς ἀνῆκεν ἐν τούτοις πονεῖσθαι οὐδ' αὐτὸ τοῦτο τί δόγμα ἴσασιν θεῖον, ἱπποτροφίαις δὲ καὶ γηπονίαις [2] καὶ τοιούτοις τισὶ καταγελάστοις καὶ λεχθῆναι χρηματισμοῖς ἐκδεδώκασιν ἑαυτοὺς ὥσπερ ἀνταλλαττόμενοι τὸ ἑαυτῶν [3] ἐπιτήδευμα πρὸς τὰ τῶν κοσμικῶν ἤθη, οὐκ ἂν οἶμαι σφαλερόν, εἰ σπέρμα ἐγκαταλείποιτο κυρίῳ καὶ διὰ τῶν μὴ πάνυ τῷ ἰσραηλητικῷ συνεγγιζόντων γένει, ὡς διὰ Θάμαρ, ὡς Ῥούθ, ὡς Ῥαχὰβ ᾠκονόμηται· οὐδ' εἰ πεινῶσιν, οἱ ἄρτοι τῆς προθέσεως τοῖς μετὰ Δαυὶδ δαπανῶνται φυγάσιν εἰς περιττόν, τοῦ μήθ' ἱερεῦσιν ἠναλῶσθαι προκείμενοι. καὶ ὅτι οὐδὲν τῇ τοῦ θεοῦ εὐσεβείᾳ λυμαίνεται τοῦτο, δείκνυσιν Ἥρων [4] ὁ θεῖος φιλόσοφος, πρὸς ὃν καὶ ἡ θεολόγος γλῶσσα ἐπέστειλεν, οὐ μόνον δογματίζων, ἀλλὰ καὶ ὑπερόρια διὰ τοῦτο καταδικασθείς. πολλῶν ἱερέων ἐφ' ἑστίας ἀπραγμόνως βιούντων [5].

[1] οὐδε ὂν Ath. [2] cod. γειπονίαις. [3] cod. ἑαυτὸν. [4] cod. Εἴρων. [5] Gregorii Naz. orat. XXV § 14 (Migne XXXV 1217).

LXIX. **428.** V Ὅτι οὐδὲ βασιλεῖ κατὰ πᾶσαν πρόφασιν ἐξὸν εἰς θυσιαστήριον εἰσιέναι, εἰ μὴ καιρῷ τοῦ δῶρα κυρίῳ ἀνατιθέναι, ἄλλοτε δὲ οὐδέποτε· καὶ τάχα τοῦτο καὶ διὰ Θεοδοσίου τοῦ μεγάλου παιδευόμεθα βασιλέως, ὃς διὰ Ἀμβροσίου τοῦ θείου μαθών, ὅσον τὸ μεταξὺ ἱερέως καὶ βασιλέως. πολλὰ παρακληθεὶς ἐν Βυζαντίῳ ὑπὸ τῶν ἱερέων τῷ ἁγίῳ θυσιαστηρίῳ εἰσιέναι, τῷ καλλίστῳ διδασκαλείῳ χρησάμενος Ἀμβροσίου, τὴν παράκλησιν διεκρούσατο.

429. P Ἐν Ῥώμῃ φασὶ τοῦτο παροράσθαι τελείως. Ath. L_1.

LXX. **430.** V (къ *Μὴ ἐξέστω ταῖς γυναιξὶν ἐν τῷ καιρῷ τῆς θείας λειτουργίας λαλεῖν*) Οὐ τὸ ἁπλῶς λέγειν ἀπείργει (τοῦτο γὰρ οὐδὲ ἀνδράσιν παραχωρεῖται), ἀλλὰ τὸ διδάσκειν κωλύει· εἰκὸς γὰρ εἶναί τινας τότε γυναῖκας δυναμένας τοῦτο ποιεῖν, ὃ νῦν οὐδὲ ἐπίσκοποι ἱκανοὶ ἐκτελεῖν.

LXXIII. **431.** Ven. Οὐκοῦν οὐδὲ τὰς ἱερὰς εἰκόνας. Ath. P.

LXXV. **432.** Ven. Ἐν τῷ Λευϊτικῷ γέγραπται οὕτως· "εὐλαβεῖς ποιεῖτε τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ". (= Лев. XV 31).

433. V Περὶ τῶν ἀτάκτοις φωναῖς ἐν τῷ ψάλλειν χρωμένων.

434. V Καὶ τί τῶν παραβαινόντων τὸ πρόστιμον;

LXXVIII. **435.** Ven. Τὸ αὐτό φησι καὶ ὁ μς' κανὼν τῶν ἐν Λαοδικείᾳ.

LXXXII. **436.** L Περὶ ἀγράφου ἔθους ἐκκλησιαστικοῦ.

LXXXIII. **437.** Ven. Τῆς πρὸς Κορινθίους α'. τῷ οβ' κανόνι τῶν ἐν Καρθαγένῃ.

LXXXIV. **438.** V_1 Ζήτει ἐν Καρθαγένῃ σύνοδον.

439. V (къ *οὐδὲ ταῦτα διὰ τὴν κήραν περὶ τῆς παραδοθείσης αὐτοῖς μυσταγωγίας ἀποκρίνεσθαι ἐπιτηδείως ἔχουσι*) Ἀντὶ τοῦ οὐ δύνανται διαβεβαιοῦσθαι, ὡς ἐβαπτίσθησαν.

LXXXVI. **440.** V Ὥστε ὁ λόγῳ εὐλαβείας τὰ πρὸς τὴν χρείαν αὐταῖς ἐπιχορηγῶν, ὡς μὴ ἐνδείᾳ τῶν ἀναγκαίων ἑαυτὰς ἐκδιδόναι, ἀπόδεκτος θεῷ καὶ ἀνθρώποις.

LXXXVIII. **441.** P. Φιλάνθρωπον.

442. V Χάρις ὑμῖν, πατέρες, τῆς ἀφάτου φιλανθρωπίας καὶ συμπαθείας.

LXXXIX. **443.** V Περὶ τῆς ἀπονηστείας τοῦ ἁγίου σαββάτου.

XC. **444**. V (къ *ἐκ τῶν θεοφόρων πατέρων ἡμῶν κανονικῶς παρελάβομεν*) Τοῦ ἁγίου Βασιλείου τοῦτο καὶ τῶν ἀποστόλων.

XCII. **445**. V Περὶ ἁρπαζόντων γυναῖκας καὶ τῶν τούτοις συμπραττόντων.

XCV. **446**. V_1 Περὶ αἱρετικῶν.

447. V_1 Τίνες τῶν αἱρετικῶν διὰ τί ἀναβαπτίζονται.

448. V (къ *ποιοῦμεν αὐτοὺς χριστιανούς*) Ἀντὶ τοῦ κατατάττομεν αὐτοὺς τῇ μερίδι τῶν χριστιανῶν οἱονεὶ πολιτογραφοῦντες.

XCVI. **449**. V_1 Περὶ τριχῶν.

C. **450**. V (къ *αἱ τοῦ σώματος αἰσθήσεις εἰσκρίνουσιν*) Οἷον ὀρχουμένων γυναικῶν ἤ τι τοιοῦτον.

CI. **451**. V (къ *δεχέσθω τὴν κοινωνίαν...*) Ὅτι καὶ λαϊκοῖς ὁ θεῖος ἄρτος ἐπὶ χειρὸς δίδοται.

CII. **452**. V (къ *προσκαλεῖται καθ' ἑαυτοῦ τὸ ἀῤῥώστημα...*) Ἀντὶ τοῦ πρὸ τῆς ἑαυτοῦ πλείονος κακώσεως, ὑπὲρ περισσοτέρας προσοχῆς καὶ ἐπιμελείας διὰ τὸ ῥαθύμως καὶ ἀναξίως τῆς μετανοίας διακεῖσθαι τὴν τοῦ θεραπεύοντος ἐποπτίαν ἐκκαλουμένου.

453. V (къ концу) Σοφώτατα, πατέρες ἅγιοι. ὡς ὅ γε τῷ τεχνίτῃ ἀντιπαλαίων καὶ ἐκ παντὸς τὸ ἑαυτοῦ μεταδιώκων ἡδὺ ἑλκοποιεῖ μᾶλλον καὶ ἀναξαίνει τὸ τραῦμα καὶ τὸ ῥυποῦν αὐτὸν καὶ σπιλοῦν μηδαμῶς ἀπωθούμενος, οὕτω τὴν ἰατρείαν αὐτῶν καὶ τὴν κάθαρσιν ἐπιζητῶν ἀναξίως, μᾶλλον δὲ βιαζόμενος τοὺς τῆς ἐπιμελείας ταύτης ἠξιωμένους κατὰ τῆς ἑαυτῶν θείας τιμῆς νεανιεύσασθαι, οὗτος τί ἂν ἄλλο ἢ παρορᾶσθαι πάντως ἄξιος ὡς ἐναγής τε καὶ ἀποτρόπαιος καὶ μὴ μόνον αὐτὸν ἀλλὰ καὶ ἑτέρους τῆς ἀπωλείας παραλαμβάνειν σπεύδων κοινωνοὺς καὶ συλλήπτορας καὶ πολλοῖς τοῦ ἑαυτοῦ ὀλέθρου ὑπάρχων παραίτιος.

Къ подписямъ. **454**. Ven. Ὅτι ἐν τῇ ἐκθέσει τῶν κανόνων οἱ τέσσαρες ὑπέγραψαν πατριάρχαι, Παῦλος καὶ Πέτρος καὶ Γεώργιος καὶ Ἀναστάσιος, ὥστε καὶ ἐκ τῆς συμφωνίας τῶν δ' ἀρχιερατικῶν θρόνων τὰ τῶν δυσσεβῶν Εἰκονομάχων ἐμφράττεσθαι [1] στόματα. P.

[1] ἐμφράττεται P.

Къ правиламъ Никейскаго II (VII всел.) ***собора:***

I. **455.** V (къ *ἀκράδαντα καὶ ἀσάλευτα*) Ἐπιῤῥηματικῶς ἀκουστέον ἀντὶ τοῦ ἀκραδάντως καὶ ἀσαλεύτως. L.

456. V (въ концѣ къ *τῷ ἀφορισμῷ*) Ἐνταῦθα ἀφορισμὸν τὴν τελείαν ἐκβολὴν τῆς τῶν χριστιανῶν μερίδος βούλεται, καὶ δῆλον ἀφ᾽ ὧν μεταξὺ τοῦτον τῆς τῶν ἱερωμένων τέθεικε καθαιρέσεως καὶ τῶν ἐπιτιμᾶσθαι ἀξίων ἑαυτοὺς καταστησάντων. L.

II. **457.** V (къ концу) Ἀσμενίσοι μὲν μεταξὺ χειροτονούμενος (πῶς γὰρ οὔ;), τοσαύτης ἐπιβαίνων τιμῆς, ἀλλὰ τῆς κατὰ πετρῶν ἀκόλουθόν τι πάθοι σπορᾶς, θᾶττον ἤπερ βλαστῆσαι μαραινόμενός τε καὶ ξηραινόμενος.

458. P Μηδὲν θαυμάσης μηδὲ παράδοξόν σοι δόξῃ, ὅτι τὴν τῶν ψαλμῶν ἀπαιτεῖ γνῶσιν καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἱερῶν μαθημάτων ἐπίγνωσιν τοὺς μέλλοντας εἰς ἀρχιερωσύνην ὁ προκείμενος κανὼν οὗτος· τῆς γὰρ Ἰσαύρων ἐπικρατούσης δυσσεβείας καὶ τῆς εἰκονομαχικῆς ἐμπλατυνομένης αἱρέσεως, ἐπὶ τοσοῦτον ἐξ ἀνθρώπων ἀπῆλθεν τὰ θεῖα ταῦτα μαθήματα, ὥστε μόλις εὑρίσκεσθαί τινας τῶν ὑποδεδυκότων τὸ τῆς ἀρχιερωσύνης ὄνομα (αὐτὸ γὰρ τοῦτο μόνον ὁλόκληρον, μή τί γε ἄλλο) τοὺς δαυϊτικοὺς ψαλμοὺς εἰδέναι. διὸ ἐξ ἀνάγκης γέγονεν, εἰ καὶ μὴ καταθυμίως, τῷ ἁγιωτάτῳ καὶ μεγάλῳ ἀρχιερεῖ Ταρασίῳ καὶ τῇ ἁγίᾳ καὶ οἰκουμενικῇ ἑβδόμῃ συνόδῳ τοιοῦτόν τινα περὶ τῶν ἀρχιερέων διατυπῶσαι κανόνα· τὸ γὰρ παράδοξον τῆς διορθώσεως τὴν ὑπερβολὴν ἐλέγχει, οὐχ ὕβριν φέρει τοῖς διορθουμένοις τῆς προκατασχούσης ἀθεότητος. Ven.* Ath.*

459. Ven. (къ *ὁ μέγας ἀπεφήνατο Διονύσιος*) Ἐν τῷ α′ κεφαλαίῳ τῷ περὶ τῆς ἐκκλησιαστικῆς ἱεραρχίας.

IV. **460.** V (къ *τῇ ἀυτοπαθείᾳ*) Ἡ δέ ἐστιν εἰς ἀργίαν τῆς λειτουργίας περιϊστῶσα τὸν κἀκεῖνα ἀχρημάτιστα μένειν καταδικάζοντα τῶν ἐν αὐτοῖς θείων τελετῶν.

V. **461.** P Τί λέγει οὗτος [1] ἁμαρτίαν πρὸς θάνατον. Ath.

462. V_1 Ἁμαρτία πρὸς θάνατον. Σαφῶς ὅλον.

[1] οὕτως Ath.

463. V (къ началу) Εἰ δὲ τὴν ἡδονὴν προτιμώμενοι κατεξανίστανται τῶν ἀρχιερέων καὶ κακώσει ἐκδιδόασι, τί φῄς, ἅγιε τοῦ θεοῦ;

VI. **464.** V (къ *μὴ ἔχειν δὲ ἄδειαν τῷ μητροπολίτῃ...*) Ὦ οἷος ὁ νόμος! ἀλλ᾽ ὁ προσέχων ποῦ;

465. V (ниже) Θαυμάζω ὑμῶν, ἅγιοι· καὶ τίνος ἄλλου χάριν ἡ συνάθροισις νῦν; οὐ φορολογίας; πάνυ γε.

XII. **466.** V (къ *ἐπίσκοπος ἢ ἡγούμενος τοῦτο ποιῶν ἐκδιωχθήτω*) Τετηρήσθω μοι.

467. L Κανών ἐστιν ὁ λέγων· "οὐκ ἐκποιεῖ ὁ μόνον τὴν νομὴν ἀποβαλλόμενος" [1]. καὶ ὡς ἐκ τούτου λέγουσί τινες μὴ εἶναι ἐκποίησιν μετὰ τὴν διηνεκῆ ἐμφύτευσιν, μετὰ τὴν πρόσκαιρον, ἤγουν τὴν εἰς δὶς κθ′ (?), ἥτις διὰ τὸ παρέλκον τοῦ χρόνου καὶ τὸ βραχὺ τῆς ζωῆς τῶν ἐπισκόπων καὶ ἡγουμένων τὰ κτήματα τῶν ἐκκλησιῶν παντελῶς ἐξεποίησεν δι᾽ ἄγνοιαν πολλάκις ἢ καὶ ῥαθυμίαν τῶν μετ᾽ αὐτούς. καὶ εἰ ἐκποίησις οὐκ ἔστι κατὰ τὸν κανόνα, ἀλλ᾽ ἐκποιήσει ἔοικεν, καὶ μᾶλλον εἰ τριακονταετία διολισθήσει ἀπερίκοπος ἢ καὶ τεσσαρακονταετία.

468. Ven. Ἀναγκαῖον [2] καὶ ὀφεῖλον, εἰ καί τισιν ἀφρόνως παρορᾶται, παντὶ παραφυλάττεσθαι [3] τρόπῳ. PL_1 Ath.

469. V_1 Πῶς ἢ ποῦ ἐκδίδει.

XIII. **470.** L Ζήτει βιβλίον ια′ τῶν βασιλικῶν [4] τίτλ. ζ′ (κεφ. λς′), ἐν ᾧ φησιν· "τὰ ἱερὰ γινόμενα ὑπὸ τοὺς πολεμίους παύονται εἶναι ἱερά, ὥσπερ ὁ ἐλεύθερος δουλωθείς· ἀπολυθέντα δὲ τῆς συμφορᾶς ἀναλαμβάνουσι τὴν προτέραν κατάστασιν" [5]. καὶ βιβλ. λδ′ τίτλ. α′ κεφ. ιζ′· λέγει γὰρ καὶ τοῦτο· "τοὺς ἀναληφθέντας ὑπὸ τῶν πολεμίων ἀγροὺς οἱ πρώην ἀναλαμβάνουσι δεσπόται· οὐ γὰρ ἐν ἰδ′ τάξει πραιδίας εἰσὶν [6] οὔτε δημόσιοι γίνονται· οἱ γὰρ τῶν πολεμίων λαμβανόμενοι γίνονται δημόσιοι" [7].

XIV. **471.** Ven. Τὸ μὲν εἰς ἀναγνώστας τινὰς χωρὶς εὐχῆς καὶ χειροθεσίας [8] περικείρεσθαι [9] νῦν οὐχ ὁρᾶται. τὸ δὲ ἡγουμένους τινάς, κἂν πρεσβυτέρων ἔχωσι βαθμόν [10], χειροθετεῖν ἀναγνώστην οὐδὲ τοῦτο νῦν ὁρῶμεν προβαῖνον. P Ath.

[1] откуда этотъ κανών? [2] ὃν вставл. L_1. [3] φυλάττεσθαι L_1. [4] должно бы быть διγέστων: въ Василикахъ совсѣмъ отсутствуетъ Dig. XI 7, 36. [5] = Dig. XI 7, 36 въ тит. II, гл. 1 номоканона XIV титт. (Pitra II 485). [6] cod. ἐστὶν. [7] Basilic. XXXIV 1,16 [8] μόνον вставл. P Ath. [9] περικεῖσθαι Ath. [10] βαθμὸν ἔχωσι P Ath.

XV. **472.** V_1 (къ концу) Πότε παραχωρεῖται.

473. V (къ *πρὸς δὲ τὴν τοῦ βίου τούτου χρείαν...*) Πρὸς τοὺς λέγοντας μὴ ἐξαρκεῖν ἀπὸ μιᾶς ἐκκλησίας διαρίου τρέφεσθαι.

XVI. **474.** Ven. (къ *ὡς ὁ μέγας ἔφη Βασίλειος*) Ἐν τοῖς ἀσκητικοῖς ἐρωτήμασι τοῦτό φησι, κατὰ τὸ ρξθ' [1] κεφάλαιον, ἐν ᾧ ἑρμηνεύει "τί ἐστιν τὸ περπερεύεσθαι".

475. V (къ *ἐκ γὰρ τῶν ἄνωθεν χρόνων...*) Καὶ δῆλον τοῦτο, ἀφ' ὧν Κωνσταντῖνον τὸν πρῶτον τοῖς βασιλεῦσι τὰ τοῦ Χριστοῦ βασίλεια ὑπανοίξαντα οἱ τὰ κατ' αὐτὸν ἱστορήσαντες Ἕλληνες εἰς τοῦτο ἐπέσκωψαν, ὡς ἀσήμοις τισὶ καὶ εὐτελέσιν ἀνθρώποις συνιστιᾶτο καὶ ἔχαιρεν· σαφὲς γάρ, ὅτι τὸ ἄσημον καὶ εὐτελὲς ἀπὸ τῆς τοῦ σώματος ἀμφιάσεως ἐνδιαβάλλειν αὐτοὺς ἀφορμὰς παρεῖχεν.

XIX. **476.** V (къ *ἡ αἰτία τοῦ προεστῶτος*) Τουτέστιν, εἰ ὁ προεστὼς ἀπροφασίστως ἀποδιώκει τὸν προσενεγκόντα.

477. Ven. Ἀναγκαῖον, εἰ καὶ παρ' ἐνίοις ὀλιγωρεῖται [2]. P.

XX. **478.** Ven. Ἰστέον, ὅτι ὁ μέγας Βασίλειος ἐν τῇ πρὸς τὸν πρεσβύτερον Γρηγόριον ἐπιστολῇ τὴν μετὰ γυναικῶν συνεισάκτων ἀπαγορεύει συνοίκησιν, κελεύων ἰδιάζειν τοὺς ἄνδρας ἀφ' ἑαυτῶν καὶ τὰς γυναῖκας εἶναι καθ' ἑαυτάς. ἐν δὲ τοῖς ἀσκητικοῖς ἐρωτήμασιν εἴτουν ἐν τῷ κεφαλαίῳ, ὃ ἐπιγέγραπται "τίς ὁ τρόπος τῆς πρὸς ἀδελφὰς συντυχίας" [3], τῶν ἀνθρώπων πρὸς τὰς γυναῖκας κωλύει, καὶ αὐτὰς δὲ τὰς ἐπωφελεῖς καὶ ἀναγκαίας ἐπὶ παρουσίᾳ προσώπων εὐλαβῶν γίνεσθαι παραινεῖ διὰ τὰς πονηρὰς ὑποψίας.

Въ ὅρος собора. **479.** V (къ *εἴ τις πᾶσαν παράδοσιν ἐκκλησιαστικὴν ἔγγραφόν τε καὶ ἄγραφον ἀθετεῖ, ἀνάθεμα*) Καὶ τί νῦν πράξουσιν οἱ ἀθετοῦντες;

Въ посланіи Тарасія къ Адріану (ἐκ τοῦ βίου τοῦ ἁγ. Ἰωάννου τοῦ Χρυσ.). **480.** Ven. (къ *Εὐσέβιος...*) Ὁ Εὐσέβιος οὗτος, ἐπίσκοπος ὢν Οὐαλεντινουπόλεως τῆς ἐν τῷ Κιλβιανῷ, κατηγόρησεν Ἀντωνίνου τοῦ ἐπισκόπου Ἐφέσου ὡς ἐπὶ χρήμασι χειροτονήσαντος.

481. Ven. Τὸ ῥητὸν τὸ ἐν τῷ βίῳ τοῦ Χρυσοστόμου οὕτως ἔχει· "ἔθος γένηται Ἰουδαϊκὸν τοῦ πωλεῖν καὶ ἀγοράζειν τὴν ἱερωσύνην"·

[1] у Migne XXXI 1116 это глава μθ'. [2] ὠλιγώρηται P. [3] у Migne XXXI 997 глава λγ'.

τὸ δὲ "ἢ Αἰγύπτιον" καὶ τὸ "φασὶ γὰρ καὶ τὸν λυμεῶνα" καὶ τὰ ἑξῆς προσθῆκαί εἰσι τῆς ζ' ταύτης συνόδου.

Къ правиламъ Константинопольскаго I—II собора 861 г.

I. **482**. L Συμφωνεῖ τῷ δ' κανόνι τῆς ἐν Καλχηδόνι συνόδου καὶ τῇ διαταγῇ τῶν ἁγίων καὶ πανευφήμων ἀποστόλων τῇ ἐν ταῖς Πράξεσιν ἐμφερομένῃ περὶ Ἀνανίου καὶ Σαπφείρας· ὡς γὰρ ἐκεῖνοι τοῦ ψεύδους ἔνδικον τὴν τιμωρίαν ὑπέσχον τῇ κρίσει τοῦ ἁγίου πνεύματος, καὶ οἱ νῦν [1] τὰς κτήσεις αὐτῶν θεῷ ἀφιερώσαντες διὰ τῆς τῶν νέων μοναστηρίων οἰκοδομῆς καὶ πάλιν αὐτῶν κατεξουσιάζοντες ταῖς αὐταῖς ὑποκείσονται τιμωρίαις, ἐὰν μὴ παραυτίκα, ἀλλ' ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως, καὶ τῶν προειρημένων χάριν καὶ ὅτι τὸν τούτου (!) ἐπίσκοπον καὶ τὴν ἀναφορὰν τοῦ ὀνόματος παντάπασιν ἐξορίζουσιν τῶν θεῷ ἀφιερωθέντων. ἀνάγνωθι καὶ βιβλ. δ' τῶν βασιλικῶν τίτλ. α' κεφ. α', τὸ περὶ προβολῆς ἡγουμένου. τοῦ αὐτοῦ τίτλου κεφ. β'. ζήτει καὶ νεαρὰν Λέοντος ιδ', καὶ νεαρὰν Νικηφόρου τὴν ἀναιρεθεῖσαν διὰ νεαρῶν Βασιλείου, καὶ βιβλ. ε' τίτλ. γ' κεφ. δ'.

II. **483**. L Ἀνάγνωθι τὸν μ' κανόνα τῆς ς' συνόδου τὸν λέγοντα πάντα χριστιανὸν τὸν ἀσκητικὸν... μοναχικὸν σχῆμα περιβαλέσθαι· ἀνάγνωθι καὶ τὸν μς' τῆς αὐτῆς συνόδου.

III. **484**. L Ἡ δὲ ιε' νεαρὰ γ', ἡ ἐν τῷ α' τίτλῳ τοῦ δ' βιβλίου καταστρωθεῖσα, περὶ τὸ τέλος τὸν ἁμαρτάνοντα μοναχὸν νουθετεῖσθαι διὰ τοῦ ἡγουμένου καὶ καθείργνυσθαι νομοθετεῖ καὶ μετανοίας καιρὸν παρέχεσθαι. εἰ δὲ μείζων ὁ τοῦ πταίσματος εἴη τρόπος, καὶ αὖθις νουθεσίαν σφοδροτέραν καὶ μετάνοιαν ἀπαιτεῖ. εἰ δὲ μετὰ μίαν καὶ β νουθεσίαν κρεῖττον ἢ κατὰ θεραπείαν τὸ πρᾶγμα γένηται, τηνικαῦτα διεξωθεῖν αὐτὸν τοῦ μοναστηρίου βούλεται, ἵνα μὴ τῶν ἑαυτοῦ κακῶν. φησί, καὶ ἑτέρους προσαπομάξηται [2]· ἡ δὲ τῶν πατέρων φιλανθρωποτέρα ἐνταῦθα γνώμη πλείονα τὴν ἀνοχὴν καὶ μακροθυμίαν πρὸς τοὺς ἁμαρτάνοντας ἐπιδείκνυσθαι χριστομιμήτως νομοθετεῖ.

[1] cod. νοῦ. [2] разумѣется nov. CXXXIII cap. 5 § 1 въ Basilic. IV 1,23.

Къ правиламъ Діонисія Александрійскаго.

Къ *Διονύσιος Βασιλείδῃ...* **485.** Ven. Ἰστέον, ὅτι γέγονε μὲν ὁ μακάριος Διονύσιος οὗτος ἀκροατὴς Ὠριγένους· ἐν δὲ τῷ δ′ τῆς βασιλείας ἔτει Φιλίππου τοῦ μετὰ Γορδιανὸν βασιλεύσαντος, τὸν βίον μεταλλάξαντος Ἡρακλᾶ τοῦ τρισκαιδεκάτου τῆς Ἀλεξανδρέων ἐκκλησίας ἐπισκόπου, τὴν προστασίαν ταύτης ὅδε ὑπολαμβάνει καὶ πρὸς τοῖς ἐπὶ ς′ καὶ ζ′ ἔτεσιν, ἤτοι τοῖς λοιποῖς τρισὶν Φιλίππου καὶ τῷ ἑνὶ Δεκίου καὶ τῷ ἑνὶ Γάλλου Βουλοσιανοῦ τοῦ υἱοῦ Δεκίου, καὶ τοῖς δώδεκα Οὐαλεριανοῦ καὶ Γαλλιηνοῦ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ, πρὸς κύριον ἐξεδήμησεν. ὁ δὲ Βασιλείδης ἦν τῶν κατὰ τὴν Πεντάπολιν τῆς Λιβύης παροικιῶν ἐπίσκοπος, ὥς φησιν Εὐσέβιος ἔν τε τῷ ς′ καὶ τῷ ζ′ τῆς ἐκκλησιαστικῆς ἱστορίας λόγῳ.

Въ предисловіи. **486.** P (къ *ὅτι δὲ ὀψὲ σαββάτων...*) Τί τὸ "ὀψὲ" δηλοῖ. Patm₂.

I. **487.** P (къ *τοὺς μὲν λίαν ἐπιταχύνοντας...*) Τί φησι πρὸς τοὺς ταχύνοντας. Patm₂.

488. P (къ *Οὐ μικρὸν ἐν βίῳ...*) Τίνος τὸ "οὐ μικρὸν τὸ παρὰ μικρόν". Patm₂.

489. P (къ *ἐπεὶ μηδὲ τοὺς ἕξ...*) Τί φησι περὶ τῶν ἓξ ἡμερῶν τῶν νηστειῶν. Patm₂.

II. **490.** P Σημείωσαι λίαν ἀκριβῶς τὸ λεγόμενον, ὅτι [1] πάνυ ἐστὶν ἀναγκαῖον. Patm₂.

491. V Περὶ τῶν ἐν ἀφέδρῳ γυναικῶν.

Къ правиламъ Петра Александрійскаго.

II. **492.** V (къ *Πνεῦμα κυρίου ἐπ᾽ ἐμέ...* = Исаіи LXI, 1) Τοῦτο ὅλον τὸ προφητικὸν διὰ τὸν ἐπιτιμῶντα ἐνιαυτὸν προσεκομίσθη. ἐν οἷς καὶ αὐτό φησι, "κηρῦξαι ἐνιαυτὸν δεκτὸν κυρίῳ".

III. **493.** V (къ *ἐν τῷ διαστήματι τοσαύτου χρόνου*) Τριῶν ἑτέρων ἐτῶν.

[1] ὅτι проп. Patm₂.

V. **494.** V (ко второй половинѣ: *ἐπεὶ τοίνυν ἔλαθεν...*) Ὅπως τοῦτο, οὐκ ἔχω συνορᾶν, τοῦ κυρίου τὸν ἔμπροσθεν ὁμολογοῦντα τῶν ἀνθρώπων ἀποδεχομένου καὶ τοῦ Παύλου τῷ "καρδίᾳ γὰρ πιστεύεται εἰς δικαιοσύνην, στόματι δὲ ὁμολογεῖται εἰς σωτηρίαν" [1] πολλῷ τῷ περιόντι τούτους ὑπευθύνους ἐλέγχοντος· ἐπὶ γὰρ σωτηρίᾳ τῆς ἐν τῇ καρδίᾳ δικαιοσύνης ὁμολογεῖν χρή, οὐκ ἐπ' ὀλέθρῳ καὶ ἀπωλείᾳ, ὃ μηδὲ ὁμολογεῖν, ἀλλὰ διαφωνεῖν ἐστι πάντῃ καὶ ἀντιφθέγγεσθαι, καὶ οὐδὲ δικαίως τὸ δίκαιον διώκειν, ἀλλὰ ἀδίκως τὸ δίκαιον ῥυποῦν τε καὶ καταχραίνειν, καὶ τὸ δειλόν τε καὶ ἄνανδρον ἐν καιρῷ τῶν ἀγώνων ἐνδείκνυσθαι, τροπὰς ἀμυθήτους τρεπόμενον καὶ παλιμβόλους μεταχειρίσεις ὑποδυόμενον· ὧν οὐδὲν τοῦ ἐπὶ κύριον ὡς ὄρος πεποιθότος Σιὼν καὶ μηδαμῶς σαλευομένου ταῖς περιστάσεσιν [2], οὐ τοῦ τῇ πέτρᾳ τοὺς θεμελίους τῆς ἑαυτοῦ οἰκίας καταθεμένου, τοῦ δὲ πονηροῦ καὶ γόητος ἀνθρώπου προκόπτειν εἰδότος ἐπὶ τὸ χεῖρον καὶ τὸ πλανᾶν καὶ πλανᾶσθαι διὰ βίου ποιουμένου ἐλεεινῶς περισπούδαστον.

IX. **495.** P Σημείωσαι ὅλον τὸ χωρίον, ὅτι θαυμαστὴν ἔχει διδασκαλίαν περὶ τοῦ μὴ ἐπιδιδόναι ἑαυτοὺς [3] αὐθαιρέτως [4] εἰς μαρτύριον, καὶ διὰ τί. Ven. $Patm_2$.

496. P (къ *Ἰάκωβος δεύτερος...*) Ὅτι δεύτερος Ἰάκωβος ἐμαρτύρησεν. Ven. $Patm_1$ $Patm_2$.

X. **497.** P Περὶ κληρικῶν. $Patm_2$.

XII. (= XI обычн. сч.; къ *ἴσμεν γὰρ καὶ δι' ἑτέρων πίστιν...*).

498. V Ὡς ἐπὶ τοῦ διὰ τῆς στέγης χαλασθέντος παραλύτου, ᾧ διὰ τὴν τῶν χαλασάντων πίστιν ἄφεσίς τε ἁμαρτιῶν καὶ σώματος ῥῶσις ἐδωρήθη, καὶ διὰ τὴν πίστιν πάλιν τοῦ ἀρχισυναγώγου καὶ τοῦ βασιλικοῦ ἐσῴζοντο οἱ τούτοις προσήκοντες, καὶ διὰ τὴν πίστιν Μάρθας ἀνίστατο ὁ ἀδελφὸς αὐτῆς Λάζαρος.

499. P Ὅτι διὰ πίστιν ἑτέρων ἀπολαύουσί τινες ἀφέσεως ἁμαρτιῶν καὶ σωματικῆς ὑγείας καὶ ἀναστάσεως νεκρῶν. Ven. $Patm_1$ $Patm_2$.

500. V (къ *ἁμάρτῃ*) Σκόπει, ὅτι "ἁμάρτῃ" εἶπεν, ἀλλ' οὐχ "ἁμαρτάνῃ"· τῷ γὰρ τοιούτῳ οὐχ ὑπολείπεται συγγνώμη.

[1] Римл. X 10. [2] сравн. псалм. CXXIV 1. [3] cod. ἑαυτοῖς. [4] αὐθαιρέτους $Patm_2$.

XIII (= XII обычн. сч.). **501**. V Ὅτι καλόν ἐστι χρήματα δοῦναι [1] καὶ φυγεῖν [2] τὸ μαρτύριον. P Patm$_1$ Patm$_2$.

XIII. **502**. P (къ *Ἀσσύριον βασιλέα*) Ὅτι τὸν Ἡρώδην Ἀσσυρίων [3] βασιλέα ὠνόμασεν. Patm$_1$ Patm$_2$.

(къ *ἕτερον παιδίον*). **503**^{a}. P Τὸν ἅγιον Ἰωάννην φησί. Patm$_2$.

503^{b}. Patm$_1$ Ἰωάννην λέγει τὸν Πρόδρομον.

504. P (къ *Ζαχαρίαν*) Ποῖον Ζαχαρίαν Ἡρώδης ἐφόνευσεν. Patm$_2$.

XIV. **505**. V (къ *ὁμολογηταῖς*) Ὅτι ὁμολογηταὶ οἱ ἐπιμένοντες ἐν ταῖς κακώσεσιν, ἔτι καὶ μὴ ἐναποθανόντες ταῖς βασάνοις.

XV. **506**. P Διὰ τί νηστεύομεν τετράδα καὶ παρασκευήν. Patm$_2$.

507. V Ὅτι τετράδα καὶ παρασκευὴν νηστευτέον.

Къ правиламъ Григорія Неокесарійскаго (Чудотворца).

I. **508**. P (къ *οὐ τὰ βρώματα... λέγει*) Περὶ τῶν μιαροφαγησάντων ἐν τῇ τῶν βαρβάρων καταδρομῇ. Ven. Patm$_2$.

509. P (къ *καὶ τὸ τὰς αἰχμαλώτους γυναῖκας...*) Περὶ τῶν διαφθαρεισῶν γυναικῶν ὑπὸ τῶν βαρβάρων. Ven. Patm$_2$.

II. **510**. P Κατὰ πλεονεξίας.

V. **511**. P Περὶ τῶν ἐν τῇ καταδρομῇ τὰ τῶν ὁμοφύλων ἁρπασάντων πράγματα. Patm$_2$.

VI. **512**. P Τί φησιν κατὰ τῶν βίᾳ κατεχόντων τοὺς ἐκ τῶν βαρβάρων ἀποφυγόντας αἰχμαλώτους. Ven.

VII. **513**. P Τί φησιν περὶ τῶν ἐγκαταλεχθέντων τοῖς βαρβάροις καὶ ἄτοπά τινα κατὰ τῶν ὁμοφύλων τολμησάντων.

514. V (къ *ἀπεῖρξαι δεῖ...*) Καὶ πῶς σήμερον οὐχ οὕτως τοῖς προδόταις χρῶνται;

VIII. **515**. P Περὶ τῶν οἴκοις ἀλλοτρίοις ἐπελθεῖν τολμησάντων ἐν τῇ τῶν βαρβάρων ἐπιδρομῇ [4] Patm$_2$.

IX. **516**. Patm$_2$ Περὶ τῶν ἐν τῷ πεδίῳ ἢ ἐν τοῖς ἰδίοις οἴκοις εὑρόντων τὰ ὑπὸ τῶν βαρβάρων καταλειφθέντα.

X. **517**. V (къ *πληροῦν δεῖ*) Τὸ "πληροῦν" ἐστιν ὅτι τῆς κοινωνίας ἀξιοῦν χρή.

518. L α'. Ἰστέον οὖν· πρόσκλαυσίς ἐστιν ἡνίκα... καὶ μέθεξις [5].

[1] διδόναι Ven. Patm$_1$ [2] διαφυγεῖν P Ven. [3] Ἀσσύριον Patm$_1$. [4] καταδρομῇ Patm$_2$.
[5] сходно съ Petropol. 566 XI в. л. 38^b или съ Vindob. hist. gr. л. 84?

Къ правиламъ Василія Великаго.

Въ I посланіи. **519**. Ven. (къ словамъ предисловія: *ἡ περὶ τὸ ἀκριβὲς μέριμνα*) Γράφεται καὶ οὕτως· “ἡ περὶ τὸ ἀποκρίνασθαι μέριμνα”.

I. **520**. Ven. Κεφαλὴ τοῦ πληρώματος τῆς ἐκκλησίας, καθά φησιν Παῦλος ἐν τῇ πρὸς Ἐφεσίους ἐπιστολῇ καὶ ἐν τῇ πρὸς Κολοσσαεῖς, Χριστός ἐστιν, “ἐξ οὗ πᾶν τὸ σῶμα διὰ τῶν ἀφῶν καὶ συνδέσμων ἐπιχορηγούμενον καὶ συμβιβαζόμενον αὔξει τὴν αὔξησιν τοῦ θεοῦ”[1], γινομένης δηλαδὴ τῆς ἐπιχορηγίας καὶ μεταδόσεως τοῖς ἡνωμένοις ἀλλήλοις μέλεσιν ἀπὸ τῶν πρώτων ἕως τῶν ἐσχάτων. ὁ τοίνυν πρῶτος ἀποσχίζων ἑαυτὸν τοῦ παντὸς σώματος οὐ πάντῃ πάντως ἀφίσταται, ὅτι μηδόλως ἥνωται, ἀλλ' ἔτι ἔχεται τοῦ ἀφ οὗ ἐσχίσθη· τοιαύτη γὰρ τῶν σχιζομένων ἡ φύσις . ὁ δὲ τῷ ἀπεσχισμένῳ προστιθέμενος ὕστερον ἀποῤῥήγνυται καὶ ἀφίσταται καθάπαξ οὗπερ εἴχετο σώματος· οὐδὲ γὰρ ἐνδέχεται τοῖς δυσὶν ἅμα τὸν αὐτὸν ἡνῶσθαι. καὶ ὥσπερ τὸ τοῦ σώματος ἀποῤῥηγνύμενον μέλος νεκροῦται, τῆς ζωτικῆς αὐτῷ μὴ χορηγουμένης ἐκεῖθεν δυνάμεως, οὕτω καὶ αὐτὸς νεκρούμενος οἷον τῷ πνεύματι τῆς ἱερατικῆς ἐκπίπτει χάριτος, ἣν εἶχεν λαβὼν παρὰ τοῦ ᾧπερ ἥνωτο, καὶ γίνεται λοιπὸν λαϊκός. παρὰ τοῦ ᾧ προσετέθη χάριν ἱερατικὴν οὐκέτι λαμβάνων, οὐ μόνον ὅτι δεκτικὸς οὐχ ὑπάρχων νεκρὸς ἤδη τρόπον ἕτερον γεγενημένος, ἀλλ' ὅτι οὐδ' αὐτός, ᾧ προσῆλθεν, δυνατός ἐστιν μεταδιδόναι· ἡ γὰρ μετάδοσις διὰ τῶν ἀφῶν γίνεται καὶ τῶν συνδέσμων. ἐκεῖνος δ' ἀποσχίσας ἑαυτὸν τῶν [2] οἷς συνήπτετο καὶ συνεδέδετο, ὃ μὲν ἔλαβεν ἔχει, λαβεῖν δ' ἕτερος οὐχ οἷός τέ ἐστιν, καὶ ἀκολούθως οὐδὲ μεταδοῦναι ἑτέροις, οὐ μόνον ὅτι μὴ ἔχει, ἀλλ' ὅτι μηδὲ πέφυκε μεταδιδόναι οὔτε τοῖς πρὶν οἰκείοις (ἀπέχεται γὰρ αὐτῶν) οὔτε τοῖς ἀλλοτρίοις, ὅτι ἀδύνατον· πῶς γὰρ σώματος μέλος μεταδοίη τινὸς ἐνεργείας εἴτε τῷ ἀλλοτρίῳ μέλει εἴτε τῷ ἐκ τοῦ αὐτοῦ σώματος ἀποῤῥαγέντι καὶ ἀποτμηθέντι;

(къ *Τὸ μὲν οὖν περὶ τοὺς Καθαροὺς ζήτημα...*) **521**. Ven. Καθαροὺς τοὺς Ναυατιανούς, οἶμαι, φησίν.

[1] Колосс. II 19; сравн. Ефес. IV 13—16. [2] cod. τὸν.

522. V Τί φησιν περὶ τῆς αἱρέσεως τῶν Καθαρῶν, οἵτινές εἰσιν, ὡς οἶμαι, οἱ Ναυατιανοί.

523. P Τί φησιν περὶ τῶν Καθαρῶν. Patm$_1$ Patm$_2$.

(къ *Τὸ δὲ τῶν Πεπουζηνῶν...*) **524**. P Τί φησι [1] περὶ τῶν Πεπουζηνῶν. Patm$_1$ Patm$_2$.

525. V Πεπουζηνοὶ οἱ ἀπὸ Μοντανοῦ, τοὺς αὐτοὺς δὲ καὶ Φρύγας φασί· Πέπουζα γὰρ κωμύδριόν ἐστιν ἐν Φρυγίᾳ, ἀφ' ἧς ὡρμᾶτο Μοντανὸς καὶ Πρίσκιλλα.

(къ *ὅθεν τὰς μὲν αἱρέσεις ὠνόμασαν...*). **526^a**. Ven. Τῶν αἱρέσεων αἱ μὲν αἱρέσεις, αἱ δὲ σχίσματα, αἱ δὲ παρασυναγωγαί.

526^b. P Τὰς μὲν αἱρέσεις, τὰ δὲ σχήματα [2], τὰς δὲ παρασυναγωγάς. Patm$_1$.

(къ *Αἱρέσεις μὲν τοὺς... πίστεώς ἐστιν ἡ διαφορά*) **527^a**. Ven. Τί σχίσμα καὶ τί ἐστιν αἵρεσις.

527^b. P Τί αἵρεσις. τί σχίσμα.

527^c. V Τί αἵρεσις. τί σχίσμα. τί παρασυναγωγή. Patm$_2$.

528. V (къ *τὸ δὲ τῶν ἀποσχιστῶν...* [3]) Περὶ τῶν ἀποσχιστῶν.

529. P (къ *Ἔδοξε τοίνυν τοῖς ἐξ ἀρχῆς...*) Τί ἔδοξε τοῖς πατράσι περὶ τῶν αἱρετικῶν καὶ τῶν σχισματικῶν καὶ τῶν παρασυναγόντων [4]. Ven. Patm$_2$.

530. P (къ *οἱ τοίνυν Πεπουζηνοί...*) Τίς ἡ αἵρεσις τῶν Πεπουζηνῶν. V Patm$_1$.

531. P (къ *διὰ τὸ ἀσυγχώρητον εἶναι...*) Ποῖον ἀσυγχώρητον πταῖσμα. Patm$_2$.

532. P (къ *οἱ Καθαροὶ καὶ αὐτοί...*) Περὶ [5] Καθαρῶν. Patm$_2$.

533. P (къ *ἔδοξε τοῖς ἀρχαίοις...*) Τί ἔδοξε Κυπριανῷ καὶ Φιρμιλιανῷ περὶ Καθαρῶν καὶ Ἐγκρατιτῶν καὶ Ὑδροπαραστατῶν. Patm$_2$.

534. V (къ *οἱ δὲ τῆς ἐκκλησίας ἀποστάντες...*) Περὶ ἀποσχιστῶν καλλίστη κρίσις.

(къ *τὸ δὲ τῶν Ἐγκρατιτῶν κακούργημα...*) **535**. Ven. Ἔθους γὰρ αὐτοῖς ὄντος μὴ βαπτίζειν τοὺς προσιόντας, ἤμειψαν κακούργως τὸ τοιοῦτον ἔθος καὶ ἤρξαντο βαπτίζειν τούτους.

[1] τί φησι проп. Patm1. [2] σχίσματα Patm1. [3] Pitra I 577 23: ἀποσχισάντων. [4] παρασυναγωγῶν Ven. [5] τῶν вставл. Patm2.

536. P Περὶ [1] τῶν Ἐγκρατιτῶν τὸ κακούργημα. Patm$_2$.

537. (къ *νομίζω τοίνυν, ὅτι...*) Ἀνάγνωθι τὸν μζ' κανόνα περὶ τοῦ αὐτοῦ [2] κεφαλαίου. Patm$_2$ Ath.

538. P (къ *ἐπὶ τὸν βαπτισμόν*) Ὅρα, μὴ "ἀπὸ τοῦ βαπτισμοῦ" εἶχεν.

II. **539.** V Ὅτι δέκα ἔτεσιν ἐπιτιμῶνται αἱ τὰ φθόρια ποιοῦσαι.

540. P Περὶ τῆς κατ' ἐπιτήδευσιν φθειράσης [3] τὸ κατὰ γαστρός. Patm$_1$ Patm$_2$.

541. Patm$_2$. Ὅτι ἡ φθορὰ τοῦ ἐμβρύου φόνος ἐστίν.

III. (къ *ἀρχαῖος ἐστι κανών...*). **542.** V Τῶν ἱερῶν ἀποστόλων.

543. Patm$_2$. Σημείωσαι ἀρχαῖον κανόνα.

544. P Περὶ διάκονος [4] πορνεύσαντος. Patm$_2$.

545. P (къ *δι' ἑτέραν δὲ αἰτίαν...*) Σημείωσαι αἰτίαν πάνυ ἀναγκαίαν.

546. P (къ *καθόλου ἀληθέστερον...*) Τίς ἡ καθόλου τῆς ἁμαρτίας ἰατρεία. Patm$_2$.

IV. **547.** V Τίνας βούλεται ὁ ὑπὸ τῶν ἐν Νεοκαισαρείᾳ πατέρων ἐκτεθεὶς κανὼν πλείστοις γάμοις περιπεσόντας, οὗτος ὁ κανὼν ἐξηγεῖται· ὅτι τοὺς τριγάμους φησὶν ἐκεῖ ἢ πολυγάμους· ἀλλαχοῦ γὰρ οἱ πατέρες τῶν τοιούτων οὐκ ἐπεμνήσθησαν γάμων, ἵνα πρὸς ἐκεῖνα τὴν παροῦσαν διάταξιν ἀναφέρωμεν καὶ στάσιν τῷ πράγματι προσπορίζωμεν.

(къ *ὀνομάζουσι δὲ...*). **548.** V Ἐκ τούτου ἀναμφιλέκτως διαγινώσκεται, ὡς τοὺς τριγάμους φησὶ καὶ πολυγάμους.

549. P Ὅτι τὴν τριγαμίαν πορνείαν ὀνομάζουσι κεκολασμένην. Ven. (къ *διὸ καὶ ὁ κύριος...*). **550.** V Τὸ "διὸ καὶ ὁ κύριος". αἰτία τοῦ "διό"· οὐκ ἠνέσχετο ἐπὶ τῷ τῆς πολυγαμίας ὀνόματι τὸν τρίγαμον ἀφεῖναι, ὡς τοῦ μὲν τριγάμου ἰασίμου ὄντος τῷ ἐπιτιμίῳ (σωφρονιζόμενον ἐᾷ τοῦτον τῇ συζυγίᾳ), τοῦ δὲ πολυγάμου οὐκέτι, εἰ μὴ καὶ τοῦ ἀθέσμου ἀπόσχοιτο συνοικεσίου. καὶ δῆλον ἀφ' οὗ πρὸς τὴν πορνείαν ἀφωμοίωται τὴν ἀκόλαστον· εἰ γὰρ ὁ τρίτος κεκολασμένη πορνεία, ὁ τούτους ὑπερεκπίπτων ἀκόλαστος ἀναντιῤῥήτως, ὃς οὐδὲ ἄξιος τῷ τοῦ ἀνδρὸς ἢ γυναικὸς καλεῖσθαι προσρήματι.

[1] περὶ проп. Patm$_2$. [2] περὶ τούτου τοῦ Ath. [3] φθαρείσης Patm$_1$. [4] διακόνου Patm$_2$.

551. P Σύννουν.

552. V (ко второй половинѣ) Πάνυ ἀκριβῶς τῷ ὡρισμένῳ τῆς ἐπαναφορᾶς κατησφαλίσατο τὸν λόγον, ὡς οὔτε τὰ κατόπιν μικρῷ ὁ νῦν λόγος περιλαμβάνει, οὔτε τὰ ἐν ἐκείνοις περὶ τῶν παρόντων ἐνδείκνυταί τι.

553. P Τί δεῖ ποιεῖν τοῖς ὑπὲρ διγαμίαν πεσοῦσιν.

554. V (къ *ἐπὶ τῶν τριγάμων πενταετίαν*...) Ὡς εἰ ὁ δίγαμος δύο ἔτεσιν ἐπιτιμητέος, ὁ τρίγαμος τέτρασι κατὰ τὸ διπλάσιον καί τι τούτοις μικρὸν πρός· οὐ μέντοι καὶ τοῖς περαιτέρω τὸ συζύγιον παρατείνουσιν, ὡσαύτως ἀναποβλήτως ἔχουσι τοῦ γυναίου, χρηστέον (πῶς γὰρ οἵ γε μὴ ἄξιοι τῷ τοῦ νομίμου γάμου προσρήματι σεμνύνεσθαι, τῇ πρὸς ἀλλήλους σχέσει ὀνομαζόμενοι;), ἀλλ' ὥσπερ οἱ κατ' ἀκόλαστον πόρνοι, οἷς καὶ προβαίνων τούτους ἐξομοιώσεται, ἀναχωροῦντες τοῦ πάθους καὶ τοῦ τὴν πληγὴν προξενήσαντος πάντῃ ἀπαλλασσόμενοι, οὕτω τοῖς ἐπιτιμωμένοις ὑπάγοιντο.

555. V (къ *ὡς οὐκέτι ἀξίων ὄντων τῶν ὑπερεκπεσόντων*...) Σκόπει, ὅτι τῶν ὑπερεκπεσόντων εἶπεν, οὐχὶ δὲ τῶν ἐκπεσόντων· ἐξέπεσεν μὲν γὰρ τοῦ δευτέρου μόνος ὁ τρίτος, ὑπερεξέπεσον δὲ οἱ τούτου ἑξῆς, οἳ οὐδὲ τῷ τοῦ ἀνδρὸς ἢ τῆς γυναικὸς ἄξιοι καλεῖσθαι προσρήματι (τοῦτ' ἔστιν ἔννομος γάμος), ἀλλὰ πρὸς τὸ τῆς πορνείας ἐξάγιστον ἀποσκυβαλίζονται· καὶ ἵνα μὴ νομίσῃς, ὅτι τούτοις συντάττει καὶ τοὺς τριγάμους, ἐπάγων τι φησί, "συνήθειαν δὲ κατελάβομεν", οὐκ ἐπὶ τῶν τοιούτων, ἀλλ' "ἐπὶ τῶν τριγάμων", τῷ ὡρισμένῳ τοῦ ὀνόματος ἀποδιϊστῶν καὶ δεικνύς, ὡς οὐκ ἐπὶ τῆς αὐτῆς τῶν τριγάμων ἦν ἐννοίας τὸ τοῦ κυρίου ἐπὶ τῇ Σαμαρείτιδι κομίζων ὑπόδειγμα, ἀλλὰ τὸ μὲν περὶ τῶν ὑπερόριον τοῦ τρίτου φερομένων· ὁ τρίτος δὲ κατ' οὐδὲν αὐτοῖς κοινωνεῖ, ὅσον εἰς ἀθέτησιν ἐννόμου γάμου.

556. P Περὶ τριγάμων [1] καὶ πολυγάμων. Ven.

557. P Ἀνάγνωθι τὸν η' κανόνα περὶ τοῦ αὐτοῦ κεφαλαίου. Ven. Ath.

V. **558.** P Πῶς δεῖ δέχεσθαι τοὺς ἐπὶ ἐξόδῳ αἱρετικούς.

VI. **559.** V Ἀλλ' οἱ νῦν οὐ βούλονται τοῦτο, ἀλλ', εἰ μόνον ὀνόματι σεμνῷ τὸ αἴσχιστον ὀνομασθείη, οἴονταί τι δύνασθαι τὴν κλῆσιν ἀπὸ τῆς ἀσελγείας ἐπικοσμεῖν καὶ μεταμείβειν τὸ τοῦ πράγματος ἄτοπον.

[1] Γάμων Ven. (вм. Περὶ τριγάμων).

VII. **560**. Ven. Οἱ μὲν γὰρ ἀῤῥενοφθόροι καὶ ζωοφθόροι καὶ μοιχοὶ τῇ πεντεκαιδεκαετίᾳ ὑποπίπτουσιν, οἱ δὲ φονεῖς καὶ φαρμακοὶ τῇ εἰκοσαετίᾳ. εἰδωλολάτρας δὲ οἶμαι λέγειν αὐτὸν τοὺς γόητας καὶ τοὺς μάντεις (τρόπον γάρ τινα καὶ αὐτοὶ εἰδωλολατροῦσιν, ἐπικλήσεσιν χρώμενοι δαιμονίων), ἐπεὶ οἱ ἀπ' ἀρχῆς εἰδωλολάτραι μετανοοῦντες καὶ βαπτιζόμενοι αὐτίκα δεκτοί εἰσιν, οἱ δὲ τὸν Χριστὸν ἀβιάστως ἀρνησάμενοι καὶ εἰδωλολατρήσαντες ἐν ὅλῃ τῇ ζωῇ αὐτῶν ὀφείλουσι προσκλαίειν.

VIII. **561**. P (къ *Ἀκούσιον μὲν γὰρ...*) Τί ἀκούσιον ἁμάρτημα.

562. P (къ *Ἑκούσιον δὲ πάλιν...*) Περὶ ἑκουσίων φόνων. Patm₁ Patm₂.

563. P (къ *οἵ τε ἐν τοῖς πολέμοις...*)Περὶ τῶν ἐν τοῖς πολέμοις ἀναιρούντων.

564. P (къ *περίεργον φάρμακον*) Σημείωσαι περίεργον φάρμακον.

IX. **565**. P Περὶ τῶν πορνευόντων ἀνδρῶν τε καὶ γυναικῶν τὸ διάφορον.

X. **566**. Ven. (къ *Σευῆρον*) Ὁ μὲν Σευῆρος ἐπίσκοπος ἦν Βασάδων· τὰ δὲ Μίνδανα ἀγρὸς Λογγίνῳ μέν τινι διαφέρων, τῇ ἐφορείᾳ δὲ ὑποκείμενος τῆς ἐπισκοπῆς Μισθείας, εἰς ὃν χειροτονηθεὶς παρὰ τοῦ Σευήρου πρεσβύτερος ὁ Κυριακὸς καθωρκώθη μὴ ἐξ αὐτοῦ ἀναχωρήσειν. ἐπεὶ δ' οὐκ ἔξεστιν εἰς ἀλλοτρίαν ἐνορίαν ἱερᾶσθαι τὸν ὑπὸ τοῦ Βασάδων κεχειροτονημένον, μετετέθη ἐκεῖθεν· καὶ ὁ μὲν Λογγῖνος, ἀγαπῶν τὸν Κυριακόν, ἐβλασφήμει τοὺς τῆς ἐκκλησίας διὰ τὴν μετάθεσιν, ὁ δὲ Κυριακὸς ἐδόκει ἐπιορκεῖν ἀπὸ Μινδάνων μετατεθείς.

567. Ven. (къ *ἀργίας*) Τὸ περὶ τὰ κακὰ ἐνεργεῖν ἀπὸ τῶν καλῶν ἀργεῖν ἐστι. ἄρα οὖν καὶ ἡ κατὰ τῆς ἐκκλησίας βλασφημία καὶ ὁ μῶμος ἀργολογία καλοῦ καὶ λέγοιτο ἂν καὶ εἴη.

XIII. **568**. Ven. Ὅρα, πῶς οὐδὲ ὁ ἅγιος αὐτὸς θαῤῥεῖ, οἷς διορίζεται νῦν· ἄτοπον γὰρ τὸ ὑπὲρ ἐκδικήσεως εὐσεβείας καὶ σωφροσύνης δίκην ὑπέχειν τινά.

569. V (къ *ὁ κανὼν*) Τῶν ἀποστόλων αὐτῶν.

XV. **570**. P (къ *πρὸς τοὺς ἰχθύας ἀκαταλλήλως...*) Σημείωσαι ἑρμηνείαν. Patm₁.

571. P (къ *οὐ γὰρ εἴ τι ἔνυδρον...*) Ὅτι οὐκ εἴ τι ἔνυδρον, τοῦτο πάντως ἰχθύς. Patm₂.

XVI. **572.** P Ὡραία ἑρμηνεία.

Во II посланіи. **573.** P (къ заглавію). Σχόλιον [1]. Ἐκ ταύτης καὶ τῆς μετ' αὐτὴν ἀνελήφθησαν οἱ τοῦ ἁγίου κανόνες, καθὰ προδεδήλωται, οἱ τοῖς [2] ν' τίτλοις τῆς κανονικῆς ὑποδιαιρούμενοι βίβλου [3]. Ven. Patm₁ Patm₂.

574. V (въ предисловіи къ *ὁδῶν ἔμπειροι καὶ παρεσκευασμένοι πρὸς τὰς τοιαύτας ὑπηρεσίας*) Πληθυντικὴ φωνὴ ἐπὶ ἑνικῆς σημασίας.

XVII. **575.** Ven. Πῶς ἰδίᾳ μὲν συγχωρεῖ τούτους τῇ μυστικῇ καθυπηρετεῖσθαι λειτουργίᾳ, ἐπὶ δὲ τοῦ κοινοῦ ἀπείργει.

XVIII. **576.** Ven. (къ *ἐμοὶ δὲ δοκεῖ...*) Ἀνάγνωθι τὸ δ' κεφάλαιον. P Patm₁ Patm₂. Ath.

577. P (къ *τὸ τῶν χηρῶν ἁμάρτημα...*) Διαφορὰ [4] ἁμαρτήματος χήρας καὶ παρθένου. Patm₂.

578. P (къ *παρθένος ὀνομάζεται...*) Ποίαν οἶδεν παρθένον. V Patm₂.

579. Ven. (къ *τὰς δὲ ὁμολογίας τότε ἐγκρίνομεν...*) Πότε ὀφείλει γίνεσθαί τις μοναχός, ἐν ποίᾳ ἡλικίᾳ.

580. V (къ *ἃς οὐ ῥᾳδίως προσδέχεσθαι χρὴ...*) Οὕτω καὶ νῦν, εἰ σωφρονοῦμεν, ἐπὶ τῶν μοναζουσῶν χρὴ ποιεῖν, ἀλλὰ μὴ τῶν προσαγόντων ταῖς γνώμαις ἀρκουμένους αἰσχύνης τὰ ἱερὰ πληροῦν μοναστήρια.

XIX. **581.** P Περὶ ἀνδρῶν μοναχῶν ἐκπεσόντων Patm₂.

582. Patm₂. Ἐν τῷ ξ' κανόνι τῷ τῆς μοιχείας τούτους [5] ὑπάγει ἐπιτιμίῳ. Ath.

XX. **583.** P Περὶ τῶν ἐν αἱρέσει οὐσῶν καὶ παραπεσουσῶν.

584. P (къ *καὶ καθόλου τὰ ἐν τῷ κατηχουμένῳ βίῳ...*) Καθολικὸς λόγος περὶ κατηχουμένων. Patm₂.

585. Ven. (къ *τὰ πρεσβεῖα τῆς γενέσεως*) Τὰ τίμια καὶ σεβάσμια προνόμια τῆς παλιγγενεσίας εἴτουν τοῦ βαπτίσματος.

[1] σχόλιον проп. Ven. [2] τῆς cod. [3] βίβλου проп. Ven. [4] Διαφορὰν Patm₂. [5] αὐτοὺς Ath.

586. V (къ *γενέσεως*) Τῆς πνευματικῆς δηλονότι.

587. Ven. Ἰστέον, ὅτι οὗτος μὲν ὁ ιθ′ κανὼν τοὺς μονάσαντας ἄνδρας, εἶτα πρὸς τὸν φιλόσαρκον ἐκκυλισθέντας βίον, τοῖς τῶν πόρνων ὑποτίθεται ἐπιτιμίοις· ὁ δέ γε ξ′ ταῖς παρθενεύειν ἐπαγγειλαμέναις γυναιξὶν ἢ καὶ τὸν μονήρη βίον ὑπελθούσαις, ἔπειτα παραπεπτωκυίαις, ὡς μοιχαλίσιν ἐπιτιμᾷ· καθάπερ γὰρ ἐπὶ τῶν σωματικῶν συνοικεσίων ὁ μὲν ἀνὴρ πορνεύων ἐφ' ἑτέραν γυναῖκα κρίνεται πορνείας, ἡ δὲ γυνὴ πρὸς ἄνδρα ἕτερον ἀποκλίνουσα μοιχείας ὑπέχει δίκην, καθά φασιν οἱ τούτου τοῦ μεγάλου κανόνες, ὅ τε ιθ′ καὶ ὁ κ′, καὶ ὁ μὲν ὡς πόρνος, ἡ δὲ ὡς μοιχαλὶς ἐπιτιμᾶται, οὕτω καὶ ἐπὶ τῶν πνευματικῶν κατὰ τὸ ἀνάλογον ἧττον μὲν ὁ ἀνήρ, βαρύτερον δὲ ἡ γυνὴ τιμωρεῖται.

588. V Οὐκ ἀντιφθέγγεται τὰ παρόντα οὔτε τοῖς ἐν Νικαίᾳ, οὔτε τοῖς ἐν Νεοκαισαρείᾳ· οἱ μὲν γὰρ περὶ τῶν καθ' ἡμᾶς τῷ ὄντι πιστῶν ἐθέσπισαν, ἵν' εἴποτε κατηχούμενος παρ' ἡμῖν ἁμαρτῇ, ἐπιτιμίῳ ὑποβάλληται· τῷ δὲ νῦν ἱερῷ Βασιλείῳ ἔοικέ μοι περὶ τῶν ἐν αἱρέσει κατηχουμένων εἶναι τὸν λόγον. καὶ δῆλον ἀφ' ὧν ἐπάγει, τούτους μὴ ἄνευ βαπτίσματος, ὃ καὶ τοῖς θείοις ἀποστόλοις δοκεῖ, τὴν καθ' ἡμᾶς παραδέχεσθαι ἐκκλησίαν· εἰ γὰρ οὐδὲ οἱ παρ' αὐτοῖς πιστοί, ἅτε δὴ ἐσκοτισμένοι τῇ αἱρέσει, οὐκ ἐπιγινώσκουσι τὸ εὐάρεστον τῷ κυρίῳ, πολλῷ ἂν δέοι τοὺς κατηχουμένους αὐτῶν εἰδέναι· τῷ δὲ μὴ εἰδότι συγγνωστὸν πᾶν τὸ ἁμαρτανόμενον. οὐ μὴν οἵ γε καθ' ἡμᾶς κατηχούμενοι ἀγνοοῦσιν (πῶς γάρ;), οἱ γευσάμενοι θεοῦ καλὸν ῥῆμα διὰ τῆς τῶν θείων γραφῶν ἀκροάσεως, ὡς καὶ ἀλλαχοῦ εἴπομεν, ἀφ' οὗ καὶ τὸ ἐπιτιμᾶσθαι αὐτοὺς ἔννομον ἀπεδείξαμεν καὶ δικαιοσύνης ἐχόμενον. οὔκουν περὶ τῶν καθ' ἡμᾶς κατηχουμένων ὁ λόγος, ἀλλὰ περὶ τῶν κατὰ τὰς αἱρέσεις· εἰκὸς γὰρ αὐτοὺς μετὰ τῶν ἄλλων καὶ τοῦτο πλημμελεῖν, τὸ ἐν τῷ κατηχουμένῳ βίῳ παρθενίας ἔχειν ἐπάγγελμα, ὃ παρ' ἡμῖν οὐκ ἔστι. πῶς γὰρ οἷόν τε ἐκκλησιαστικὸν τάγμα καὶ οὕτω σεμνόν τε καὶ τίμιον ἐκ κατηχουμένου βίου συγκροτεῖσθαι; ἢ πῶς παρθένος ἡ ἔξω τοῦ ἱεροῦ θαλάμου διαβιοῦσα καὶ τῷ ἀνεπισημάντῳ καὶ ἀσφραγίστῳ εὐεπιχείρητος οὖσα τοῖς θανατοῦσι θηρίοις; εἰ δέ τις τοῦτο μὲν οὐ προσίεται, φάσκει δὲ μὴ ἱκανὸν εἶναι πρὸς ἀπόδειξιν τοῦ λόγου, ὡς τοὺς κα(τὰ) τὰς αἱρέσεις κατηχουμένους ἀνευθύνους ἀφίησιν ὁ παρὼν Βασιλείου κανών, οὐ τοὺς καθ' ἡμᾶς, τῷ κελεύειν αὐτὸν μὴ ἄνευ βα-

πτίσματος αὐτοὺς παραδέχεσθαι (τοῦτο γὰρ κατὰ πάντων ἐπιτέτραπται τῶν αἱρετιζόντων καὶ Βασιλείῳ καὶ τοῖς ἀποστόλοις, ὡς ἔφθημεν γράψαντες, καὶ τοῖς ἀρχαιοτέροις τῶν ἱερῶν πατέρων), ἀλλὰ περὶ παντὸς κατηχουμένου ὁ λόγος ἐκλαμβανόμενος προέχεσθαι Βασίλειον ὑπάγει, ὡς ἐναντία τοῖς ἄλλοις πατράσιν ἀποφαινόμενον,—ἐγὼ μὲν τοσοῦτον ἀγνόημα κατασκεδάζειν τοσούτου ἀνδρὸς ἢ αὐθάδειαν πρὸς τοὺς πρὸ αὐτοῦ ἱεροὺς πατέρας τούτῳ ἐπικαλεῖν ὀκνῶ, ἀλλὰ καὶ διανοηθῆναι. εἰ μή τις οὖν καταδέχοιτο τοῦτο, ἐκεῖνο εἰπεῖν ἔχω, ὡς, εἰ καὶ περὶ τῶν τῷ ὄντι κατηχουμένων ὁ λόγος οὐδὲν οὐδ᾽ οὕτως πρόκριμα Βασιλείῳ, ὡς τοῖς ἱεροῖς ἀναπίπτοντι πατράσιν· οἱ μὲν γὰρ περὶ τῶν ἀναιδῶς ἁμαρτανόντων καὶ ἀκολάστως τὸ ἐπιτίμιον ἀφορίζουσιν, οὗτος δὲ περὶ τῶν ἐχόντων τινὰ συγγνώμην τῷ εὐσχημονεστέρῳ δῆθεν τοῦ πράγματος ταῦτά φησιν (γάμον γὰρ ἀνθείλοντο τοῦ ἱεροῦ ἐπαγγέλματος), πλὴν εἰ μὴ τὸ ἐν αἱρέσει, ὃ τῷ κατηχουμένῳ ἐνάμιλλον βίῳ, τὸ τοιοῦτον ἠχρείου ἐπιτήδευμα· τίνι γὰρ ἀνακειμένη τὴν παρθενίαν ἡ τοῖς ψευδοχρίστοις ἀκολουθήσασα καὶ τοῦ θείου νυμφῶνος πόῤῥω που πλανωμένη; οὐδὲν ἂν ἡ τοῦ σεμνοῦ ὀνόματος, γάμου φημί, εὐσχημοσύνη τὸ ἄτοπον τοῦ πράγματος ὤνησεν· οὐ γὰρ τὸ ὄνομα τὸ πρᾶγμα, ἀλλὰ τὸ πρᾶγμα ἡ τοῦ ὀνόματος αἰτιάσεται ποιότης.

589. V (къ *ὥστε ἀναγκαιότατα...*) Τοιοῦτόν ἐστι τὸ λεγόμενον. ὥστε οὐδὲν πρόκριμα φέρει ἐπὶ τοῖς τοιούτοις ἡ ἀθέτησις τοῦ ἐπαγγέλματος· τὸ γὰρ τῆς πνευματικῆς ἀναγεννήσεως πρεσβεῖον ἀναγκαιότερον τὰ προγενέστερα ἑαυτοῦ λύειν ἐγκλήματα.

XXII. **590.** V (къ *τοῖς πορνεύουσιν...*) Τοῖς ἁπλῶς καὶ ἅπαξ ἐπὶ μιᾷ μιανθεῖσιν.

591. Ven. Τὸ ἐπιτίμιον ἐν τῷ λ' κεφαλαίῳ ὁρίζει $Patm_2$ Ath.

592. P Σημείωσαι τὸ "ἐκ διαφθορᾶς".

593. P Σημείωσαι τὸ ἐπιτίμιον πορνείας. $Patm_1$.

XXIII. **594.** V Περὶ τοῦ τὴν τοῦ ἀδελφοῦ γυναῖκα ἀγομένου.

595. P (къ *ἐπιστολίδιον*) Τὴν πρὸς Διόδωρον λέγει, κειμένην καὶ αὐτὴν ἐν τῷ παρόντι τεύχει. Ven. $Patm_1$ Ath.

XXIV. **596.** V (къ *χηρεύσαντι*) Χηρεύσαντι ἐκ πρώτης δηλαδὴ γυναικός· οὐ γὰρ καὶ ἐκ δευτέρας, ἐπεὶ μάτην τὰ πρὸ τούτων ἐπὶ τῶν τριγάμων ἐκπεφωνημένα.

597. P (къ началу) Τίς ἡ χήρα.

XXV. **598.** V Καὶ τοῦτο ἐπὶ τοῦ ἐν πρώτῳ γάμῳ ἢ δευτέρῳ ἢ τρίτῳ ἀκουστέον.

XXVI **599.** V Οὐκ ἀορίστως τοῦτο οὐδὲ ἀδιαφόρως φησίν, ἀλλὰ τοὺς ἢ κατὰ πρώτην ἔντευξιν γάμου οὕτως συναπτομένους, ἢ τοὺς μὴ ἐξ ἀριθμοῦ τὸ κεκωλῦσθαι παρέχοντας.

600. Ven. Ζήτει τῆς ϛ′ συνόδου κανόνα κϛ′.

XXVII. **601.** P Περὶ ὅρκων.

XXIX. (къ *Ἄρχοντας μέντοι ὀμνύειν...*) **602**[a]. P Περὶ ὅρκου.

602[b]. $Patm_1$ Περὶ ὅρκων.

603. Ven. (къ *θεραπεύεσθαι*) Διορθοῦσθαι διὰ νουθεσίας.

XXX. **604.** V (къ *τὸ δὲ μὴ βιαίως...*) Τοῦτο προστίθησιν ἀντιπῖπτον λύων· πολλαὶ γὰρ ἑκουσίως ἑαυτὰς ἐκδιδοῦσαι προβάλλονται, πρό γε τῆς αἰδοῦς τοῦ πραττομένου, τὸ μὴ ἐθελουσίως, ἀλλ' ἐκ βίας ὑποστῆναι τὸν γάμον, οὗ χάριν τὰ παρόντα ὁ σοφώτατος προστίθησιν ἰατρός, φθάνων τῇ ἀγχινοίᾳ τὰς προφάσεις καὶ ἀκριβεῖ δοκιμασίᾳ τὴν θεραπείαν διατιθέμενος,

XXXII (къ *τὴν πρὸς θάνατον ἁμαρτίαν*). **605.** V Λέγεται πρὸς θάνατον ἁμαρτία παρὰ τῷ θεολόγῳ Ἰωάννῃ καὶ πᾶσα σωματικὴ ἀκαθαρσία· ἀλλ' ἐνταῦθα, δοκῶ μοι, καλῶς ἔχει τὰ παρακείμενα καὶ καταλλήλως, εἴ γε περὶ ἐκείνων μὲν εἴρηται πολλαχοῦ, περὶ δὲ τούτων ὑποτίθησι ταῦτα οὐδαμοῦ· πλημμελὲς δὲ τοιοῦτον ἄνδρα ἡγεῖσθαι ταὐτολογεῖν.

606. V Πρὸς θάνατον ἁμαρτία ἡ ἀπὸ τῶν πολιτικῶν νόμων ἀπειλοῦσα τὸν θάνατον τῷ διαπραξαμένῳ. ἵν' οὖν μή τις νομίσῃ πρὸς τῇ γυμνώσει τῆς ἱερωσύνης ἔτι καὶ δίκας ὑπέχειν τοῦ τολμήματος, ταῦτά φησι· καὶ γὰρ εὔλογόν τισι καταφαίνεται μὴ ὁμοίαν ὑπέχειν τιμωρίαν φονέα καὶ πόρνον. εἴπερ οὖν ἡ πορνεία τῆς ἱερᾶς ἀπαμφιέννυσι τιμῆς, πλεῖον ὀφείλει δήπου ὁ φονεὺς ἀποτίνειν ποινήν. ἀλλ' οὐ δικαιοῖ τοῦτο ὁ πιστότατος οἰκονόμος, θάνατον καθάπαξ ἐπιστάμενος πολλῷ δεινότερον τοῦ σωματικοῦ τὸ εἰς τὴν θείαν ἐπηρεάζον τιμήν (τί δ' ἄν τις καὶ πάθοι βαρύτερον τοῦ θανεῖν καὶ τότε τὸ ὀλεθριώτερον τοῦ σωματικῶς ἀποβιῶναι;), ὡς τῆς τοῦ κρείττονος ἀλλοτριοῦν θεραπείας, δι' ὃ πᾶσα ἡ ἐπὶ γῆς ἡμῖν πραγματεία διῳκονόμηται.

XXXIII. **607.** Ven. Ζήτει τὸν ε' κανόνα τῆς ἐν Νικαίᾳ συνόδου.

XXXVII. **608.** V (къ *ἐπὶ μὲν τῇ πρώτῃ*) Τῇ ἀφαιρεθείσῃ ὡς ἀλλοτρίᾳ δηλονότι.

XXXIX. **609.** V (къ *μοιχῷ συζῶσα*) Τὴν ἀνεχομένην συζῆν τῷ τὴν πρώτην ἀλόγως ἐγκαταλιπόντι φησί. καὶ γὰρ μοιχός ἐστι καὶ αὐτὸς κατὰ τὴν τοῦ κυρίου φωνήν, ἀλλὰ καὶ ὁ τὴν ἀπολελυμένην γαμῶν μοιχός.

XLII. **610.** V (къ концу) Ἀλλ' ἡ χήρα οὐχ ὑπεξούσιος· ἅπαξ γὰρ γημαμένη ἀπολέλυται τῆς ἐξουσίας.

XLIII. **611.** V Φονεὺς μὲν ἀναντιῤῥήτως, εἴτε δὲ ἑκούσιος ἢ καὶ ἀκούσιος ὁ τὸ πρᾶγμα ἐκλογιζόμενος εἴσεται, ταῖς προειρημέναις ἀκριβολογίαις ἑπόμενος.

XLIV. **612.** V Ἐντεῦθεν γνῶθι, τί τὸ ὑπὸ τοῦ κυρίου δοθὲν ἡμῖν δεσμεῖν καὶ λύειν· οὐ γὰρ καὶ παντὶ τῷ μὴ προσηκόντως γινομένῳ ἀνεῖται ἡμῖν ἡ τοιαύτη δωρεά, ἀλλὰ τῶν ἀπεγνωσμένων μὲν ἀνθρώπων ὑπολήψει, διὰ δὲ τὸ ἀξίως τεταπεινῶσθαι τὸν ἀπεγνωσμένον τὰ σπλάγχνα ἡμᾶς ὑπανοίγειν θεοῦ κατεπαγγέλλεσθαι αὐτῷ τεθαῤῥηκότως ἐκκαλουμένῳ· ὃ καὶ αὐτὸς Χριστὸς ἐπί τε τῇ πόρνῃ καὶ τῷ παραλύτῳ πεποίηκεν τῷ πόνῳ τῶν συγγνωσθέντων καμπτόμενος. μωρὸν δὲ καὶ ἠλίθιον ἀληθῶς τοῖς μηδὲν ἐκπεπονηκόσιν τὴν ἄφεσιν ἐπαγγέλλεσθαι, τῇ ἐξουσίᾳ καταχρωμένους ἀνευλαβῶς καὶ ἐπὶ τῷ βορβόρῳ τὴν τοῦ μύρου χρῖσιν σχεδιάζοντας εἰς πλείονος ἀφροσύνης καὶ ἀναξιότητος τοῦ πραττομένου παράστασιν.

613. P (къ *εἰς κοινωνίαν*) Ὅρα, μὴ "εἰς μετάνοιαν" εἶχεν.

XLVI. **614.** V Ὡς ἐὰν παραμείνῃ μετὰ ταῦτα, μοιχαλίς ἐστι τῷ προηγησαμένῳ τύπῳ.

XLVII. **615.** P Ἀνάγνωθι τὰ τελευταῖα τοῦ α' κανόνος. Ven. Ath.

(къ концу: *ὥστε ἐὰν ἀρέσῃ τοῦτο, δεῖ πλείονας...*) **616.** V Σκόπει τὸ μέτριον ἐντεῦθεν καὶ ταπεινὸν τοῦ θεοφιλεστάτου πατρός.

617. Ven. Ὅτι πλειόνων ἐπισκόπων εἰς ταὐτὸ σύνοδος ἐκτίθεσθαι τοὺς κανόνας ὀφείλει καὶ διὰ τί.

XLVIII. **618.** V (къ началу) Τοῦτο, μακάριε πάτερ, καὶ Παύλῳ δοκεῖ, ἢ καταλλάττεσθαι τῷ ἀνδρί, ἢ μένειν οὕτως. Παῦλος δὲ ἀπὸ

κυρίου τοῦτο λαβὼν ἔχει [1], ὃ καὶ νῦν αὐτὸς προφέρων ἀναπτύσσεις σοφώτατα.

L. **619**. V (къ *νόμος*) Τὸν πολιτικόν φησι νόμον· οὔπω γὰρ ἦν τοῦτο ὡρισμένον. δημοσίας δὲ καταδίκας φησὶ τὸ μὴ ἐκβάλλεσθαι τῶν ἱερῶν ἔξω πυλῶν, μηδὲ διὰ τούτου πᾶσι κατάφωρον τῷ ἐπιτιμίῳ ποιεῖν ὑποκείμενον· εἴρηκεν γὰρ καὶ ἀνωτέρω, ὅτι δεῖ μὴ πάντῃ τοὺς τοιούτους ἀπείργειν τῆς ἐκκλησίας.

Въ III посланіи. **620**. P (къ заглавію) Σχόλιον [2]. Ἐκ ταύτης καὶ τῆς πρὸ αὐτῆς ἀνελήφθησαν οἱ τοῦ ἁγίου κανόνες, καθὰ προδεδήλωται, οἱ τοῖς ν' τίτλοις τῆς κανονικῆς ὑποδιαιρούμενοι βίβλου. V_1Ven. Ath.

LI. **621**. P Ὅτι τοῖς κληρικοῖς τοῖς ἐκ τοῦ βαθμοῦ ἐκπίπτουσιν οὐ δίδοται ἄλλο ἐπιτίμιον. Ath.

622. Ven. Ἰστέον, ὅτι κληρικούς φαμεν πάντας τοὺς εἰς οἱανδήτινα κληθέντας καὶ κληρωθέντας, οἷον ἀφορισθέντας, ἐκκλησιαστικὴν ὑπηρεσίαν, πρὸς ἀντιδιαστολὴν τῶν μὴ ἐν κλήρῳ κατειλεγμένων ἐκκλησιαστικῷ· ὅθεν καὶ τῶν πολιτικῶν νόμων τὸ μὲν λβ' κεφ. τοῦ α' τίτλου τοῦ γ' βιβλίου τῶν βασιλικῶν τοὺς πρεσβυτέρους καὶ διακόνους καὶ ἀναγνώστας καὶ ψάλτας κληρικοὺς καλεῖ, τὸ δὲ ε' κεφ. τοῦ γ' τίτλου τοῦ αὐτοῦ βιβλίου καὶ τοὺς ὀστιαρίους ἤτοι πυλωροὺς συναριθμεῖ τοῖς κληρικοῖς. Παραπεσεῖν δέ ἐστι τὸ ἔξω πεσεῖν τοῦ δέοντος καὶ παρατραπῆναι, ὅπερ οὐκ ἐπὶ τῶν μικρῶν εἴληπται ἁμαρτημάτων, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῶν μεγίστων, οἷα ἐστὶν ἡ τοῦ θεοῦ ἄρνησις, ὡς δυνατόν ἐστι καὶ ἐξ ἄλλων μὲν μυρίων μαθεῖν, καὶ ἐκ τοῦ κ' δὲ κανόνος τῆς ἐν Νικαίᾳ πρώτης συνόδου, ὅς φησι δεῖν τοὺς ἀπὸ τῶν Καθαρῶν λεγομένων ἐπιστρέφοντας κοινωνεῖν τοῖς ἐν τῷ διωγμῷ παραπεπτωκόσιν· ὅθεν ἴσως ἐλήφθη καὶ τῷ θεολόγῳ τὸ "Ναύατος οὐκ ἐδέξατο τοὺς ἐν τῷ διωγμῷ παραπεσόντας".

LIV. **623**. P (къ *πρὸ χρόνων οἶδα ἐπιστείλας τῇ...*) Σχόλιον. Τουτέστιν διὰ τῆς ἀνωτέρω μικρὸν γεγραμμένης ἐπιστολῆς, φαμὲν δὴ τῆς ἐνταῦθα α' κειμένης [3], ἧς ἡ ἀρχή· "ἀνοήτῳ φησὶν ἐπερωτήσαντι σοφία λογισθήσεται" [4]. Ath.

LV. **624**. V Σκόπει, ὅτι ἕτερόν φησι κοινωνίαν τῆς τῶν ἁγιασμάτων μετουσίας.

[1] сравн. I Кор. VII 11. [2] σχόλιον проп. V_1. [3] τὴν... κειμένην Ath. [4] λογισθήσεται проп. Ath.

625. P Τί ἐστι "τοῦ βαθμοῦ καθαιροῦνται".

LVI. **626.** V Διασάφησις τῶν ἐπιτιμώντων βαθμῶν.

627. Ven. Ὁ ἑκουσίως φονεύσας πρὸ τοῦ ναοῦ στήτω [1] δ' ἔτη· εἰς τοὺς ἀκροωμένους ε' ἔτη· ἐν ὑποπτώσει πιστῶν ζ' ἔτη· συστήσεται τοῖς πιστοῖς δ' ἔτη. P.

628. V Ἀνωτέρω διαφοραῖς ὑφηγησάμενος καὶ διαστείλας ταύταις τί τὸ ἑκούσιον καὶ ἀκούσιον τοῦ φόνου, νῦν τοὺς ἑκουσίως πεφονευκότας τοῖς κανόσιν ὑποβάλλει· ἐκεῖ γὰρ μόνῃ διαστολῇ χρησάμενος τοῦ κακοῦ ἐπὶ μετεώρῳ τῶν ἱερῶν προστιμημάτων κατέλιπεν [2] τὸν λόγον.

LVII. **629.** Ven. Ὁ ἀκουσίως φονεύσας πρὸ τοῦ ναοῦ στήσεται [3] β' ἔτη· εἰς τοὺς ἀκροωμένους [4] γ' ἔτη· ἐν ὑποπτώσει διατελῶν α' ἔτος [5] συσταθήσεται τοῖς πιστοῖς [6] ἐνιαυτόν. P.

LVIII. **630.** Ven. Ὁ μοιχὸς ἐν τέτρασιν ἔτεσιν προσκλαύσεται [7], ἐν ε' ἀκροάσθω, ἐν ἑνὶ [8] ὑποπιπτέτω, ἐν δυσὶ συνεστάτω [9]. P.

631. Ven. Ὁ πόρνος ἐν β' ἔτεσι προσκλαιέτω, ἐν β' ἀκροάσθω, ἐν β' ὑποπιπτέτω, ἐν ἑνὶ συνεστάτω [10]. P.

LIX. **632.** V Τὸν πολύκοινον καὶ κατὰ τὸ ἀκόλαστον πόρνον νῦν ἐπιτιμᾷ· ὁ γὰρ ἅπαξ ἐν τέσσαρσιν ἔτεσιν ἐπιτιμᾶται.

633. V (къ *ἐν τῇ κοινωνίᾳ...*) Οὐ τὸ κοινωνεῖν φησι τῷ ἀθέσμῳ γάμῳ, ἀλλ' ἐν τῇ τῶν θείων μυστηρίων κοινωνίᾳ τῷ τῶν μοιχῶν ἐπιτιμίῳ ὑποβληθείη· καὶ ὅτι τοῦτο, ἀπὸ τῶν ἐκπεπτωκότων μοναζόντων πιστούμεθα τὸν λόγον, ἐπεὶ κἀκείνους ἐπιστρέφοντας ὑποβάλλει τοῖς τοιούτοις ἐπιτιμίοις, ἐπιμένοντας δὲ ἀναθέματι οἱ ἐν Χαλκηδόνι πατέρες τῶν πιστῶν ἀπώσαντο.

634. P Ἀνάγνωθι τὸν ιθ' [11] κανόνα. Ath.

LXI. **635.** V (къ *μερισθήσεται δὲ αὐτῷ ὁ χρόνος εἰς ὑπόπτωσιν καὶ σύστασιν*) Τοῦ γὰρ προσκλαίειν καὶ ἀκροᾶσθαι παρενεχθήσεται.

LXII. **636.** V (къ *τὸν τοῦ φονέως χρόνον*) Πεντεκαίδεκα ἔτεσιν.

LXIV. **637.** V (къ *τὸν τοῦ φονέως χρόνον*) Τὸν τοῦ ἑκουσίως φονεύσαντος.

[1] στήσεται P. [2] cod. κατέλειπεν. [3] στήτω P. [4] ἐν ἀκροωμένοις P. [5] δ' ἔτη P. [6] τοῖς πιστοῖς проп. P. [7] προσκλαιέτω P. [8] δ' P. [9] ἐν δύο συστήτω P. [10] συστήτω P. [11] ξ' P.

LXVII. **638.** V (къ *'Αδελφομιξία*) Τὸν τῇ ἰδίᾳ ἀδελφῇ συμφθειρόμενον, οὐ τὸν δυσὶν ἀδελφαῖς χραινόμενον.

LXIX **639.** V (къ *κανόνι, ᾧ καὶ οἱ ταῖς ἑαυτῶν ἀδελφαῖς ἐπιμαινόμενοι*) Εἴκοσι ἔτεσι.

LXX. **640.** V (къ *ἐν χείλεσι μιανθείς*) Πρὸς αὐτὸ τὸ τετελεκέναι τὴν ἁμαρτίαν ἐγγίσας, εἶτα ἀποσχόμενος ἐν χρῷ τοῦ ἔργου χωρήσας εἰς ὅσον ἅψασθαι τῆς ἀσελγείας, κεκωλυμένος· ἅμ' ἐγχειρήσει. κατεσχημένος.

LXXIV. **641.** V (къ началу) Ἰδοὺ σαφέστατα ἐνταῦθα, ἐν οἷς τὸ δεσμεῖν καὶ λύειν ἡμῖν δέδοται παρὰ τοῦ κυρίου, οὐχ ὡς οἱ ἀγνώμονες κακοδαιμόνως βιάζονται.

642. V (къ концу *οὐκ ἔσται καταγνώσεως ἄξιος*) Ὡς Δαυίδ, Μανασσῆς, ἡ πόρνη καὶ ὁ ἐπὶ τοῦ σταυροῦ λῃστής.

LXXV. **643.** V (къ началу) Τὸ ἑτεροθαλὲς μετριάζει τὸ ἐπιτίμιον.

644^a. V Διασάφησις τῶν τῆς μετανοίας βαθμῶν.

644^b. P Σημείωσαι σαφῶς ἐνταῦθα κειμένας τῶν ἐν μετανοίᾳ τὰς τάξεις. Ath.

645. P Ὁ ἀδελφῇ συμμιανθεὶς ἢ μητρυιᾷ ἢ νύμφῃ. τριετίαν προσκλαιέτωσαν, τριετίαν ἀκροάσθωσαν, τριετίαν ὑποπιπτέτωσαν, διετίαν συστάτωσαν.

LXXVIII. **646.** V Ἐντεῦθεν τὸ ἀνωτέρω εἰρημένον πιστούσθω, ὡς ἐκεῖ τὴν ὁμοπάτριον ἢ ὁμομήτριον ἀδελφήν φησιν. διὸ ἐκεῖνον μὲν εἴκοσι ἐπιτιμᾷ ἔτεσιν, τὸν δὲ δέκα, τοὺς δὲ ταῖς ἀδελφαῖς ἐπιμαινομένους ἑπτά, διαλυομένου δηλαδὴ τοῦ ἀθέσμου συνοικεσίου.

LXXX. **647.** V (къ *πολυγαμίαν*) Ἐνταῦθα περὶ τῆς ὄντως πολυγαμίας ὁ λόγος, ἧς προσηγορίας ἀνάξιον ἡγήσατο ἀνωτέρω τὸν τρίγαμον τῷ ἐπιδιορθωτικῶς ἐπαγαγεῖν "μᾶλλον δὲ πορνείαν κεκολασμένην"[1]· ἀεὶ γὰρ αἱ ἐπιδιορθώσεις[2] ἐπὶ τὸ κρεῖττον ἤτοι ἐπὶ τακτικώτερον προίασιν.

648. V (къ *ἡμῖν*) Τοιοῦτον τὸ λεγόμενον, ὡς οἱ μὲν ἅγιοι πατέρες, ἅτε δὴ ἀπὸ ἐγκρίτου συστήματος τοῦ τῶν χριστιανῶν τηνικαῦτα πληρώματος ἀθροιζομένου, οὐκ ἀνθρώπινον ἡγήσαντο πτῶμα τὴν πολυγαμίαν, ἀλλὰ κτηνῶδες· διὸ οὐδὲ θεραπείας ἠξίωσαν. ἡμῖν δέ, ἐπεὶ χριστιανοῖς βασιλεῦσι χρωμένοις[3] οὐκέτι τὸ ἐκλελογισμένον ἐν

[1] сравн. прав. IV. [2] cod. ἐπιδιορθωθώσεις. [3] cod. χρομένοις.

τοῖς πιστοῖς ὁρᾶται, ἀλλὰ τῷ τοῦ κρατοῦντος νεύματι καὶ τῇ ἀρεσκείᾳ τὸ ἀδιάκριτον τῷ χριστιανισμῷ κατὰ τὸ πλῆθος ἐπάγεται, δοκεῖ λοιπὸν ἐν πλήθει τοσούτῳ συγκλύδων ἀνθρώπων μηδὲν τοιοῦτον ἀπογινώσκειν ἁμάρτημα. καὶ κτηνῶδες μὲν μηκέτι τοῦτο νομίζοντας ἀθεράπευτον ἐᾶν, τοῖς δὲ πρὸς ὃ ἀφωμοίωται πτῶμα καὶ τὸ ἔμπλαστρον ἐπιτρέπειν. τίσι δὲ ἀφωμοίωται; τοῖς ἀκολάστοις πόρνοις· εἰ γὰρ ὁ τρίγαμος πορνεία κεκωλυμένη (τοῦτο πάντως ἀκόλαστος), πλέον οὖν πορνείας τῆς κεκωλυμένης ἀκουστέον, καὶ πρόδηλον τοῦτο ἀπὸ τῆς τῶν ἐπιτιμίων ἰσότητος. ὥστε καὶ τοῦ μιάσματος ἀλλοτριωθήσεται, ὥσπερ κἀκεῖνοι, ὁ πρὸς θεραπείαν ἀφορμήσας· οὐ γὰρ ἂν ὑπὸ τὸν κανόνα πέσοι προσόζων καὶ διασηπόμενος τοῖς μώλωψιν ἔτι τῆς ἀφροσύνης.

649. V (къ *διὸ εὔλογον...*) Ἔδειξεν ἐκ τούτου, ὡς οὐκ ἦν πρὸ αὐτοῦ ὑπὸ ἐπιτίμιον τὸ τοιοῦτον κακόν, τῶν προγενεστέρων πατέρων διὰ τὸ ὑπερβάλλον τῆς ἀσελγείας οὐδεμίαν πίστιν νεμόντων, ὡς τὸ τοιοῦτον τολμηθείη ἂν παρὰ χριστιανοῖς. οἷς τῆς σαρκὸς πρόνοιαν μὴ ποιεῖσθαι εἰς ἐπιθυμίαν λόγος πολύς, καὶ τὸν καιρὸν συνεσταλμένον ἐπισταμένοις, ὡς καὶ τοὺς ἔχοντας γυναῖκας ὡς μὴ ἔχοντας εἶναι· ἐπεὶ καὶ Σόλων ἐκεῖνος ὁ Ἀθηναίων νομοθέτης μὴ κατὰ πατροκτόνου νομοθετήσας, εἶτα τὴν αἰτίαν ἐρωτηθείς, οὐκ ἔφη εἶναι πιστὸν τὴν φύσιν τοιοῦτόν ποτε υἱὸν ἐνεγκεῖν[1]· ἐπεὶ τοιγαροῦν ἀνθρώπινον ἀνεφάνη, εὔλογον μὴ ἀθεράπευτον αὐτὸ καταλιπεῖν, τῇ τοῦ δεσμεῖν καὶ λύειν ἐξουσίᾳ κεχρημένων ἡμῶν.

LXXXI. **650.** V (къ *κατὰ τοὺς ἤδη παρὰ τῶν πατέρων ἡμῶν ἐξενεχθέντας κανόνας*) Τῶν ἐν Νεοκαισαρείᾳ καὶ τῶν ὑπὸ Πέτρου τοῦ μάρτυρος ἐκτεθέντων.

LXXXII. **651.** V (къ концу) Σκόπει καὶ ἐντεῦθεν, ὅτι κοινωνίαν καὶ τῶν εὐχῶν τὴν σύστασιν οἶδεν καλεῖν.

LXXXIV. **652.** V Ἀλλ' οὐχ οὕτως νῦν ἀξιοῦσι, μακάριε ἄνθρωπε, ἀλλὰ τῇ τῶν ἐλεεινῶν ἱερέων ῥαστώνῃ καὶ καπηλείᾳ ἀναποσπάστως ἔχοντας καὶ ἀναγώγως τῶν οἰκείων παθῶν ἔτι τῷ λύθρῳ περισταζο-μένους τοῦ ψυχικοῦ φόνου δέχεσθαι ἐκβιάζονται, καὶ τὸ μαρτύριον ῥίπτειν κατενώπιον τῶν γρομφίδων, καὶ τὸ ἅγιον παραβάλλειν τοῖς κατ' ἐκείνους τὸ ἀναιδὲς ἐπασκήσασιν, προσώπων διαφορᾷ καταχαριζομένους τὰ ἄχραντα.

[1] сравн. Diog. Laert. I 2, 59 (ed. Cobet).

653. V (къ *ει γὰρ μὴ ἐπαίδευσεν ἡμᾶς τὰ φοβερὰ...* Οὐδ’ εἰ παρῆς τοῖς νῦν πράγμασιν, ἅγιε τοῦ θεοῦ, οὕτως καταλλήλως τοῖς κατειληφόσι τὸν λόγον προῆγες· εἰ γὰρ καὶ ἐπὶ σοῦ Ἴσαυροι ταῦτά σε φθέγξασθαι προηνέγκαντο, ἀλλ’ οὖν δοκῶ μοι καὶ κατὰ τῶν νῦν προφήτιδι γλώσσῃ τὰ καθεστῶτα ἀποφοιβάσαι.

654. V (къ *κατακρίσεως* въ концѣ) Ποίας κατακρίσεως; ἧς Ἡσαίας ἐπισκήπτει ὁ ἱερὸς προφήτης, "ὄψονται" λέγων "τὰ κῶλα τῶν ἀνθρώπων τῶν παραβεβηκότων ἐν ἐμοί· ὁ γὰρ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτήσει καὶ τὸ πῦρ αὐτῶν οὐ σβεσθήσεται, καὶ ἔσονται εἰς ὅρασιν πάσῃ σαρκί"[1]. καὶ ὁ προφήτης δὲ Δαυὶδ φάσκων, "τότε οὐ μὴ αἰσχυνθῶ ἐν τῷ με ἐπιβλέπειν ἐπὶ πάσας τὰς ἐντολάς σου"[2], δῆλον ὅτι κατὰ τὸ ἀκόλουθον τῆς ἐννοίας ἐκεῖνο σημαίνων, ὡς οἵ γε μὴ ἱκανοὶ τὸ ἐλευθέριον κεκτῆσθαι τῆς ἀπὸ τῶν τοῦ θεοῦ νόμων ἐπισκοπῆς τε καὶ φυλακῆς αἰσχύνης μεγάλης ἀναπλησθήσονται τηνικάδε ἐν τῷ πανδήμῳ τῆς οἰκουμένης θεάτρῳ. τὸ δὲ καὶ ἐπικαταράτους ποιεῖσθαι τοὺς ἀπὸ τῶν ἐντολῶν κυρίου ἐκκλίνοντας, εἰ μικρὸν εἰς ἀντίδοσιν τοῖς διὰ τὸ εἰς βάθος καταδῦναι κακῶν μεγαλοψύχοις πρὸς πᾶν τὸ ὀλέθριον, οὐδεὶς φθόνος αὐτοῖς τῆς πορώσεως ταύτης, δι’ ἣν κατὰ τὸν μακάριον Παῦλον "ἔρχεται ἡ ἀφόρητος τοῦ θεοῦ ὀργὴ ἐπ’ αὐτούς"[3], εἰς υἱοὺς τῆς ἀπειθείας ἑαυτοὺς εἰσπεποιημένους.

655. Р Ὅτι οὐ τῷ χρόνῳ κρίνεται ἡ μετάνοια, ἀλλὰ διαθέσει. Ath.

Въ посланіи къ Амфил. *περὶ τοῦ μὴ ἀγνοεῖν...* **656.** Р Περὶ τῶν Ἐγκρατιτῶν.

Въ посланіи къ хорепископамъ **657.** V (къ *πολλοὶ μὲν ὑπηρέται ἀριθμοῦνται καθ’ ἑκάστην κώμην, ἄξιος δὲ λειτουργίας θυσιαστηρίου οὐδείς*) Τί ἂν οὖν νῦν εἶπας, ἅγιε τοῦ θεοῦ;

Въ посланіи къ подчиненнымъ епископамъ. **658.** Р Ἀνάγνωθι πᾶσαν τὴν ἐπιστολήν, ὅτι λίαν ἐστὶν ὡραία. Ath.

Въ посланіи къ Григорію пресвитеру. **659.** Ven. (къ *ἀργῶν*) Τὸ περὶ ἃ μὴ δεῖ ἐνεργεῖν ἀργεῖν ἀφ’ ὧν δεῖ ἐστι· καὶ ὁ τοίνυν ἁμαρτάνων καὶ περὶ ἀκαίρους ἀπολογίας ἐνεργῶν ἀπὸ τῆς εὐκαίρου ταπεινώσεως ἀργεῖ, καὶ λόγον δώσει τῆς τοιαύτης ἀργίας ἀδιόρθωτος μένων.

[1] Ис. LXVI 24. [2] псал. CXVIII 6. [3] сравн. Ефес. V 6.

Въ посланіи къ Діодору. **660**. Р Πῶς διάκειται ὁ πατὴρ πρὸς τὴν ἐρώτησιν τοῦ γάμου τῆς ἀδελφῆς τῆς γυναικός. Ath.

661. Р (къ *τὸ παρ᾽ ἡμῖν ἔθος...*) Ὅτι τὸ ἄγραφον ἔθος τῆς ἐκκλησίας νόμου δύναμιν ἔχει, καὶ διὰ τί· ὅτι ὑπὸ ἀνδρῶν ἁγίων περεδόθη. Ath.

Изъ 27 главы о Св. Духѣ *καὶ μεθ᾽ ἕτερα*. **662**. Р Ὅτι ἄλλο ἐστὶν δόγμα καὶ ἄλλο κήρυγμα.

663. Р (къ ... *ὁρῶμεν κατ᾽ ἀνατολὰς...*) Περὶ τοῦ κατ᾽ ἀνατολὰς ἡμᾶς προσεύχεσθαι.

664. Р (къ ... *τὸ ὄρθιον σχῆμα...*) Διὰ τί ὀρθοὶ ἑστῶτες πληροῦμεν τὰς εὐχάς.

665. Р (къ ... *γονυκλισίαν...*) Διὰ τί γόνυ κλίνοντες προσευχόμεθα.

Изъ 29 гл. о Св. Духѣ. **666**. V (къ *Πρός γε μὴν τὸ ἀμάρτυρον καὶ ἄγραφον εἶναι....*) Ἐμμάρτυρον μᾶλλον τῆς ἱερᾶς τοῦ σωτῆρος φωνῆς οὐκ ἔστιν ἄλλο εὑρεῖν, ὃς ἐν τῇ σωτηρίου βαπτίσματος μυήσει τῷ πατρὶ καὶ ἑαυτῷ τὸ πνεῦμα συνδοξολογεῖ, βαπτίζειν διδάσκων εἰς τὸ ὄνομα τοῦ πατρὸς καὶ τοῦ υἱοῦ καὶ τοῦ ἁγίου πνεύματος [1].

667. V Θαυμάζω, πῶς ταῦτά φησιν ὁ παρὼν ἅγιος, πλήρους τῆς ἁγίας Γραφῆς οὔσης τῆς τοῦ παναγίου πνεύματος θεολογίας· καὶ πρώτου γε Πέτρου θεολογήσαντος τοῦτο, ἐν οἷς φησι πρὸς Ἀνανίαν καὶ Σάπφειραν· "τί ὅτι συνεφώνησας πειράσαι τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον;" [2] καὶ μετ᾽ ὀλίγον ἐπάγει· "εἰδώς, ὡς οὐκ ἄνθρωπον ἐψεύσω, ἀλλὰ θεόν" [3]. ἰδοὺ γάρ, καθὼς τὴν τοῦ ψεύδους πεῖραν ποιῆσαι ἔφησεν πνεύματος ἁγίου, νῦν τοῦτο θεὸν τρανῶς ἀποκαλεῖ· καὶ ἄλλων πολλῶν οὐσῶν μαρτυριῶν, θαυμάζω, τί ταῦτά φησιν.

Къ посланію Василія Великаго къ Никополитамъ.

668. V (къ *αὐτοσχέδια*) Οὐ πρὸ πολλοῦ μελετώμενα, οὐδὲ παρασκευαζόμενα.

669. V (къ *ἓν γάρ ἐστιν ὀδύνης ἄξιον...*) Τί τοῦτο κατάλληλον τῇ νῦν περιστάσει!

[1] сравн. Матѳ. XXVIII 19. [2] сравн. Дѣян. V 9. [3] сравн. Дѣян. V 4.

670. V (къ *τὸ ἀεὶ κατὰ τὸν βίον αὐτοῖς λυσιτελοῦν...*) Ὡραῖον καὶ τοῦτο καὶ πρόσφορον τοῖς προκειμένοις.

671. V (къ *οὐκ οἶδα ἐπίσκοποι εἶεν...*) Ἁρμόσει καὶ τοῦτο τοῖς μετὰ ταῦτα, εἴποτε δοίη θεός.

672. V (къ концу: *ταῦτα δὲ ἔγραψα...*) Σημείωσαι, ὅση αὐστηρία. ἣ καὶ πρὸς ἡμᾶς διαπορθμευθήσεται ἀναγκαίως, ἐὰν Χριστὸς ὁ θεὸς ἡμῶν κατὰ τὸ αὐτῷ εὐάρεστον διδῷ.

Къ правиламъ Григорія Нисскаго (посланіе къ Литоію).

Въ предисловіи. **673.** Р (къ ... *ὁ μὲν σκοπὸς τῆς ἰατρικῆς τέχνης...*) Τίς ὁ σκοπὸς τῆς ἰατρικῆς καὶ τί τὸ εἶδος τῆς ἐπιμελείας.

674. Р (къ *Τρία ἐστὶ τὰ περὶ τὴν ψυχὴν...*) Τῆς ψυχῆς μέρη γ'· τὸ λογικόν, τὸ ἐπιθυμητικόν, τὸ θυμικόν.

675. Р (къ *Οὐκοῦν... τριχῇ...*) Ἐν τίνι τὰ κατ' ἀρετὴν κατορθώματα καὶ τὰ εἰς κακίαν πτώματα.

676. Р (къ *Κατόρθωμα μὲν τοῦ λογιστικοῦ...*) Τί τὸ κατόρθωμα τοῦ λογιστικοῦ μέρους τῆς ψυχῆς.

677. Р (къ ... *ἡ ἐν τῷ μέρει τούτῳ κακία θεωρηθήσεται...*) Τίς ἡ κακία ἡ ἐν τῷ λογιστικῷ μέρει θεωρουμένη.

678. Р (къ *Τοῦ δὲ ἐπιθυμητικοῦ μέρους...*) Τίς ἡ ἐνάρετος φύσις τοῦ ἐπιθυμητικοῦ.

679. Р (къ *παρατροπὴ δὲ...*) Τίς ἡ παρατροπή.

680. Р (къ *τῆς θυμώδους διαθέσεως τὸ κατόρθωμα...*) Τί τὸ κατόρθωμα τῆς θυμώδους διαθέσεως.

681. Р (къ *Τὰ δὲ ἀποπτώματα τοῦ τοιούτου μέρους...*) Τί τὸ ἀπόπτωμα τοῦ τοιούτου μέρους.

I. **682.** Р Τί φησι περὶ τῶν ἀρνουμένων τὴν εἰς Χριστὸν πίστιν καὶ εἰς ἰουδαϊσμὸν ἢ εἰς εἰδωλολατρείαν ἀνερχομένων.

683. Р (къ *ὁ μὲν ἑκουσίως...*) Περὶ τῶν ἑκουσίως πρὸς τὴν ἄρνησιν ὁρμησάντων.

684. (къ *οἱ δὲ βασάνοις...*) Р Περὶ τῶν ἀκουσίως ἀρνησαμένων.

685. Р Διὰ τί τοὺς ἐξ αἰκισμοῦ παραβάντας τῷ τῆς πορνείας καθυπέβαλον ἐπιτιμίῳ.

II. **686**. P (къ первой половинѣ) Περὶ τῶν πρὸς γόητας ἢ μάντεις ἀπιόντων.

687. P (къ *Εἰ μὲν γὰρ ἐπὶ ἀθετήσει...*) Τί φησι περὶ τῶν ἐπὶ ἀθετήσει τῆς εἰς Χριστὸν πίστεως πρὸς γόητας καὶ μάντεις ἀπιόντων.

688. P (къ *Εἰ δέ τις ἀβάστακτος...*) Περὶ τῶν δι' ἀβάστακτον ἀνάγκην τὸ αὐτὸ ποιούντων.

III. **689**. P Σημείωσαι τὴν διαίρεσιν τῶν δι' ἐπιθυμίαν καὶ ἡδονὴν γινομένων ἁμαρτημάτων.

690. P (къ *Τισὶν μὲν οὖν τῶν ἀκριβεστέρων...*) Ὅτι τισὶ τῶν ἀκριβεστέρων ἡ πορνεία μοιχεία ἐνομίσθη.

691. P (къ *πορνείαν μὲν λέγεσθαι...*) Τί πορνεία.

692. P (къ *μοιχείαν δὲ...*) Τί μοιχεία καὶ λοιπὰ τῆς ἀκαθαρσίας εἴδη.

693. P (къ *Ὁ μὲν γὰρ ἀφ' ἑαυτοῦ...*) Περὶ τῶν ἐν ἡδονῇ πλημμελούντων καὶ ἀφ' ἑαυτῶν ἐξομολογουμένων.

694. P (къ *Ὁ δὲ φωραθεὶς...*) Περὶ τοῦ ὁμοίως πλημμελοῦντος καὶ ὑπὸ ἑτέρων ἐλεγχομένου.

695. P (къ *... τοὺς ἐν πορνείᾳ μολυνθέντας...*) Τί τὸ ἐπιτίμιον τῶν πορνευόντων.

696. P (къ *Ἡ δὲ κατὰ τὴν μοιχείαν...*) Σημείωσαι τὴν ἐπιτιμίαν τῶν μοιχευόντων καὶ τῶν τὰς ἄλλας ἀκαθαρσίας ἐργαζομένων.

697. V (къ *ὥσπερ γὰρ τὸ τοῖς χοίροις ῥίπτειν...*) Χοῖρος γὰρ πάντως ὁ τῷ βορβόρῳ τῆς ἁμαρτίας διηνεκῶς προσπλασσόμενος καὶ μηδέποτε ἀνιεὶς μηδὲ σχολῇ τοῦ κακοῦ τὸν ἐπὶ μετανοίᾳ καθαρμὸν ἀσπαζόμενος. τούτῳ ἄψαυστα μὲν τὰ τοῦ θεοῦ σκηνώματά εἰσιν, ἀπρόσμικτος δὲ ἡ μετὰ ὑγιαινόντων θεοῦ θρεμμάτων συναυλία καὶ πολὺ πρότερον ἀμετάδοτος ἡ περικαθαίρουσα τοὺς ἀξίους θυσία πνευματική.

IV. **698**. P Περὶ τοῦ θυμοειδοῦς τῆς ψυχῆς μέρους.

699. P (къ *Διῄρηται δὲ τὸ...*) Περὶ φόνου.

(къ *ἑκούσιος μέν ἐστι φόνος...*). **700**^{a}. P Περὶ φόνου ἑκουσίου.

700^{b}. V Περὶ ἑκουσίου φόνου.

(къ *Οἱ δὲ ἀκούσιοι...*) **701**^{a}. P Περὶ φόνου ἀκουσίου.

701^{b}. V Περὶ ἀκουσίου φόνου.

702. P (къ *Τὸ δὲ ἀκούσιον...*) Τί τὸ ἐπιτίμιον τοῦ ἀκουσίως φονεύοντος.

703. V (къ *ἡ αὐτὴ παρατήρησις ἔσται παρὰ τοῦ οἰκονομοῦντος...*) Περὶ οἰκονομίας, καὶ ὅπως δεῖ οἰκονομεῖν.

V. **704.** V Περὶ τῶν μὴ πληρούντων τὸν τοῦ ἐπιτιμίου χρόνον καὶ ἐξοδευόντων τοῦ βίου.

VI. **705.** V (къ *τῆς τρίτης ἐν τῇ ψυχῇ καταστάσεως*) Τῆς ἐπιθυμίας.

706. V (къ *ἀλλὰ περὶ μὲν τούτων διαπορεῖσθαι τοῖς πατράσιν ἡμῶν ἀρκεῖν...*) Ταῦτα τῷ προχείρως ἀναζῆν [1], εἶτα πάλιν ῥαδίως ἀποκαθίστασθαι, οὐκ ἠξίωσεν λόγου ἡ τῶν πατέρων ἔγκριτος γνώμη, ὡς παντὶ ἀνθρώπῳ τούτου παρεπομένου· οὐδὲ γὰρ οἷόν τε ἄνθρωπον ὄντα μὴ ἄν ποτε τῆς ἐπὶ μικρὸν πρὸς τὸ ἐναντίον ἀποκλινούσης ὁδοῦ ἐπιβῆναι. διὸ ἤρκεσεν τοῖς μικροῖς ἀποκλίμασιν τὴν ἐν ἑκάστῳ ὀρθὴν ἐπιστῆσαι κρίσιν· οἱ γὰρ μὴ τῷ μεγέθει τοῦ σφάλματος τὸν λογισμὸν τεταραγμένοι, ὑπούσης ἔτι κρείττονος διασκέψεως, ἱκανὴν αὐτοὶ ἑαυτοῖς τὴν θεραπείαν περινοεῖν ἐκ τοῦ εὐκόλου τῆς ἐκτροπῆς, εὐποριστότερον τῆς ἐπιστρεφούσης ἐχόμενοι διαθέσεως.

707. P Διήρηται ἡ κλοπὴ εἰς λῃστείαν καὶ εἰς τοιχωρυχίαν.

708. V (къ *Ὁ μὲν γὰρ λῃστὴς... ἐπαναγάγει*) Ὁ γάρ τοι ἁλοὺς οὐκ ἄν ποτέ τινος ἕν γε σωφρονοῦσιν κριθείη φειδοῦς, ὅς γε τὸ συγγενὲς ἅπαν ὠμότητι τρόπων ἠγνοηκὼς περὶ πλείστου τὴν πλεονεξίαν τῆς τῶν ὁμοφύλων πεποίηται σωτηρίας· ἀλλ' οἷς τὴν φύσιν ἐν ταῖς ἑτέρων ἐξετίμησεν συμφοραῖς, τῶν αὐτῶν κἀκεῖνος ἀνηλεῶς τεύξεται μισθῶν τε καὶ δώρων, ὅτι μηδὲ δεινὰ πάσχειν τὸν δεινὰ δεδρακότα.

709. P Περὶ λῃστείας.

710. V (къ *ὁ δὲ δι' ὑφαιρέσεως λανθανούσης σφετεριζόμενος τὸ ἀλλότριον*) Ὁ κλέπτης.

711. P (къ *... τὸ καθ' ἡμᾶς εις ἐξουσίαν κανόνων οὐκ ἀξιόπιστον...*) Ὅτι οὐχ ἑνὸς ἡ ἐξουσία τοῦ τιθέναι κανόνας, ἀλλὰ πολλῶν δῆλον ὅτι. Ath.

VII. **712.** V Ἐπίστησον, ὅτι παντός τινος νεκροῦ σκύλευσιν καὶ πιστοῦ καὶ ἀπίστου ἀπαγορεύει ὁ παρὼν λόγος.

[1] cod. ἀναζεῖν.

713. P Εἰς τίνα διαιρεῖται ἡ τυμβωρυχία.

VIII. **714**. P Περὶ ἱεροσυλίας.

715. V (къ концу, передъ эпилогомъ) Ἰδοὺ κοινὸς ἐπὶ πάντων λόγος, οὐδὲν καπηλεύων προσώπων διαφορᾷ, οὐδὲ βασιλέων εἰς φειδῶ ὑποβαλλόμενος πρόσωπον· εὖ γὰρ ᾔδει μὴ πρόσωπον ἐν κρίσει θαυμάζειν, ὡς τὸ ἱερόν φησι λόγιον [1].

Въ эпилогѣ. **716**. V (къ *ὡς εὐγνώμων υἱός*) Ἀδιαφόρως ἐχρῶντο ταῖς χειροτονίαις· εἰ γὰρ μὴ τοῦτο, πῶς, ἐπισκόπου τοῦ τῆς Νύσσης ὄντος, ὁ Μελιτινῆς μητροπολίτης ὢν υἱὸς κατὰ τὴν πνευματικὴν γέννησιν ἂν ἦν;

Къ правиламъ Кирилла Александрійскаго (посланіе къ Домну).

I. **717**. V Ὅτι οὐ δεῖ παραίτησιν ἐπιδιδόναι ἐπίσκοπον.

718. L Δῆλος ἐνταῦθα μηδὲ τὸν ἐξ ἀπραγμοσύνης ἢ καὶ ἀδυναμίας ἐπιδιδόμενον τῆς παραιτήσεως λίβελλον προσδεχόμενος, ὃν οὐχ ἁπλῶς καὶ ἡ ἐν Ἐφέσῳ σύνοδος ἐδέξατο, ἀλλὰ μὴ φιλονεικοῦντα [2] τοῦ παραιτησαμένου περὶ τῆς ἐκκλησίας. δεῖ τοίνυν προσέχειν τοῖς ὑπομνήμασι καὶ πρὸ τούτων ζητεῖν τὰ αἴτια καὶ τὸν σκοπὸν τοῦ παραιτουμένου, καὶ μή τι τὸ μεσολαβῆσάν ἐστι, καὶ εἰ τελεία ἡ σύνοδος, ἐν ᾗ πάντες ἀπέστ//// [3] τὸ "ἐξ ἀνάγκης καὶ φόβου καὶ τῆς τινῶν ἀπειλῆς"[4] ἐκ προνοίας μέντοι καὶ ἑκουσίως γενόμενος, καὶ ἐπὶ συνόδου τελείας δοθεὶς ἐπ' αἰτίαις κανόσι δεκταῖς, καὶ ἀνεπιλήπτως δεχθείς, ἰσχύσει· ἔξεστι γὰρ ἑκάστῳ τῶν ὑπὲρ αὐτοῦ εἰσενεχθέντων καταφρονεῖν. ἀνάγνωθι καὶ βιβλίον ια' τῶν βασιλικῶν τίτλ. α' κεφ. ο', τὸ λέγον· "ἐάν τις ὁμολογήσῃ ἐν συμβολαίῳ αὐτοχείρως, ἰδιοχείρως, μὴ δι' ἀγγέλων, μὴ δι' ἐπιστολῆς, μὴ κεχρῆσθαι φόρου παραγραφῇ διὰ ζώνην στρατείας ἰδίας ἢ ἀξιώματος, ἢ μὴ κεχρῆσθαι προνομίῳ ἱερωσύνης, ἰσχύει τοῦτο τὸ σύμφωνον" [5]. ἐν τῷ γ' τίτλῳ τοῦ κώδικος λέγει τὸ ν' κεφάλαιον· "ἐὰν ἐπίσκοπος ἀποτάξηται τῇ προνομίᾳ ἑαυτοῦ, οὐ δύναται ἀναπαλαίειν· ἔξεστι γὰρ ἕκαστον τὸ οἰκεῖον δίκαιον ἀπαγορεύειν καὶ τοῦ κρατεῖν ἐπὶ τῶν μὴ τμηθέντων ἢ δικαστικῶς ἢ φιλικῇ συμβιβάσει" [6]. καὶ βιβλ. β' τοῦ κώδικος

[1] сравн. Іуды 15—16. [2] cod. φιλανεικοῦντα. [3] не разобраны 3—4 буквы въ этомъ словѣ. [4] изъ Кирилла къ Домну прав. 1. [5] сравн. Basilic. XI 1, 90. [6] Cod. I 3, 50.

τίτλ. γ′ κεφ. κη′, "ἐὰν πακτεύσῃ τις", λέγει, "οὐ χρῶμαι [1] τῇ προνομαίᾳ μου, ἣ παρὰ τοῖς πᾶσι ἠμφισβητεῖτο· εἰ ἔῤῥωται σήμερον [2], ἰσχυρόν ἐστι τὸ πάκτον, καὶ οὐ μόνον παρὰ ὀρδιναρίοις δεκτέον, ἀλλὰ καὶ παρὰ πᾶσι τοῖς ὅλως δικάζουσιν" [3].

719. L (къ первой половинѣ) Οὐ δεῖ ταῦτα προφέρειν ἐπὶ παραιτήσει ἐπισκοπῆς.

720. L (къ срединѣ) Ταῦτα δὲ κρατεῖν ὀφείλεις εἰδέναι οὐκ ἐπὶ παραιτήσει ἐπισκοπῆς, ἀλλ' ἐπὶ τῶν ἄλλων συναλλαγμάτων.

II. **721**. P "Ὅτι τὰ κειμήλια καὶ αἱ κτήσεις τῶν ἐκκλησιῶν ἀνεκποίητοι ὀφείλουσιν μένειν.

722. L "Ὅτι οὐ δεῖ λογοθετεῖσθαι τοὺς ἐπισκόπους.

III. **723**. P "Ὅτι οὐ δεῖ παραιτητικοὺς λιβέλλους ἐπιδιδόναι, καὶ διὰ τί.

724. Ven. "Ὅρα πρῶτον μέν, ὅπως τὸ κατὰ βίαν εἰς ἀπολογίαν προβάλλεται· δεύτερον δέ, ὃ καὶ μεῖζον, ὅτι καὶ ὁ θ′ τῶν ἐν Ἐφέσῳ κανών, ἤτοι ἡ πρὸς τοὺς ἐν Παμφυλίᾳ ἐπιστολή, ἑτέρου χειροτονηθέντος ἀντὶ τοῦ παραιτησαμένου, ἀποδέχεται μὲν τὸν χειροτονηθέντα, ἀξιοῖ δὲ φιλανθρωπίας τινὸς τὸν παραιτησάμενον τυχεῖν. καὶ τρίτον, ὃ καὶ μεῖζόν ἐστιν, ὅτι κἀκεῖ καὶ ἐνταῦθα αἰτεῖται μὲν ὑπὲρ τῶν παραιτησαμένων καὶ παρ' ἑτέρων ἀξιοῖ τῆς αἰτήσεως τυχεῖν, οὐ μὴν αὐτὸς κελεύει τι ἢ διορίζεται. εἶτα, εἴτε πέρας ἔσχεν ἡ αἴτησις εἴτε μή, οὔτε ἐνταῦθα οὔτε ἐκεῖ ἔστιν ὅλως εὑρεῖν, οὐδ' ὅπως ᾠκονόμησαν ταύτην τὴν παράκλησιν οἱ ἀξιωθέντες. πῶς οὖν ἕξει τύπον κανόνος ἡ τοιαύτη χρῆσις τῆς ὑποθέσεως κατὰ τὴν παραίτησιν;

Къ отвѣтамъ Тимоѳея Александрійскаго.

725. (къ заглавію) Ἰστέον, ὅτι μετὰ Διονύσιον τὸν μέγαν, τεσσαρεσκαιδέκατον Ἀλεξανδρείας γενόμενον ἐπίσκοπον, οἵδε ἐπεσκόπησαν· Θεωνᾶς, Μάξιμος, Πέτρος ἱερομάρτυς, Ἀχιλλᾶς, Ἀλέξανδρος, Ἀθανάσιος, Γρηγόριος Ἀρειανὸς ὁ Καπαδόκης, Ἀθανάσιος πάλιν, Πέτρος ὁ παρὰ Οὐάλεντος περιορισθείς, Λούκιος Ἀρειανός, Πέτρος πάλιν, εἶτα Τιμόθεος οὗτος ὁ μέγας, ἀναχθεὶς μὲν ἐπὶ τὸν θρόνον κατὰ τὸ δ′ ἔτος τῆς βασιλείας Θεοδοσίου τοῦ μεγάλου, παρὼν δὲ ἐν τῇ κατὰ Μακεδονίου τοῦ πνευματομάχου συνόδῳ τῶν ρν′ ἁγίων πατέρων· μετὰ δὲ

[1] cod. χρῶν. [2] cod. σήμετρον. [3] Cod. II 3, 29 (?).

ἑπταετίαν ἐξεδήμησε πρὸς κύριον, Θεόφιλον διάδοχον ἐσχηκώς. (изъ Bevereg. II 228). Ven.

Къ окружному посланію Геннадія патріарха.

726. Ven. (къ заглавію) Οὗτος ὁ μακάριος Γεννάδιος, ἀναχθεὶς ἐπὶ τοῦ θρόνου κατὰ τὸ β′ ἔτος τῆς βασιλείας Λέοντος τοῦ μεγάλου, κατὰ τὸ ιδ′ μετέστη πρὸς κύριον.

Къ посланію Константинопольской церкви къ Мартирію Антіохійскому.

727. Ven. (къ заглавію: *πρὸς Μαρτύριον*) Οὗτος εἰς τὸν τῆς Ἀντιοχείας ἀνήχθη θρόνον κατὰ τὸ τελευταῖον ἔτος τῆς βασιλείας Μαρκιανοῦ, καὶ κατὰ τὸ ια′ τοῦ μετ᾽ αὐτὸν βασιλεύσαντος Λέοντος τοῦ μεγάλου μετέστη πρὸς κύριον.

Изъ Ven. и M = Monac. 380 стр. 69—71 (отсюда изд. у P, de Lagarde, Reliquiae... graece, 11—14):

а) Къ правиламъ апостола Павла.

VII. **728ª.** M (къ *λουδεμπιστής*) Ὁ [1] τῶν παιγνίων ἄρχων· λοῦδα γὰρ παρὰ Ῥωμαίοις εἰσὶ τὰ παίγνια. εἴρηται δὲ καὶ λουδεμπαίκτης. Ven.

IX. **729ª.** M (къ *ἀῤῥητοποιός*) Ὁ αἰσχρουργός, ὁ ἄλεκτα ποιῶν. Ven.*

730ª. M (къ *κίναιδος*) Ὁ πόρνος καὶ ἀνδρόγυνος, καὶ ὄρνεον ἡ λεγομένη ἴυγξ, ᾗ οἱ προαγωγοὶ χρῶνται πρὸς φίλτρα. Ven.*

731ª. M (къ *βλάξ*) Παρὰ Ῥωμαίοις [2] προβατώδης. Ven.*

732ª. M (кь *λώταξ*) Θυμελικός τις. Ven.*

733ª. M (къ *περικαθαίρων*) Ὁ διὰ θυσιῶν δοκῶν λύειν νόσους ἢ ἁμαρτίας. Ven.*

734ª. M (къ *συμβολοδείκτης*) Ὁ διὰ συμβόλων ἀποδεικνύς τι πονηρόν. Ven.*

735ª. M (къ *παλμῶν ἑρμηνεύς*) Ὁ ἐν τῷ ἐκπηδᾶν τι τοῦ σώματος ἐκ πλεονασμοῦ αἵματος ἢ ἐνδείας πνεύματος συμβήσεσθαί τι τῶν ἀγαθῶν ἡμῖν ἢ πονηρῶν μαντευόμενος. Ven.*

[1] Ὁ проп. Ven. [2] Ἀθηναίοις у Lagarde.

XIV. **736**. M Περὶ τούτου [1] ζήτει τῆς β' συνόδου [2] κανόνα ζ' [3], καὶ τῆς ς' κανόνα κε' καὶ ϟε' [4], καὶ τοῦ ἁγίου Βασιλείου κανόνα ε' καὶ πδ'. Ven.*

b) Къ правиламъ апостоловъ Петра и Павла.

I. **737**. M Τὸ περὶ τοῦ σαββάτου ἀναιρεῖ ὁ κθ' κανὼν τῆς [5] ἐν Λαοδικείᾳ, περὶ δὲ τῆς κυριακῆς ζήτει τῶν βασιλικῶν νομίμων βιβλ. ζ' τίτλ. ιζ' κεφ. ιθ', καὶ τοῦ βασιλέως κυροῦ [6] Λέοντος νεαρὰν νδ', θεσπίζουσαν παρὰ πάντων ἀδιαστόλως τιμᾶσθαι τὴν ἁγίαν κυριακὴν ἡμέραν [7]. Ven.

VII. **738**. M Ζήτει τὴν πη' νεαρὰν τοῦ βασιλέως κυροῦ [8] Λέοντος, τυποῦσαν τιμᾶσθαι καὶ τὰς μνήμας τῶν θείων πατέρων καὶ διδασκάλων τῆς ἐκκλησίας, Ἀθανασίου καὶ Βασιλείου τοῦ μεγάλου, Γρηγορίου τοῦ θεολόγου καὶ Γρηγορίου τοῦ Νύσσης, Ἰωάννου τοῦ Χρυσοστόμου, Κυρίλλου καὶ Ἐπιφανίου [9]. Ven.

XV **739**. M Περὶ τῶν τρίτων, ἐννάτων καὶ τεσσαρακοστῶν [10] ἄλλην αἰτίαν παρὰ τὴν συνήθη καὶ καθωμιλημένην. Ven.

Кромѣ того, въ M на стр. 74 есть еще особо

Σχό(λια) τῶν ὄπισθεν γεγραμμένων δύο κεφαλαίων, τῶν ἐκ τῶν ἀποστολικῶν διατάξεων, ὧν ἡ ἀρχή· κείμενον· "Τῶν ἐπὶ σκηνῆς". κείμενον· "Καὶ ἀῤῥητοποιός". σχό(λια).

728[b]. Λουδεμπιστὴς ἑρμηνεύεται ὁ διακορητής, ἤγουν ὁ παρθενοφθόρος· λοῦδος γὰρ παρὰ τῇ Ῥωμαίων διαλέκτῳ ἡ φθορά.

729[b]. Ἀῤῥητοποιὸς δὲ ὁ τὰ ἀπηγορευμένα τῇ [11] χριστιανικῇ πολιτείᾳ διαπραττόμενος.

732[b]. Ἡ δὲ λώταξ φωνὴ ποία τίς ἐστιν ἐκ τοῦ ἀποτελουμένου λεγομένη. ἔστι δὲ τοιοῦτόν τι τὸ λεγόμενον· ἐπιδεικνύμενοί τινες τὸ παλαιὸν τὴν πρὸς ἀλλήλους ἀγάπην, βαυκάλια στρογγύλα πληροῦντες οἴνου εἰς ὕψος ἀνέπεμπον, καὶ εἴπερ ἠχή τις ἐγένετο ἐν τῷ ἀναφέρεσθαι

[1] Περὶ τούτου проп. Ven. [2] τὴν β' σύνοδον (!) Ven. [3] α' (!) Ven. [4] καὶ ϟε' проп. Ven. [5] τῶν Ven. [6] κυρίου Lagarde; κυροῦ проп. Ven. [7] θεσπίζουσαν... ἡμέραν проп. Ven. [8] κυρίου Lagarde; κυροῦ проп. Ven. [9] τυποῦσαν... Ἐπιφανίου проп. Ven. [10] Περὶ τῶν τριῶν θυμῶν (?) Ven. (можетъ быть: Περὶ τῶν γ', θ', καὶ μ' ?). [11] τῇ проп. Lagarde.

τὸ βαυκάλιον, σημεῖον τοῦτο ἐποιοῦντο τῆς ἀγάπης, τῷ ποιῷ τοῦ ἤχου τὸ ποσὸν συμμετροῦντες αὐτῆς.

740. Περιαμματοποιὸς δὲ λέγεται ὁ περιάπτων τισὶ δέλτους γεγραμμένας μετ᾽ ἐπῳδῶν εἰς φυλακὴν τοῦ τινὸς ἢ καὶ ἄλλα τινὰ οὕτω λεγόμενα φυλακτά.

733[b]. Περικαθαίρων λέγεται ὁ ὕδασιν ἐπιῤῥαίνων ἐσκευασμένοις μετ᾽ ἐπῳδῆς εἰς κάθαρσιν δῆθέν τινα.

741. Οἰωνιστὴς ὁ ἐν τῇ πτήσει τῶν ὀρνέων τὴν τοῦ συμφέροντος ἢ τοὐναντίου ἔκβασιν λογιζόμενος.

742. Μαστροπὸς ὁ ἰδιωτικῶς λεγόμενος μαυλιστής.

734[b]. Συμβολοδείκτης ὁ τὰς συναντήσεις τε καὶ ὑπαντήσεις μηνύματι τιθέμενος τῶν ἐσομένων αὐτῷ.

735[b]. Παλμῶν ἑρμηνεὺς νοείσθω σοι ὁ τοῖς ἐρωτῶσιν ἐπιλύων τὰς διαφόρους κινήσεις τῶν μελῶν, οἷον ὤμου ἢ ὀφθαλμοῦ, ἢ ἄλλου τινὸς μέρους ἢ μορίου τοῦ σώματος· παλμὸς γὰρ ἡ κίνησις.

730[b]. Τὸ δὲ κίναιδος ὄνομα τὸν πόρνον παριστάτω σοι (παρὰ γὰρ τὸ κινεῖν τὰ αἰδοῖα λέγεται), ἢ τὸν ἑτέροις, ὥς τινες λέγουσι, τὴν τῶν αὐτῶν κίνησιν ὑπεξάπτοντα.

731[b]. Βλὰξ δὲ ὁ τρυφηλὸς καὶ διακεχυμένος ἐστί.

743 (in. m *ἐκ τῆς ἐν Ἀγκύρᾳ*). Ἀλόγοις δὲ μιγνυμένους τοὺς ἀλογευομένους ἢ καί ποτε τοῦτο διαπραξαμένους καὶ ἀποσχομένους.

744 (in. m. *τοῦ ἁγίου Βασιλείου*). Τὸν δ᾽ ἐκ τοῦ σατανικοῦ ἔρωτος ἀσπασμὸν τῶν ἀῤῥένων διὰ τῆς τῶν γλωσσῶν ἐμβολῆς μιασμὸν χειλέων ἴσθι καλεῖσθαί τε καὶ εἶναι, ὡς ὁ μέγας Βασίλειός φησι ἐν ο᾽ κανόνι.

II.

(къ стр. 185[1]).

Mosqu. 148 (= 410 = CXLIX) л. 159^{в} — 160^{а}.

"Ορος κανονικὸς τῶν ἁγίων ἀποστόλων Πέτρου καὶ Παύλου.

α'. ***Περὶ τῆς λαμπροφόρου ἑβδομάδος.*** Εἴ τις τὴν τῆς λαμπροφόρου ἀναστάσεως ἑβδομάδα ἤγουν διακαινίσιμον σμικρύνει μίαν τῶν ἡμερῶν, καὶ οὐχὶ ὅλην τὴν ἑβδομάδα ὡς μίαν ἡμέραν ἑορτάζει θεϊκῶς καὶ οὐ πανηγυρικῶς, ἢ ἐφάψηται καμάτου, ἔχει τὴν μερίδα μετὰ τοῦ προδότου καὶ τῶν θεοκτόνων.

β'. Εἴ τις οὐ καταδέχεται παρ' ἑτέρου νίψασθαι τοὺς πόδας, ἀνάθεμα.

γ'. Εἴ τις κοινωνήσας λουθῇ, ἐπικατάρατος.

δ'. Εἴ τις φέρει ὕδωρ ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ καὶ οὕτως μεταλάβῃ τοῦ ἁγίου σώματος τοῦ κυρίου, ἐπικατάρατος.

ε'. ***Περὶ ῥεύσεως.*** Εἴ τις ἐν ὀνείρῳ πορνεύσει καὶ μεταλάβῃ, ἐπικατάρατος

Petropol. 100 (olim Coislin. 212) л. 138^{в} — 139^{а} [1].

"Ορος κανονικὸς τῶν ἁγίων ἀποστόλων.

α'. Εἴ τις τὴν ἑβδομάδα τῆς λαμπροφόρου ἀναστάσεως ἤγουν τῆς διακινησίμου σμικρύνει μίαν τῶν ἡμερῶν καὶ οὐ τιμήσει ὅλην τὴν ἑβδομάδα ὡς μίαν ἡμέραν, ἑορτάζων θεϊκῶς καὶ οὐ πανηγυρικῶς, ἢ ἐφάψηται καμάτου, ἔχει τὴν μερίδα μετὰ Ἰούδα τοῦ προδότου καὶ καταταγέσθω μετὰ Ἰουδαίων τῶν θεοκτόνων.

β'. Εἴ τις οὐ καταδέχεται παρ' ἑτέρου νίψασθαι τοὺς πόδας, ἀνάθεμα ἔστω.

γ'. Εἴ τις μεταλαβὼν τοῦ σώματος τοῦ κυρίου καὶ λούσηται, ἐπικατάρατος ἔστω, καθὼς εἶπεν ὁ κύριος.

δ'. Εἴ τις εἰσφέρει ὕδωρ εἰς τὸ στόμα καὶ οὕτως κοινωνήσει, ἐπικατάρατος ἔστω.

ε'. Εἴ τις ἐν ὀνείρῳ πορνεύσει καὶ τὴν αὔριον κοινωνήσει, ἐπικατάρατος ἔστω.

ϛ'. Εἴ τις ἐξέλθῃ ἐκ τῆς ἐκκλησίας, πρὶν ἀπολύσει ὁ ἱερεύς, ἐπικατάρατος ἔστω.

[1] Варіанты изъ этого сп. приведены у Pitra 103—104 (не всегда точно).

ϛ'. ***Περὶ συντυχίας.*** Εἴ τις συντυγχάνει ἐν τῷ καιρῷ τῆς ἁγίας λειτουργίας, ἐπικατάρατος.

ζ'. Εἴ τις λέγει τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ μωρέ, ἐπικατάρατος.

η'. ***Περὶ καταλαλιᾶς.*** Εἴ τις καταλαλήσει πατέρα ἢ μητέρα ἢ ἀδελφόν, ἐπικατάρατος.

θ'. ***Περὶ ἐναλλαγῆς ζώων.*** Εἴ τις ἀλλάξει εἰς κύνα πρόβατον καὶ προσφέρει αὐτὸ εἰς μνήμην ἁγίου, ἀνάθεμα.

ι'. ***Περὶ τοῦ μὴ καταλύειν.*** Ὁ καταλύων ὅρον γονέων αὐτοῦ ἢ ζώντων ἢ τελευτώντων, ἀνάθεμα.

ια'. ***Ὅρος περὶ τριχῶν.*** Ὁ τριχῶν ἁπτόμενος καὶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ τρίβων, ἀνάθεμα.

ιβ'. ***Περὶ αἵματος.*** Εἴ τις φάγῃ αἷμα κτήνους, ἀπόλλυται.

ιγ'. ***Περὶ θέρους.*** Εἴ τις τοὺς πίπτοντας στάχυας οὐκ ἀφίει συνάγειν τοῖς πτωχοῖς, ἀνάθεμα.

ιδ'. ***Περὶ μαντευομένων.*** Εἴ τις δίδωσιν ἀντίψυχον τοῖς μάντεσιν, ἢ λαμβάνει γραπτά, ἀνάθεμα.

ιε'. ***Περὶ διαβολῆς.*** Εἴ τις διαβάλλει τὸν ἀδελφόν, φονεύς ἐστιν.

ζ'. Εἴ τις συντυγχάνει ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ τοῦ θεοῦ εἰς τὴν θείαν λειτουργίαν, ἐπικατάρατος ἔστω.

η'. Εἴ τις λέγει τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ μωρόν, καθὼς εἶπεν ὁ κύριος, ἔνοχος ἔσται τῆς γεέννης τοῦ πυρός.

θ'. Εἴ τις καταλαλεῖ πατρὸς ἢ ἀδελφοῦ, ἐπικατάρατος· ἡ γὰρ καταλαλιὰ οὐ μὴ ἀφήσει τὸν ἄνθρωπον σταθῆναι ἔμπροσθεν τοῦ θεοῦ.

ι'. Εἴ τις εἰς τὴν τράπεζαν οὐκ ἐκδέχεται πάντας, ἀλλὰ πλεονεκτεῖ τὸν ἕτερον, ὡς φονεὺς κρίνεται.

ια'. Εἴ τις ἀλλάξει κύνα πρὸς πρόβατον καὶ τὸ πρόβατον ἀγάγει εἰς μνημην ἁγίου, ἢ τὴν τιμὴν τοῦ κυνός, ἐπικατάρατος, καθὼς ἐνετείλατο ὁ θεὸς τῷ Μωσῇ.

ιγ'. Ὁ λύων ὅρον γονέων καὶ ἐπὶ ζωῆς καὶ ἐπὶ θανάτου ἀνάθεμα ἔστω.

ιβ'. Ὁ τῶν τριχῶν ἁπτόμενος καὶ τὸ πρόσωπον τύπτων καὶ ἐπὶ ζωῆς καὶ ἐπὶ θανάτου ἀνάθεμα ἔστω.

ιδ'. Εἴ τις φάγει αἷμα κτηνῶν, ἐπικατάρατος ἔστω.

ιε'. Εἴ τις τὰ στάχυα τὰ ἀποπίπτοντα οὐκ ἀφήσει συλλέγειν τοις πτωχοῖς, ἐπικατάρατος ἔστω.

ιϛ'. Εἴ τις ἀπαρχῆς ἅλωνος ἢ τῆς λινοῦ, καθὼς εἶπεν ὁ θεὸς τῷ Μωσῇ, οὐ δώσει τῇ ἐκκλησίᾳ ἢ τῷ πτωχῷ, ἐπικατάρατος ἔστω.

ιζ'. Εἴ τις δίδει ἀντίψυχα τοῖς μανταις ἢ λαμβάνει γραπτὰ ἢ δίδει, οὐκέτι γῆς πιστοί, ἀλλ' οὐδὲ χριστιανοί.

ιη'. Εἴ τις ἀδελφὸν διαβάλλει, σὺν τῷ διαβόλῳ κατακέκριται.

Далѣе въ Mosqu. слѣдуютъ еще, какъ принадлежащія къ той же серіи, слѣдующія Апостольскія правила въ своеобразной редакціи:

Περὶ νηστείας. Εἴ τις ἐπίσκοπος ἢ πρεσβύτερος ἢ διάκονος ἢ ἀναγνώστης τῇ ἁγίᾳ τεσσαρακοστῇ οὐ νηστεύει, τετράδι καὶ παρασκευῇ, καθαιρείσθω. (Апост. 69).

Περὶ ὕβρεως. Εἴ τις ὑβρίσει πρεσβύτερον, ἀνάθεμα. (Апост. 56).

Περὶ τοῦ σαββάτου νηστείας. Εἴ τις κληρικὸς εὑρεθῇ ἐν σαββάτῳ ἢ κυριακῇ νηστεύων, καθαιρείσθω. (Апост. 64).

Περὶ πρεσβυτέρου. Πρεσβύτερος ἢ διάκονος τὴν ἑαυτοῦ γυναῖκα ἐκβαλὼν ἄνευ αἰτίας, καθαιρείσθω. (Апост. 5).

Περὶ τοῦ ἐπιστρέψαντος ἀπὸ ἁμαρτίας. Εἴ τις πρεσβύτερος τὸν ἐπιστρέψαντα ἀπὸ ἁμαρτίας οὐ δέξηται, ὁ τοιοῦτος καθαιρείσθω· ἐλύπησε γὰρ τὸν εἰπόντα· "χαρὰ γίνεται ἐν οὐρανῷ ἐπὶ ἑνὶ ἀνθρώπῳ ἁμαρτωλῷ μετανοοῦντι". (Апост. 52).

Περὶ ἀκρωτηριασμοῦ. Ὁ ἀκρωτηριάσας μὴ γενέσθω κληρικός· αὐτοφόντης γάρ ἐστι καὶ τῆς τοῦ θεοῦ δημιουργίας ἐχθρός. (Апост. 22).

Περὶ τοῦ ἐκπεσόντος ἐν πορνείᾳ. Πρεσβύτερος ἢ διάκονος ἐκπεσὼν εἰς πορνείαν καθαιρείσθω. (Апост. 25).

Περὶ καπηλείου. Κληρικὸς ἐσθίων ἐν καπηλείῳ ἀφοριζέσθω. (Апост. 54).

(заглавіе стерлось) Εἴ τις κωφὸν ἢ τυφλὸν πλανήσει καὶ ἐκπαίξει, ἀφοριζέσθω. (Апост. 57).

(загл. стерл.) Ὁ δυσὶ γάμοις συμπλακεὶς ἢ παλλακὴν κτησάμενος οὐ δύναται εἶναι πρεσβύτερος ἢ διάκονος ἢ ὅλως τοῦ ἱερατικοῦ καταλόγου. (Апост. 17).

(загл. стерл.) Πρεσβύτερος ἢ διάκονος τὴν ἑαυτοῦ γυναῖκα μὴ ἐκβαλέτω προφάσει εὐλαβείας· ἐὰν δὲ ἐκβάλῃ, ἀφοριζέσθω, ἐπιμένων δὲ καθαιρείσθω. (Апост. 5).

Ὁ χήραν λαβὼν ἢ ἐκβεβλημένην ἢ ἑταίραν ἢ οἰκέτιν, ἢ τῶν ἐπὶ σκηνῆς, οὐ δύναται εἶναι ἐπίσκοπος ἢ ὅλως τοῦ ἱερατικοῦ καταλόγου. (Апост. 18).

Ὁ δύο ἀδελφὰς ἀγόμενος ἢ ἀδελφιδῆν[1] οὐ δύναται εἶναι κληρικός. (Апост. 19).

Οἱ πρεσβύτεροι καὶ οἱ διάκονοι ἄνευ γνώμης τοῦ ἐπισκόπου μηδὲν ἐπιτελείτωσαν· αὐτὸς γάρ ἐστιν ὁ ἐμπεπιστευμένος τὸν λαὸν κυρίου καὶ ὑπὲρ τῶν ψυχῶν αὐτῶν λόγον ἀποδώσων. (Апост. 39).

Εἴ τις πρεσβύτερος ἢ ἐπίσκοπος ἢ διάκονος ἢ ὅλως τοῦ ἱερατικοῦ καταλόγου ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν ἑορτῶν κρεῶν καὶ οἴνου οὐ δι' ἄσκησιν, ἀλλ' ὡς βδελυσσόμενος ἀπέχεται, ἐπιλαθόμενος ὅτι τὰ πάντα καλὰ λίαν καὶ ὅτι ἄρσεν καὶ θῆλυ ὁ θεὸς τὸν ἄνθρωπον ἐποίησε, καὶ βλασφημῶν διαβάλλει, ὡς κεκαυ-

[1] cod. ἀδελφιδοῦν.

στηριασμένος τὴν οἰκείαν συνείδησιν καὶ αἴτιος σκανδάλου γενόμενος τοῖς πολλοῖς. εἴτε κληρικὸς εἴτε λαϊκὸς ἀφοριζέσθω. (Апост. 51).

Εἴ τις κληρικὸς ἐν μάχῃ κρούσας ἀποκτείνει τινά, καθαιρείσθω διὰ τὴν προπέτειαν αὐτοῦ· εἰ δὲ λαϊκὸς εἴη, ἀφοριζέσθω. (Апост. 66).

Σκεῦός τι ἱερωθὲν καὶ ἁγιασθέν, ἢ ὀθόνην ἢ ἄλλο τι, μηδεὶς εἰς οἰκείαν χρείαν σφετεριζέσθω παρανομῶν. (Апост. 73).

Εἴ τις ἀνάπηρος τὸν ὀφθαλμὸν ἢ τὸ σκέλος πεπληγμένος, ἄξιος δὲ ἱερωσύνης ἐφάψασθαι, ἐφαπτέσθω· οὐ γὰρ λώβη σώματος μιαίνει, ἀλλὰ ψυχῆς μολυσμός. (Апост. 77).

Κωφὸς ἢ τυφλὸς μὴ ἐφαπτέσθω ἱερωσύνης, ἵνα μὴ τὰ τῆς ἐκκλησίας παρεκποδίσῃ. (Апост. 78).

Ἔστω δὲ ὑμῖν πᾶσι κληρικοῖς βιβλία σεβάσμια καὶ ἅγια τῆς μὲν Παλαιᾶς Μωϋσέως πέντε· Γένεσις, Ἔξοδος, Λευιτικόν, Ἀριθμοὶ καὶ Δευτερονόμιον. Ἰησοῦ τοῦ Ναυῆ ἕν. Κριτῶν ἕν. Ῥοὺθ ἕν. Βασιλειῶν τέσσαρα. Παραλειπομένων τῆς βίβλου τῶν ἡμερῶν δύο. Ἔσδρα δύο. Ἐσθὴρ ἕν. Μακκαβαίων τρία. Ἰὼβ ἕν. Ψαλτηρίου ἕν. Σολομῶντος τρία· Παροιμίαι, Ἐκκλησιαστὴς καὶ Ἆσμα Ἀσμάτων. Προφητῶν δώδεκα. Ἡσαΐου ἕν. Ἱερεμίου ἕν. Ἰεζεκιὴλ ἕν. Δανιὴλ ἕν. ἔξωθεν δὲ τούτων μανθάνειν τοὺς ⟨νέους⟩[1] τὴν Σοφίαν τοῦ πολυμαθοῦς Σειρὰχ καὶ Βαρούχ. Τῆς δὲ Καινῆς Διαθήκης βιβλία δ', ἐπιστολαὶ Πέτρου β', Ἰωάννου τρεῖς, Ἰακώβου ⟨μία⟩, Ἰούδα μία, Κλήμεντος α', Παύλου ἐπιστολαὶ ιδ'. Τοιαῦτα περὶ κανόνων διετάξαμεν ὑμῖν, καὶ τούτοις ἐμμένοντες σωθήσεσθε, ἀπειθοῦντες δὲ κολασθήσεσθε καὶ πόλεμον μετ' ἀλλήλων ἕξετε, δίκην τῆς[2] ἀνηκοΐας τὴν προσήκουσαν τιννύντες. (Апост. 85).

Текстъ правилъ, начиная съ 22-го, списанъ для меня Н. П. Поповымъ, и имъ же провѣренъ по р-си сдѣланный мною списокъ съ Mosqu; приношу глубокоуважаемому Н. П-чу мою сердечную благодарность за эту ученую услугу.

[1] νέους было, вѣроятно, на оторванномъ кусочкѣ л. 160. [2] cod. τοῖς.

III.

(сравн. стр. 108[1] и словарикъ на стр. 209—213).

Αἱ ῥωμαῖαι λέξεις αἱ κείμεναι εἰς τὸ νομοκάνονον.

по Neapolit. II C. 4 л. 1; въ прямыя скобки заключены добавленія изъ Vatic. 2184 л. 259, гдѣ заглавіе: αἱ ῥωμαῖαι λέξεις αἱ ἐγκείμεναι εἰς τὸ νόμιμον βιβλίον; въ круглыхъ скобкахъ поставлены слова, не находящіяся въ Vatic.

1. fidocomisson φειδοκόμισσον. [ἤτοι λεγάτον.]
2. mortis causa μορτίκαυσα. [ἡ μετὰ θάνατον δωρεά.]
3. digeston διγέστων. [ἤτοι τῶν ἐκτυπωμάτων.]
4. filicomissois φιδικομισσοις. [ληγγαταρίοις.]
5. repudion ῥεπούδιον [ἤτοι διαχώρησις.]
6. codicio κωδικίω.[τὸ ἶσον τῆς διαθήκης.]
7. institution ἰστιτούτιον. [ἤτοι ἡ νέα διάταξις.]
8. indeditos ἰνδεδιτος. [ἡ λεπτὴ ἀπογραφή.]
9. institution ἰνστιτούτιον.
10. deportateυsθai δεπορτατεύεσθαι. [στηρίζοντες. ἀντιφωνοῦντες.]
11. (deportateυetai δεπορτατεύεται.)
12. spurtullon σπουρτούλλων. [τὰ ἐν σπυρίδι διδόμενα κανίσκια.]
13. deportation δεπορτατιον. [ἐξορισμός.]
14. ditlu διτλου. [1] [ἀπογραφή.]
15. fisco φίσκω. [τὸ βασιλικὸν ταμιεῖον.]
16. dnacatreusion δεκατρεύσιον. [ἀπόμυρα]
17. deinoffisicco δεινοφφισικκω: [περιουσία.]
18. (fscos φίσκος:)
19. erdatonon ἐρδατιονων. [τῶν πρακτόρων.]
20. tractaisη τρακταϊση. [λογαριάζεται.]
21. catatorcoslu κατατορκοσλου. [κατὰ τῆς συγγενείας.]
22. castrcasioluon καστρακασιολεύων. [τὰ δεδομένα τοῖς δούλοις πεκούλια:]
23. ailargitiones αἱ λαργιτιονες. [τῶν βασιλικῶν θησαυρῶν.]

[1] δίπλου Vatic.

24. condictiuci	κονδικτιουκι. [ὁ ἀπογραφεύς.]
25. facum	φακτουμ. [ἡ φανερὰ ἀπογραφή.]
26. ormileia	ὀρμελεϊα. [τὰ τῆς ἐκκλησίας δίκαια.]
27. littatorum	λιττατορουμ.
28. sdurraticnos	σδουρατιωνος. [τοῦ ἀπὸ γράμματος.]
29. codicillois	κοδικίλλοις. [τὰ ἶσα τῆς διαθήκης.]
30. annualia	ἀννουαλια. [νόμος βασιλικός.]
31. commonitoorion	κομμονιτώριον.
32. priprillu	πριπριλλου[1]. [τὰ διατάγματα]
33. (eredateuinc	ἐρεδατευει.)
34. crumentu	κρουμέντου.
35. papianu	παπιανου [δόγμα.] λε′.

Vatic., вмѣсто цыфры λε′, имѣетъ: ταῦτα ἐγράφησαν ῥωμαϊστὶ ἑλληνιστί.
Порядокъ словъ Vatic.: послѣ 27 слѣдуютъ 32, 28, 29, 34, 30, 35, 31.

[1] prepillu περιπίλλου Vatic.

IV.

(къ стр. 235[3]).

Имена отцовъ Константинопольскаго собора 381 г.

По Patm. 172 съ варіантами изъ Patm. 173.

1. Νεκτάριος Κωνσταντινουπόλεως.

Αἰγύπτου.

2. Τιμόθεος[1] Ἀλεξανδρείας.
3. Δωρόθεος πόλεως Ὀξυρίγχου.

Παλαιστίνης

4. Κύριλλος πόλεως Ἱεροσολύμων.
5. Πελάγιος » Καισαρείας.
6. Μάκερ » Ἱεριχούντων.
7. Διονύσιος » Διοσπόλεως.
8. Πρισκιανὸς[2] Νικοπόλεως.
9. Νεῖλος πόλεως Σεβαστῆς.
10. Ῥοῦφος Σκυθοπόλεως.
11. Αὐξέντιος πόλεως Ἀσκαλῶνος.
12. Ἡλιανὸς » Ἰαμνίας.

Φοινίκης.

13. Ζήνων πόλεως Τύρου.
14. Παῦλος » Σιδῶνος.
15. Νέσταβος » Πτολεμαΐδος.
16. Φίππος » Δαμασκοῦ.
17. Βάραχος » Πανιάδος.
18. Τιμόθεος » Βηρυτοῦ.
19. Βασιλείδης » Βίβλου.
20. Μώκιμος » Ἀράδου.
21. Ἀλέξανδρος » Ἄρκων διὰ Θεοδοσίου πρεσβυτέρου.

Συρίας[3]

22. Μελέτιος πόλεως Ἀντιοχείας
23. Πελάγιος » Λαοδικείας.
24. Ἀκάκιος » Βεροίας.
25. Ἰωάννης » Ἀπαμείας.
26. Βίζος » Σελευκείας.
27. Εὐσέβιος » Ἐπιφανείας.
28. Μαρκιανὸς » Σελευκοβήλου.
29. Πατρόφιλος » Λαρίσσης.
30. Σευῆρος » Πάλτου.
31. Φλαυουϊανὸς καὶ
32. Ἐλπίδιος πρεσβύτεροι πόλεως Ἀντιοχείας.
33. Εὐσέβιος πόλεως Καλχίδος.
34. Δομνῖνος » Γαβάλων.
35. Βασιλῖνος » Ῥεφαναίων.

Ἀραβίας

36. Ἀγάπιος καὶ
37. Βαγάδιος[4] πρεσβύτεροι πόλεως Βόστρων.
38. Ἐλπίδιος πόλεως Διονυσιάδος.
39. Οὐράνιος » Ἀδράφης.
40. Χίλων » Κωνσταντιανῆς.[5]
41. Σευουῆρος Νεαπόλεως.

Ὀσροηνῆς

42. Εὐλόγιος πόλεως Ἐδέσσης.

[1] вставл. πόλεως. [2] вставл. πόλεως. [3] прибавл. Κοίλης. [4] Βαδάγιος.
[5] Κωνσταντινῆς

43. Βίτος πόλεως Καῤῥῶν.
44. Ἀβράμιος » Βατνῶν.

Μεσοποταμίας

45. Μαρας πόλεως Ἐμέσης.
46. Βατώνης » Κωνσταντιανῆς.
47. Ἰοβῖνος » Ἐμμαρίας.

Αὔγουστος Φρατησίας *

48. Θεόδοτος Ἱεραπόλεως.
49. Ἀντίοχος πόλεως Σαμοσάτων.
50. Ἰσίδωρος » Κύρου.
51. Ἰοβῖνος » Πέῤῥης.
52. Μαρῖνος » Δολίχης.

Κιλικίας

53. Διόδωρος πόλεως Ταρσοῦ.
54. Κυριακὸς » Ἀδάνων.
55. Ἡσύχιος » Ἐπιφανίας.
56. Γερμανὸς » Κωρύκου.
57. Ἀέριος » Ζεφυρίου.
58. Φιλίμουσος Πομπιουπόλεως.
59. Ὀλύμπιος πόλεως Μομψουεστίας.[1]
60. Θεόφιλος » Ἀλεξανδρίας διὰ Ἀλυπίου πρεσβυτέρου.

Καππαδοκίας

61. Ἑλάδιος πόλεως Καισαρείας.
62. Γρηγόριος[2] Νύσης.
63. Αἰθέριος πόλεως Τυάνων.
64. Βοσπόριος » Κολωνίας.
65. Ὀλύμπιος » Παρνασσοῦ.
66. Γρηγόριος » Ναζιανζοῦ.[3]

Ἀρμενίας Μικρᾶς

67. Ὀτρήιος πόλεως Μελιτηνῆς.
68. Ὀτρήιος » Ἀραβισσοῦ.

Ἰσαυρίας

69. Ὀλύμπιος πόλεως Σελευκίας.
70. Μοντανὸς Κλαυδιουπόλεως διὰ Παύλου πρεσβυτέρου.
71. Φιλόθεος Εἰρηνοπόλεως.
72. Ὕψιστος πόλεως Φιλαδελφίας.
73. Μουσώνιος » Κελενδέρεως.
74. Μαρῖνος » Δαλισάνδου.
75. Θεοδόσιος » Ἀντιοχείας.
76. Ἀρτέμιος Τιτιουπόλεως.
77. Νέων πόλεως Σελενούντων.[4]
78. Μοντανὸς » Νεοκαισαρίας.
79. Εὐσέβιος » Ὀλβίης.

Κύπρου

80. Ἰούλιος πόλεως Πάφου.
81. Θεόπρεπος » Τριμιθούντων.
82. Τύχων » Ταμασοῦ.
83. Μνήμιος » Κιττίου.

Παμφυλίας

84. Ῥώγλος πόλεως Αἰγαίων.
85. Γάϊος » Λύρβης.
86. Λογγῖνος » Κολυβρασσοῦ.
87. Θεόδουλος » Καρακισίου.
88. Ἡσύχιος » Κατηνῶν.
89. Μῆδος » Πανέμου.
90. Ἡρακλείδης » Τίχους.
91. Θεόδουλος » Εἰαλώου.[5]
92. Παμμένιος » Ἀριασσοῦ.

Λυκαονίας

93. Ἀμφιλόχιος πόλεως Ἰκονίου.
94. Κύριλλος » Οὐμάδων.
95. Ἀριστοφάνης » Σωπάτρων.
96. Παῦλος » Λύστρων.
97. Ἰνζοῦς » Κορίνων.
98. Δάρειος » Μιστίας.
99. Λεόντιος » Πετρῶν.
100. Θεοδόσιος » Ὕδης.
101. Εὐστράτιος » Κάνων.
102. Δάφνος » Δέρβης

[1] cod. Μαμψουεστίας. [2] вставл. πόλεως. [3] cod. Νανζιανζω. [4] Σελενοῦντος.
[5] cod. надъ ω поставл. ȣ въ Εἰαλωου. *должно быть Αὐγουστοευφρατησίας?

103. Εὐγένιος πόλεως Ποσάλων.
104. Ἰλύριος » Ἰσαύρων.
105. Σευῆρος » Ἀνδάδων.

Πισιδίας

106. Ὀπτίσιος πόλεως Ἀντιοχείας.
107. Θέμιστος » Αἰδρανοπόλεως.[1]
108. Ἄγγαλος » Προστάνων.
109. Ἀνιανὸς » Ἀνδάνων.[2]
110. Φαῦστος » Αἱμενων.[3]
111. Ἰώννιος » Σαγαλασσοῦ.
112. Καλλίνικος » Ποιμάνδρου.
113. Εὐστάθιος » Μητροπόλεως.
114. Πατρίκιος » Παρλασσοῦ.
115. Λούκιος » Νεαπόλεως.
116. Λουλιανὸς Σωζοπόλεως διὰ Συμπληκίου πρεσβυτέρου.
117. Τύρανος πρεσβύτερος πόλεως Ἀμορίου.
118. Αὐξάνων πρεσβύτερος πόλεως Ἀπαμείας.
119. Ἑλάδιος πρεσβύτερος πόλεως Κονάνων.
120. Θεοσέβιος πόλεως Φιλομιλίου διὰ Βάσσου πρεσβυτέρου.

Λυκίας

121. Τατιανὸς πόλεως Μύρων.
122. Πιόνιος » Χώματος.
123. Εὔδημος » Πατάρων.
124. Πατρίκιος » Οἰνοάνδων.
125. Λουπίκιος » Λυμύρων.
126. Μακεδὼν πόλεως Ξάνθου.
127. Ῥωμανὸς » Φασελιάδος.
128. Ἑρμαῖος » Βουβωναίων.
129. Θραντιανὸς » Ἀράξου.

Φρυγίας Σαλουταρίας

130. Βίτος πόλεως Πρυμνήσου.
131. Αὐξανικὸς » Εὐκαρπίας.

Φρυγίας Πακατιανῆς

132. Νεκτάριος πόλεως Ἱππίας.
133. Θεόδωρος » Εὐμενίας διὰ Προφουτούρου πρεσβυτέρου.

Καρίας

134. Ἐκδίκιος πόλεως Ἀφροδισιάδος.
135. Λεόντιος » Κιβύρων.

Βιθυνίας.

136. Εὐφράσιος πόλεως Νικομηδείας.
137. Θεόδωρος » Νικαίας.
138. Ὀλύμπιος » Νεοκαισαρείας.
139. Θεόδουλος » Χαλκηδόνος.
140. Εὐστάθιος » Προύσης.

Πόντου

141. Τερέντιος πόλεως Ἀπαμείας.
142. Ἐθέριος » Τομαίων.
143. Σεβαστιανὸς » Χερσονήσου.
144. Ἀχιλεὺς » Ἀπαμείας.
145. Ἀγρίος » Ἡμιμόντου.

Πόντου Πολεμωνιακοῦ

146. Ἀτάρβιος δι' Ἀκύλου ἀναγνώστου.

[1] Ἀδριανουπόλεως. [2] Ἀδάνων. [3] должпо быть Λιμενῶν.

V.

(къ стр. 243)

Ἐκ τῆς διαλέξεως τοῦ ἁγίου ἀποστόλου Ἰακώβου.

Βλέπετε οὖν, ἀδελφοί μου, ὅτι κέλευσις θεϊκή ἐστιν τὸ πιστεύειν εἰς τὸν Χριστὸν τὸν υἱὸν καὶ λόγον τοῦ θεοῦ, τὸν σαρκωθέντα καὶ παθόντα καὶ ταφέντα καὶ ἀναστάντα τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ. καὶ τὴν ἀναστάσιμον αὐτοῦ ἡμέραν ἑορτάζειν, τὴν ἁγίαν κυριακήν, δι' ἧς ἀνενέωσε τὸν κόσμον καὶ ἦρεν τὸ κάλυμμα τοῦ προσώπου ⟨τοῦ⟩ τὰς ἐντεύξεις ποιοῦντος· ὅθεν καὶ οἱ θεοπρεπεῖς ἱερεῖς αὐτῶν, κατὰ τὴν κέλευσιν καὶ πρόσταξιν τοῦ αὐτοῦ δεσπότου Χριστοῦ, τὴν διὰ τῶν ἁγίων αὐτοῦ μαθητῶν καὶ ἀποστόλων δοθεῖσαν τῷ κόσμῳ, κείρονται στεφανοειδῶς τὴν κόμην τῆς κεφαλῆς αὐτῶν, προτυποῦντες τοῦ μέλλοντος δίδοσθαι αὐτοῖς θείου καὶ οὐρανίου στεφάνου τῆς δικαιοσύνης, καθὼς γέγραπται· "οἱ ἱερεῖς σου, κύριε. ἐνδύσονται δικαιοσύνην" (=псал. CXXXI 9)· ὁμοίως καὶ οἱ θεάρεστοι μονάζοντες, οἱ τὸ ἀποστολικὸν καὶ ἀγγελοειδὲς ἐνδυσάμενοι ἅγιον σχῆμα, τὴν αὐτὴν ἀποδεξάμενοι κέλευσιν, κείρονται ὁλοτελῶς τὴν κόμην τῆς κεφαλῆς αὐτῶν, ἀποβαλλόμενοι τὸν παλαιὸν ἄνθρωπον τὸν φθαρέντα σὺν ταῖς ἐπιθυμίαις αὐτοῦ καὶ περιβαλλόμενοι τὸν νέον τὸν κατὰ θεὸν κτισθέντα ἐν ὁσιότητι καὶ ἀγαλλιάσει, καθὼς γέγραπται· "καὶ οἱ ὅσιοί σου ἀγαλλιάσονται" (=псал. CXXXI 9)· διὸ καὶ οἱ ἐν τῷ λαϊκῷ τάγματι ὑπάρχοντες.

Изъ Laurent. X 1 л. 259ᵇ; текстъ обрывается, потому что далѣе вырваны въ р-си послѣдніе 3 лл. тетради λγ′ и тетради λδ′ и λε′ цѣликомъ.

VI.

(къ стр. 304).

[*Τάξις ὀνομάτων τῶν ὁσίων μητροπολιτῶν.*]

[α΄. ἐπαρχία Καππαδοκίας α΄]	ὁ Καισαρείας· ἔχει πόλεις[ ].
[β΄. ἐπαρχία Ἀσίας]	ὁ Ἐφέσου. ἔχει πόλεις[ ].
[γ΄. ἐπαρχία Εὐρώπης	ὁ Ἡρακλεί]ας [τῆς] Θράκης ἔχει πόλεις [ιϛ΄.] ὁ τοῦ Πανίου.
[δ΄. ἐπαρχία Γ]αλα[τίας α΄]	ὁ Ἀγκύρων ἔχει πόλεις ζ΄.
[ε΄. ἐπαρχία] Ἑλλησπόντου	ὁ Κυζίκου ἔχει πόλεις ιβ΄.
ϛ΄. ἐπαρχία Λυδίας	ὁ Σάρδεων ἔχει πόλεις κϛ΄.
ζ΄. ἐπαρχία Βι[θυνίας]	ὁ Νικομηδείας ἔχει πόλεις[ ].
[η΄. ἐπαρχία τῆς αὐτῆς]	ὁ Νικαίας ἔχει πόλεις δ΄.
[θ΄. ἐπαρχία τῆς αὐτῆς]	ὁ Καλχηδόνος.
ι΄. ἐπαρχία Παμφυλίας	ὁ Σίδης ἔχει πόλεις ιϛ΄.
[ια΄.] ἐπαρχία Ἀρμενίας α΄	ὁ Σεβαστείας ἔχει πολεις ε΄.
[ιβ΄. ἐπαρχία] Ἑλε[νοπόντου]	ὁ Ἀμασίας ἔχει πόλεις ϛ΄.
[ιγ΄. ἐπαρχία Ἀρμενίας β΄]	ὁ Μελιτινῆς ἔχει πόλεις ε΄.
[ιδ΄ ἐπαρχία Καππαδοκί]ας β΄	ὁ Τυάνων ἔχει πόλεις δ΄.
ιε΄. ἐπαρχία Παφλαγονίας	ὁ Γαγγρῶν ἔχει πόλεις δ΄.
[ιϛ΄. ἐπαρχία] Ὀνωριάδος	ὁ Κλαυδιουπόλεως ἔχει πόλεις ε΄.
ιζ΄. ἐπαρχία Πόντου Πολεμωνιακοῦ	ὁ Νεοκαισαρείας ἔχει πόλεις ε.
[ιη΄. ἐπαρχία Γαλατίας] β΄	ὁ Πισινούντων ἔχει πόλεις ζ΄.
[ιθ΄. ἐπαρχία Λυκίας]	ὁ Μύρων ἔχει πόλεις λζ΄.
[κ΄. ἐπαρχία Καρίας]	ὁ Σταυροπόλεως ἔχει πόλεις κζ΄.
[κα΄. ἐπαρχία Φρυγίας] Καπατιανῆς	ὁ Λαοδικείας ἔχει πόλεις ιη΄.
[κβ΄. ἐπαρχία Φρυγ]ίας Σαλουταρίας	ὁ Συνάδων ἔχει πόλεις κε΄.
[κγ΄. ἐπαρχία Λυκα]ονίας	ὁ Ἰκονίου ἔχει πόλεις ιε΄.
[κδ΄. ἐπαρχία Πισ]ιδίας	[ὁ Ἀντιοχ]είας ἔχει πόλεις κβ΄.
[κε΄. ἐπαρχία Πα]μφυλίας	[ὁ Περγ]ης ἔχει πόλεις ιθ΄.
[κϛ΄. ἐπαρχία Κ]αππαδ[οκίας γ΄]	[ὁ Μωκ]ισοῦ ἔχει πόλεις δ΄.
[κζ΄. ἐπαρχία] Λαζικῆς	[ὁ Φ]άσιδος [ἔχει πόλεις].

[κη'. ἐπαρχία] Θράκης ὁ Φιλιππουπόλεως [ἔχει πόλεις].
κθ'. ἐπαρχία Ῥοδόπης ὁ Τραϊανουπόλεως.
λ'. ἐπαρχία νήσων Κυκλάδος ὁ Ῥόδου.
λα'. ἐπαρχία Ἑμιμούντων ὁ Ἀδριανουπόλεως.
λβ'. ἐπαρχία τῆς αὐτῆς ὁ Μαρκιανουπόλεως.
λγ'. ἐπαρχία Καπατιανῆς ὁ Ἱεραπόλεως.
ὁ Τραπεζούντων
ὁ τοῦ Ἀμωρίου.
ὁ Σελευκίας.

Εἰσὶν καὶ ὑπὸ τὴν δύσιν.

ἐπαρχία Σικελίας ὁ Συρακούσης.
ὁ Θεσσαλονίκης ὁ Ἀθηνῶν.
ἐπαρχία Καλαβρίας ὁ τοῦ Ῥηγίου.
ὁ Ἱδροῦντος ὁ Κορίνθου.
ὁ Πατρῶν ὁ Λαρίσσης.
ὁ Νικοπόλεως.

Изъ Laud. 39 л. 1; въ прямыя скобки поставлено то, что въ р-сп пропало и мною возстановлено при помощи аналогіи и текста τάξις Василія (Parthey Notitia I).

VII.

(къ стр. 135, 234, 245, 246, 252, 253, 282—283, 298).

Синоптическая таблица дополненій въ ссылкахъ XIV титуловъ на правила.

Изъ *L*=Laurent. X 1,
P=Petropol. 66,
P_a =Patm. 172 и Patm. 173,
V=Vallicell. C. 11,
V_a =Vatic. 1981,
V_b =Vatic. 2184,
V_c =Vatic 827,
V_e =Venet. 169,
$Vall_1$=Vallicell. F 10,
$Vall_2$=Vallicell. F 47;
и для титт. III–VIII 14, XIII 30–40
M=Miscell. 170.

Взяты лишь тѣ главы XIV титуловъ, гдѣ дополненія сдѣланы; при этомъ употребляются сокращенія:

= вмѣсто *замѣн.*
\+ » *добавл.*
— » *пропущ.*

Въ основу положенъ тотъ видъ ссылокъ, который болѣе употребителенъ, — Фотіевскій а отклоненія отъ него напечатаны курсивомъ.

I тит.

1. Апост. 49, 50; КП. 1, 5; Еф. 7; Карѳ. 2; Трул. 1, 73, 81.
2. Халкид. 1 (*V_e L+6*); Карѳ. 1 (*V_c — Карѳ. 1*); Трул. 2; Ник. II 1 (*VV_a — 1*), 2 (*P_a — Ник. II 1, 2*).
3. Трул. 82 (*V=81; V_c + 81; P_a — Трул. 82);* Васил. изъ посл. къ Діод. и изъ 27 и 29 гл. къ Амфил. *Въ $Vall_1$ V_c правила Василія Вел. поставл. передъ Трулльск.*
5. Апост. 34; Ник. 4, 6 (*V_a V_b = καὶ*), 7; Антіох. 9 *(V_a = 7; V=19 V_c + 25);* КП. 2, 3; Халкид. 9, 17, 28; (*V_a + Антіох. 9);* Сард. 3, 4, 5; Карѳ. 17, 39; Трул. 36, 39 *(P_a $Vall_1$ — 39; V_b = λ′ καὶ λθ′; L — Трул. 36, 39*).
6. Апост. 1, 2, 35; Ник. 4; Антіох. 13, 19, 22 *(V_a — 22);* Лаод. 5, 12; Еф. 8 *(V_a + 11)* и посл. къ Памф. соб.; Сард. 6; Халкид. 28; Карѳаг. 13, 18 (*V_a = 19*), 49, 55, *($Vall_1$ = 59)*, 98 (*LV_e P — всѣ Карѳаг., но P+друг. рук.);* Трул. 33, 37 (*V_a = 36; L — только нумера правилъ*); Ник. II 2; КП. I—II 16 *(V_a — КП. I—II 16*); Васил. къ хореп.; Кирилла къ Домну 1 *(L—1)*, 3 и къ

Лив. и Пентапп. епп. 1, 3 *(Va = 2)*; Θеофила изъ ὑπομνηστ. 6. *($Vall_1$—Θеоф.* ὑπομν. *6). Въ $Vall_1$ Pa Vc — всѣ Трул., Ник. II и КП. I—II. Въ Vc LPa Θеофила* ὑπομνηστ. *поставл. передъ правв. Кирилла.*

7. Лаод. 13; Ник. II 3 *(Ve =* συνόδου Νικαίας κανὼν γ′; *Pa $Vall_1$ — Ник. II 3, но $Vall_1$+друг. рук.). Въ Vc: Ник. II 3, Лаод. 13.*

9. Халкид. 25; *(Va + Сард. 10, Гангрск. 15)*; Трул. 14 *(VVa Vc Ve $Vall_1$ Pa—Трулл. 14).*

11. Сард. 10; КП. I—II 17 *(Va $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—КП. I—II 17; M+in m.) Въ Vc: КП. I—II 17, Сард. 10.*

17. Апост. 36 *(Va=31)*; Анк. 18; Антіох. 17 *(PVVe — 17)*, 18; Трул. 17 *(LVe Va VVb* —Трул. *17; M+in m.).*

20. Ник. 8; Халкид. 10 *(Vb — 10)*, 12; Ник. II 15 *(Pa — Ник. 15; M+in m.). Въ L есть одно только Ник. II 15.*

21. Апост. 35; Антіох. 13, 22; Еф. 8; Ник. II 3 *(PVVa Vb Ve L— Ник. II 3; M+in m.).*

22. Апост. 30; Ник. II 3 *(M$Vall_1$ $Vall_2$ Pa — Ник. II 3).*

23. Апост. 17, 18, 19; Трул. 3, 12 *(M$Vall_2$ Vc — 12)*; Васил. 12. *M став. Трул. in m. Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. поставл. на концѣ (послѣ Васил.).*

24. Апост. 29; Халкид. 2; Трул. 22, 23 *(Pa $Vall_1$ $Vall_2$ Vc M—23, но $Vall_1$ + друг. рук.)*; Ник. II 4, 5, 19 *(Pa — всѣ Ник. II)*; *(Vc $Vall_1$ $Vall_2$ + Тарасія къ Адріану)*; Васил. къ епп.; Геннадія окружн. посл. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ правила Трул., Ник. II и посл. Тарасія, а въ Pa одни Трул. поставлены на самомъ концѣ (послѣ Геннадія). Въ M Трул. и Ник. II in m.*

26. Ник. 15, 16; Антіох. 21; Халкид. 5, 10, 20; Сард. 1, 2, 15 Карѳ. 54 *(Va Ve = 51)*, 90 *(VL=90)*; Трул. 17, 18, 20 *($Vall_2$ — всѣ Трул.). Въ M Трул. in m.*

28. Неокес. 11 *($Vall_2$ = 12)*; Халкид. 15; Карѳ. 16 *(Vb + 17)*; Трул. 14, 15 *(Vb = Трул. 11, 12)* [1]). *Въ M Халкид. поставл. передъ Неокес., а Трул. in m.*

30. Неокес. 14 *(Vb = 15)*; Трул. 16 *($Vall_2$ = 12).*

37. Ник. 19; Лаод. 11; Халкид. 15 *(M—Халкид. 15) (Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa M+Васил. 44)*; Трул. 14. *Въ M Трул. in m.*

[1]) Въ Ve отъ всей главы 28 остались только двѣ ссылки Неокес. 11 и Халкид. 15, да и то вставленныя въ „законы" главы 27 (передъ τῶν δὲ ἀναγνωστῶν...); остальныя ссылки гл. 28 присоединены къ гл. 27.

II тит.

1. Карѳ. 6 (*Vb* = *16*), 83; Ник. II 7, 17 (*Pa — всѣ Ник. II; Vc* $Vall_1$ $Vall_2$ *M—17*).

2. Апост. 73; КП. I—II 1, 10 (*Vb* = *6; Pa* $Vall_1$ $Vall_2$ *Va — всѣ КП. I—II*); Кирилла къ Домну 2. *Въ M Трулл. in m. Въ Vc послѣ Кирилла къ Д. поставл. КП. I—II 1, 10* и τῆς ἐν τῷ τρούλλῳ ξη'.

3. Апост. 31 (*Va* = *36*); Антіох. 5; Карѳ. 10; Трул. 31 (*M—Трул. 31*); КП. I—II 12, 13, 14 (*M—14*), 15 (*Vc Va —всѣ КП. I—II*) [1]. *Въ M КП. I—II in m. Въ Pa* $Vall_1$ $Vall_2$ *—всѣ Трул. и КП. I—II.*

III тит.

2. Апост. 60, 85; Лаод. 15, 17, 18, 19, 23, 59; Карѳ. 24 (*Va +42*), 46 (*L=42, 45; Ve V Vb P=42; M+103*); Трул. 33 (*Ve=37*). 63, 75, 81 (*Vc* $Vall_1$ $Vall_2$ *Pa M—81*); Ник. II 14 (*M Vc* $Vall_1$ $Vall_2$ *Pa — Ник. II 14*). *Въ Va поставл. Ник. II 14 передъ Трул. Въ M Трул. in m.*

4. Апост. 3, 4, 31 (*Vc* = *35*); Ник. 18; Анк. 1; Неокес. 13; Лаод. 19, 49; Карѳ. 17 (*P Vc* $Vall_1$ $Vall_2$ *Pa M=37*), 41, 47; Трул. ($Vall_1$ *+ 21*), 23, 28 ($Vall_2$ *+ 29*), 32 (*Va Vb Ve V—32*), 57, 58 (*V Va Vb + 32; Ve + 31*), 101 (*Va =104*). *Порядокъ Трул. въ Vb: 23, 57, 28...; въ* $Vall_1$*:... 32, 57, 101, 58. Въ M Трул. in m.*

7. Лаод. 19, 44; Трул. 69, 70 ($Vall_2$ *— 70*). *Въ M Трул. in m.*

10. Лаод. 21, 22, 23 ($Vall_1$ *+ 24*), 25 (*V=23; L Va — 25*), 43; Трул. 27 (*L=7, 23; V=23; Va* $Vall_1$ $Vall_2$ *= 7*); Ник. II 14 (*V Va Vb Ve L—14*), 16 (*Pa — Ник. II 14, 16*) [2]. *Въ M Трул. и Ник. II in m.*

11. Сард. 11; Трул. 80 ($Vall_2$ *= 79 ? Pa* $Vall_1$ *M Vc — Трул. 80*). *Порядокъ въ* $Vall_2$*: Трул. передъ* (?) *Сард.*

14. Апост. 31 (*Va Ve L=34*); Гангрск. 6; Антіох. 2, 5; Лаод. 58; Трул. 31, 59. *Въ M Трул. in m.*

17. Карѳ. 18 (*Vc* = *16*); Трул. 83. *Въ M Трул. in m.*

IV тит.

3. Апост. 49, 50; Трул. 59 (*M Vc* $Vall_1$ $Vall_2$ *Pa — Трул. 59, но* $Vall_1$ *+ друг. рук.*

[1]) Въ L ошибочно поставл.: Трул. 12, 13, 14, 15, т. е. пропущ., вѣроятно, одна строка оригинала, гдѣ были слова: λα'. συνόδου α' καὶ β' συγκροτηθείσης ἐν τῷ ναῷ τῶν ἁγ. ἀποστόλων κανὼν.

[2]) Въ Vc. стоитъ: τῆς ἐπὶ Ἰουστ. τοῦ εὐσ. βασ. 14, 16.

4. Лаод. 46, 47; Трул. 78. *Въ M Трул. in m.*
5. Карѳ. 72; Трул. 84. *Въ M Трул. in m.*
14. Ник. 19 (*Vc = 9*); Лаод. 7 (*Va = 6*), 8 (*$Vall_2$ $Vall_1$ + 21*); КП. 7; Трул. 95; Ник. II 8 (*Pa —Ник. II 8*); Васил. 47 (*Vc L=7*). *Въ M $Vall_1$ $Vall_2$ Vc Трул. и Ник. II, а въ Pa Трул. ставятся послѣ Васил. 47.*

V тит.

1. Гангрск. 5, 20 (*P Vb = 19*) [1]); Трул. 76 (*M=78*), 88, 97. *Въ M Трул. in. m.*
2. Лаод. 28; Карѳ. 42 (*Vc = 48*); Трул. 74, 76, 97 (*M Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa — 76, 97, но $Vall_1$ + друг. рук.*). *Въ M Трул. in m.*

VI тит.

1. Апост. 3, 4, 71; Трул. 28, 57, 79, 99; Кирилла къ Домну 2. *Въ M Трул. in m. Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Кирилла къ Д.*

VII тит.

1. Апост. 64, 69; Гангрск. 18, 19; Лаод. 49, 50, 51, 52; Трул. 29, 52 (*L=42*), 55, 56 (*V Vc = 86*), 89; Петра 15. *Въ M Трул. in m. Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Петра 15 передъ Трул.*
2. Тимоѳея 8. 10 (*Vc +Никифора 3, 4, 5; Исидора*).
3. Апост. 7; Антiох. 1; Карѳ. 73 (*$Vall_1$ $Vall_2$ = 61, но въ $Vall_1$ переправл. друг. рук. въ 73*); Трул. 89 (*$Vall_2$ = Трул. 19, 66, 90; $Vall_1$ = 19 и др. рук.+89; Pa = 66, 79; M Vc = 66, 89*); Дiонисiя 1 (*Vc + 4; $Vall_2$ = Петра 3*); Θеофила προσφώνησις. *Въ M Трул. in m. Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Θеофила.*
4. Ник. 20; Лаод. 29 (*Vc = 9*); Карѳ. 61; Трул. 19 (*Vb = 9*) 66, 90(*Va = 99*) [2]); Петра 15; Θеофила προσφώνησις. *Въ M Трул. in m. Въ Vc Pa Трул. послѣ Θеофила* προσφώνησις [3]).

VIII тит.

1. Халк. 17 (*Va = 7*); Карѳ. 53, 56, 71; Трул. 25, 36, 37, 38, 39 (*M $Vall_1$ $Vall_2$ Pa — 36, 37, 39, но $Vall_1$ + друг. рук.; Vc = Трул. 25, 30*). *Въ M Трул. in m.*

[1]) Въ L отсутств. Гангрск. 5, 20 потому, что здѣсь не хватаетъ и всего текста гл. 1: ссылка на Трул. 76, 88, 97 присоединена прямо къ заглавiю тит V.

[2]) Въ Vc нѣтъ самыхъ чиселъ для Трул.

[3]) Въ Vc стоитъ на концѣ: Петра 15, 66, 90, т. е. пропущ. Трул. 19 вмѣстѣ съ обозначенiемъ этого собора.

2. Апост. 14, 15; Анк. 18 (*Va=8*); Антіох. 3, 13, 22; Лаод. 41, 42; КП. 2; Халк. 13, 23; Сард. 3, 11 (*Vc—11*), 12, 16, 17; Карѳ. 23, 71; Трул. 17, 18, 20 (*Vc $Vall_2$ Pa M—20*); Ник. II 10 (*M Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—Ник. II, 10, но $Vall_1$ + друг. рук.*); КП. I—II 16 (*Va Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—КП. I—II 16*). *Въ M Трул. и КП. I—II in m.*

5. Апост. 12, 33 (*L Vc = 13*); Антіох 7, 8, 11; Лаод. 41, 42; Халк. 13; Сард. 9 (*Va—Сард. 9*); Карѳ. 23 (*Va—Карѳ. 23*); Трул. 17 (*M Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—Трул. 17, но $Vall_1$ +друг. рук.*). *Въ Vc Халкид. поставл. передъ Лаод.*

8. Апост. 37; Ник. 5; Антіох. 20; Лаод. 40; Хак. 19 (*$Vall_1$ $Vall_2$* + 21); Карѳ. 18, 73, 76 (*L=73*), 95; Трул. 8; Ник. II 6 (*$Vall_1$ $Vall_2$ Pa—Ник. II 6*). *Въ Va Трул. послѣ Ник. II. Въ M Трул. и Ник. II in. m.*

12. Апост. 36, 39, 58; Карѳ. 123 (*Pa=133*), 124 (*Pa=134; P—124*); Трул. 19 (*$Vall_2$ Pa M=64; въ $Vall_1$ ιϑ' по скобл., можетъ быть, вмѣсто ξδ'*). *Въ M Трул. in. m.*

13. Апост. 6, 81 (*$Vall_2$ — 81*); Халкид. 3 (*$Vall_2$ — Халкид. 3*); Карѳ. 16 (*$Vall_2$ — Карѳ. 16*); Ник. II 10 (*Pa—Ник. II 10*); КП. I—II 11 (*M Va Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—КП I—II 11*). *Въ $Vall_1$ Халкид. и Карѳ. послѣ Ник. II. Въ M Ник. II in. m.*

14. Ник. 3; Трул. 5; Ник. II 18 (*Vc $Vall_2$ $Vall_1$ M Pa—Ник. II 18, но $Vall_1$ + друг. рук.*); Василія къ Григ. пресв. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил. Въ Va Трул. послѣ Ник. II. Въ M Трул. in. m.*

15. Карѳ. 38; Ник. II 22 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—Ник. II 22, но $Vall_1$ + друг. рук.*).

19. Ник. 18; Лаод. 20, 56 (*Vc—56*); Карѳ. 86 (*V—86; Va=88*), 89 (*V—89*); Трул. 7.

IX тит.

10. Апост. 12, 13, 32, 51; Ник. 5 (*P—5*), 12, 13 (*$Vall_1$ $Vall_2$ = Ник. 2, 10, 17*); Антіох. 6; Лаод. 36; Халкид. 4, 16 (*Ve=6*); Карѳ. 65; Трул. 21.

14. Апост. 3, 5, 6, 7, 11, 20 (*P V Va Vb Ve — 20*), 25 (*P—25*), 27, 29, 30, 31, 35, 42, 44, 45, 46 (*Vb — 46*), 47 (*Va+48*), 49 — 53, (*Va+54*), 55 (*$Vall_2$ — 55*), 59, 60, 62 (*$Vall_2$ $Vall_1$ — 62*); 63

(*$Vall_1$ $Vall_2$ —63*), 64, 65 (*Vb* $Vall_2$ – 65), 66, 68,—70, 81 (*Va+82*), 83, 84; Ник. 2, 10, 17; Анк. 10, 14, 18; Неокес. 1; Антіох. 1, 3—5, 13; Еф 2; Халкид. 2, 18 (*$Vall_1$ = 13*); Сард. 21; Трул. 3—5 (*Va+6*), 9 (*P Va Vb Vc L+10*), 11, 86, 97 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa - всѣ Трул., но $Vall_1$ + друг. рук.*); (*Vc Pa $Vall_1$ $Vall_2$ + Васил. 32, 70*).

18. Апост. 28, 51, 62; Антіох. 4; Лаод. 36; Трул. 21 (*Vb=24; Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—Трул. 21*).

19. Анк. 1, 2; Неокес. 9; Трул. 3 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—3*), 26; Васил. 27, 70. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил.*

21. Апост. 63 (*Vc=3*); Анк. 3; Трул. 67 (*V=63; Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—Трул. 67*).

22. Карѳ. 3, 4, 25, 70; Трул. 12, 13.

24. Апост. 23 (*Vc=13*); Ник. 1; КП. I—II 8 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—КП. I—II 8; Va=9, Vb=Трул. 8*).

26. Апост. 27, 66; КП. I—II 9 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—КП. I—II 9; Vc= Трул. 9*); Васил. 55.

27. Апост. 25, 42, 43 (*L—43; Vc=53*); Ник. 17 (*L Va—цыфра*); Лаод. 4 (*Vc=9; Va—цыфра*), 54 (*Va V—54*); Карѳ. 5, 16 (*V Va—цыфры*); Трул. 10, 23 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—23, но $Vall_1$ + друг. рук.*), 24, 50 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—50*); Ник. II 4 (*$Vall_1$ $Vall_2$ Pa Vc—Ник. II 4*); Васил. 10, 14, 17. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил. Въ Va Ник. II передъ Трул.*

28. Апост. 51, 53; Анк. 14; Трул. 13, 30.

29. Апост. 17, 18 (*Va—18*), 19, 25, 26; Анк. 10; Неокес. 1, 9, 10; Халкид. 14 (*$Vall_1$ = 4);* 15; Карѳ. 16; Трул. 3 (*Vc—3*), 4 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—4, но $Vall_1$ + друг. рук.*), 6, 12, 13, 48, 58 (*V Va L=59; Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—12, 13, 48, 58, но $Vall_1$ + 12, 13, 48, 59 друг. рук.*); Васил. 3, 6, 69 (*$Vall_1$ = 7, 9, т. е.* ζ' ϑ' *вмѣсто* ξϑ'), 70 (*V Va L—всѣ правв. Васил.*); Ѳеофила ὑπομνηστ. 4, 5. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Ѳеоф.*

30. Апост. 67; Анк. (*$Vall_2$ +2*), 11 (*Vc = 14*), 25; Халкид. 27 (*Vb=7);* Трул. 92; Ѳеоф. ὑπομνηστ. 2. *Въ $Vall_2$ порядокъ: Апост., Ѳеоф., Анк., Халк., Трул. Въ Vc $Vall_1$ Pa Трул. послѣ Ѳеоф.*

31. Лаод. 30; Трул. 77. *Въ Vc—всѣ эти правв.*

35. Апост. 54 (*Vc+50*); Лаод. 24; Карѳ. 40 (*Va=34*); Трул. 9.

37. Халкид. 18; Карѳ. 53 (*V=23*); Трул. 34.

39. Апост. (*Ve Vc+51*), 52; Ник. 11, 12 (*Vc=2*); Анк. 1—9; Неокес. 2 (*Va+Лаод. 7; $Vall_1$ V Vb Ve P Pa+Лаод. 2, но $Vall_1$ друг. рук.*); Карѳ, 6, 7, 27, 43, 45; Трул. 102; Васил. 5, 34 (*Va=31; L=λ', δ'*), 74 (*L=70*), 75, 76 (*Vc–76*), 82, 84; Григор. Нисск 3 (*Va L–3; V=4*), 4, 7, 8. *Въ Ve Лаод. послѣ Карѳ. Въ P Лаод. передъ Неокес. Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Григорія Нисск.*

X тит.

1. Халкид. 26, Ник. II 11 (*Pa—Ник. II 11; Va*=συνόδου Νικαίας κανῶν ια'; *Vb только* Συνόδου); Ѳеоф. ὑπομνηστ. 9. *Въ V_c $Vall_1$ $Vall_2$ Ник. II послѣ Ѳеоф.*

2. *Vc : Апост. 38, 40, 41; Ант. 24, 25; Ѳеоф.* ὑπομνηστ. *9; Ник. II 11; Кирилла къ Д. 2.*

3. Анк. 15 (*L=14*); Халкид. 25; Трул. 35.

4. Апост. 38 (*Ve=33: Va–38*), 72; Анк. 15; (*Vc Pa $Vall_1$ + Карѳ. 26, 33; $Vall_2$ + Карѳ. 22, 23*); Ник. II 12 (*Pa—Ник. II 12*); Кирилла къ Домну 2 (*Pa—Кир. къ Д. 2*). *Въ $Vall_1$ $Vall_2$ Vc Ник. II послѣ Кир. къ Д.*

5. Карѳ. 32; КП. I—II 7 (*Va Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—КП. I—II 7*).

7. КП. 2; Халкид. 28; Трул. 30 (*P V Va Vb Ve—30; $Vall_1$ = 37 друг. рук.*), 37, 39 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—37, 39*).

XI тит.

1. Халкид. 4, 24; Трул. 49; Ник. II 13 (*Pa–Ник. II 13*); КП. I—II 1, 6 (*Va Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—КП. I—II 1, 6 но $Vall_1$ + друг. рук.*). *Въ L V Va Ник. II передъ Трул.*

2. Карѳ. 80 (*Vc=8*); Ник. II 21 (*Pa—Ник. II 21*).

3. Гангрск. 3; Халкид. 4 (*Vc—Халкид. 4*); (*Pa $Vall_1$ $Vall_2$ Vc+Трул. 85. Въ L V—всѣ правв.*

4. Халкид. 3, 4, 8, 23; Трул, 41, 42, 46; КП. I—II. 2, 4 (*Va Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa - КП. I—II 2, 4*).

5. Анк. 19; Халкид. 16 (*Vb $Vall_1$ = 6*); Трул. (*$Vall_1$ + 40*), 44 (*$Vall_2$ =41*), 47 (*Vc , вмѣсто всѣхъ, только одно: Трул. 4*); Васил. 19, 20, 60 (*вм. 20, 60, Vc*=ξκ', *L Va*=κζ'). *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил.*

6. Халкид. 18 (*$Vall_2$ = 16*); Трул. 34 (*L=31*). *Vc пропуск всю главу 6.*
7. Лаод. 30; Трул. 77.
8. Кареа. 44 (*L=47; Vb–Кареа. 44*); Трул. 46, 47, 48; Ник. II 18; 20, 22 (*Pa–Ник II 18, 20, 22*). *Въ L Ve порядокъ Трул.: 47, 46, 48.*
9. Трул. 4; Васил. 18, 20, 60. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил.*
10. Кареа. 126 (*Ve=122; Vb–цыфра*); Трул. 40 (*$Vall_1$ $Vall_2$ Vc+41, 43, 45*); Васил. 18. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил.*

XII тит.

3. Апост. 60 (*Ve=7*); (*$Vall_1$ $Vall_2$ Pa Vc+Трул. 68*); Ник. II 9 (*$Vall_1$ =2; Pa–Ник. II 9*).
9. Апост. 65 (*L=60 Ve=67; Vb–65*), 70 (*Va=7*); Лаод. 9, 29 (*Vb–29*), 32, 35, 37, 38 (*$Vall_2$ – 38*), 39 (*P+42*); Трул. 11 (*Vc=9*).
13. Лаод. 10, 31; Халкид. 14 (*V=11*); Кареа. 21 (*$Vall_2$ = 24*); Трул. 72.
14. Ник. 8 (*Vb–8*), 19 (*Va–19; $Vall_2$ = 9*); Лаод. 7, 8; КП. 7; Кареа. 47 (*Vc=57*), 57 (*Va Vc=48*), 66; (*Va+συνόδου Νικαίας τὸ β'*); Трул. 95 (*Pa $Vall_2$ $Vall_1$ Vc–Трул. 95, но $Vall_1$ + друг. рук.; L=91*); Васил. 1 (*Va–1*), 47; Θеоф. къ Афинг.; соборъ при Кипріанѣ (*$Vall_1$ $Vall_2$ Pa Vc–соборъ при Кипр.*).

XIII тит.

1. Сард. 11; Трул. 80.
2. Апост. 19, 48 (*V Vb Ve $Vall_1$ L–48*); Анк. 16, 17; Неокес. 2, 3, 4, 7 (*L Ve–7*)[1]; Лаод. 1, 10, 31; Халкид. 16; Трул. 53 (*Va= 51*), 54, 72 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa 72*), 98[2]; Васил. 4, 18, 23, 24, 41, 50, 53, 67, 68, 75, 76 (*Ve L–76*), 78, 79, 80; Васил. къ Діод.; Θеоф. къ Агаѳ. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Θеоф.*
3. Трул. 93; Васил. 31, 36, 46 (*V пропуск. всѣ цыфры*). *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил.*
4. Апост. 5; Гангр. 14; Кареа. 102 (*Vb–цыфра*); Трул. 87 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa–Трул. 87, но $Vall_1$ + друг. рук.*); Васил. 9, 35, 48, 77.
5. Апост. 61; Анк. 20; Неокес. 8; Трул. 87, 87, 98; Васил. 7, 18, 21 (*L=21*), 22 (*L V Va–22*), 25, 26, 30, 34, 37, 39, 49, 58, 59

[1]) Vc [illegible] цыфры Неокес. и обознач. συνόδου Λαοδικείας, поэтому выходитъ, что [illegible] 1. 10, 31.

[2]) Vc, [illegible] сылка на Трул. 4, 18....

00067885
ЮФ СПбГУ

(*$Vall_2$ — 59*), 62 (*V Va L=61*), 77; Григорія Нисск. 3. *Въ Va Неокес. передъ Анк. Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Григ. Нисск.*

8. Апост. 67; Анк. 11 25; Халкид. 27; Трул. 92 (*$Vall_1$ $Vall_2$ Pa Vc— Трул 92*); Васил. 22, 30, 53 (*Va=56*).

10. Анк. 21; Трул. 91; Васил. 2, 8, (*Va+50*), 52. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил.*

13. Апост. 63; Анк. 3; Гангрск. 2 (*Vc=3*); Трул. 67; Григорія Чудотв. 1; Васил. 81. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил.*

19. Трул. 94 (*Ve Va L=91*); Васил. 81. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Васил.*

20. Апост. 62 (*V—Апост. 62*); Ник. 11, 12 (*V=19*); Анк. 3—6, (*Ve L+7*), 8, 9, 12, 24; Лаод. 36; Карѳ. 45; Трул. 61 (*Va=51*), 65 (*Va—65*); Петра 1—5, 6 (*$Vall_2$ Pa—6*), 7—14 (*Va—всѣ Петра*); Васил. 7, 8, 44 (*Ve—44*), (*$Vall_1$ V Vc L $Vall_2$ Pa+45*), 65 (*$Vall_2$ Pa=66*), 72, 73, 81, 83 (*Va—всѣ Васил.*); Григорія Нисск. 1, 2 (*Va—всѣ Григорія Нисск.*). *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Григ. Нисск.*

21. Карѳ. 45, 63; Трул. 51 (*Vb=52; $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Vc=Трул. 51, но $Vall_1$ + друг. рук.*). *Va пропуск. всю главу 21.*

22. Карѳ. 15, 60, 61; Трул. 51 (*Ve Vb V—51*), 52 (*$Vall_1$ $Vall_2$ P Va Vc—52*), 62, 65 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—65, но $Vall_1$ + 67 друг. рук.* 71, 96, 100.

25. Лаод. 30; Трул. 77 (*Ve=7*).

27. Лаод. 19 (*$Vall_1$ — 19*), 44 (*$Vall_2$ Va=41*); Трул. 69 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa—Трул. 69, но $Vall_1$ + друг. рук.*).

29. Апост. 43 (*$Vall_2$ = 53*); Трул. (*$Vall_2$ + 6, 28*), 50.

30. Апост. 79; Трул. 60 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ M Pa=66, но въ $Vall_1$ выскобл.* ϛ' *въ цыфрѣ* ξϛ'); Тимоѳея 2 (*L=12*), 3, 14, 15. *Въ Vc $Vall_1$ $Vall_2$ Pa Трул. послѣ Тимоѳ. Въ M Трул. in т.*

32. Апост. 64 (*$Vall_1$ $Vall_2$ Pa=61; Va=12, 13, 61*); Гангрск. 18; Трул. 55 (*Vc $Vall_1$ $Vall_2$ M Pa=56*). *Въ M Трул. in т.*

36. Гангр. 6 (*Va=26; Vc—Гангрск. 6*); Трул. 31, 59. (*V Va Ve=39*) *Въ M Трул. in т.*

ЛЕНИНГР ... БИБЛИОТЕКА ...СКОГО СТРОИТЕЛЬСТВА